खंड VI
प्राचीन यूनान

समय रेखा

मिनोअन सभ्यता : 2000-1400 बी सी ई
माइसीनियन सभ्यता : 1600-1200 बी सी ई
'अंधकार युग' : 1200-800 बी सी ई
आर्केइक यूनान : 805-500 बी सी ई
क्लासिकीय यूनान : 500-323 बी सी ई
हेलेनिस्टिक यूनान : 323-100 बी सी ई

चित्रांकनः होमर के एपोथिऑसिस की नक्काशी युक्त पट्टिका
फोटोग्राफः आई के ए वीन
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/7/76/Archelaus_Relief.jpg

इकाई 14 यूनान में लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था*

इकाई की रूपरेखा

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 यूनानी कौन थे?

14.4 प्राचीन यूनानी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

14.5 प्रारंभिक यूनानी सभ्यता

14.5.1 मिनोअन सभ्यता

14.5.2 माइसीनियन सभ्यता

14.5.3 'अंधकार युग'

14.6 पुरातन, क्लासिकीय और हेलेनिस्टिक यूनानः लोकतांत्रिक राजनीति के साथ प्रयोग

14.6.1 दास प्रथा और यूनानी सभ्यता

14.6.2 व्यापार, नगर-राज्य, कृषि उत्पादन, दास प्रथा

14.7 यूनानी राजनीति, इसका अर्थ और संरचनायेंः पुरातन से क्लासिकीय यूनानी सभ्यता तक

14.7.1 संक्रमण काल : पुरातन युग और निरंकुश शासन

14.7.2 क्लासिकल यूनान में लोकतांत्रिक राजनीतिः एथेंस, कोरिंथ, स्पार्टा

14.8 यूनानी समाज में महिलायें

14.9 सारांश

14.10 शब्दावली

14.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.12 संदर्भ ग्रंथ

14.13 शैक्षणिक वीडियो

14.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- यूनानी सभ्यता की कालानुक्रमिक और भौगोलिक सीमा का विवरण दे सकेंगे,
- यूनानी सभ्यता के विविध स्रोतों की सूची बना सकेंगे,
- यूनानी समाज, अर्थव्यवस्था और राज्य व्यवस्था और उनके अंतर संबंधों के मुख्य तत्वों को पहचान पायेंगे,
- बता पायेंगे कि कैसे और क्यों दास प्रथा यूनानी सभ्यता की नींव थी,
- बता पायेंगे कि यूनानी सभ्यता, एक प्राथमिक ग्रामीण आधार होने के बाद भी शहरी सभ्यता के रूप में क्यों पहचानी जाती है,

* डॉ. नलिनी तनेजा, स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

- विभिन्न समय तथा अलग-अलग क्षेत्रों में आये परिवर्तनों को रेखांकित कर पायेंगे, विशेषतः लोकतांत्रिक व्यवस्था की प्रकृति के बारे में, और
- उन विविधताओं को पहचान पायेंगे जो यूनानी सभ्यता में निहित थीं और जिन्होंने आधुनिक यूरोप की सभ्यता के मार्ग को आकार दिया।

14.2 प्रस्तावना

जब हम प्राचीन यूनानी सभ्यता की बात करते हैं तो यह वह आधुनिक यूनानी राष्ट्र-राज्य नहीं है जो 19वीं सदी की शुरुआत में आधुनिक राष्ट्रवाद के समय अस्तित्व में आये। प्राचीन काल की यूनानी सभ्यता में हम एक बदलती हुई भौगोलिक इकाई के बारे में बात करते हैं जिसका केन्द्र भूमध्यसागर था, जो एक छोटे से क्षेत्र में फैला हुआ था तथा इसका विस्तार विजयों के द्वारा हुआ, विजयों द्वारा क्षेत्रों को आत्मसात किया गया और अंत में सिकंदर के साम्राज्य के विस्तार के साथ यह एक विस्तृत साम्राज्य का हिस्सा बन गया। वे तत्व जिन्होंने यूनानी सभ्यता का निर्माण किया, उनमें 'बाहरी प्रभावों' के साथ-साथ उन क्षेत्रों का भी प्रभाव था जिनको जीता गया।

विजय और बदलती हुई सीमायें यूनानी सभ्यता की विशेषता थी। हालांकि मोटे तौर पर हम यूनानी सभ्यता को प्रारंभिक यूनान, 'अंधकार युग', और क्लासिकीय काल में वर्गीकृत कर सकते हैं। निरंतरता तथा परिवर्तन यूनानी सभ्यता की विशेषताएं थीं, जो सभी कालों में देखी जा सकती थीं, इनमें से कुछ सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन कुछ विशेष काल में ही देखे जा सकते थे जबकि कुछ पहलू सम्पूर्ण यूनानी सभ्यता में व्याप्त रहे।

इसके अलावा, हमें यह भी समझना चाहिए कि विविधता प्राचीन सभ्यताओं की पहचान है, और ऐसा नहीं है कि यह आधुनिकता के साथ ही आई है। इस अर्थ में विविधता बहुलवाद से अलग है। जहां बहुलवाद विविध प्रभावों में से एक स्वैच्छिक और कभी-कभी सचेत और पूरी जानकारी के साथ विभिन्न प्रभावों को दर्शाता है, विविधता एक स्वतंत्र इकाई के रूप में ज़्यादातर अनजाने में और कभी-कभी इसके बारे में जागरूकता के साथ आती है। यूनान के संदर्भ में, जहां आम जनता ने अपने मूल या स्रोतों की जानकारी के बिना जीवनशैली का पालन किया, यूनानी विचारकों और दार्शनिकों को यूनानी सभ्यता पर विभिन्न संस्कृतियों के प्रभाव के बारें में पूरी जानकारी थी, जिसे आप अगली इकाई में पढ़ेंगे, जो सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में है।

प्राचीन यूनानी सभ्यता की विविधता को रेखांकित करने वाले साक्ष्यों में भाषाई, साहित्यिक और पुरातात्विक स्रोत हैं। इन स्रोतों ने इतिहास लेखन में यूनानी सभ्यता की इस विविधता के मूल्यांकन में मदद की है, जबकि 19वीं सदी में यूनानी सभ्यता के एक 'पश्चिमी' सभ्यता होने पर ज़ोर दिया जाता रहा। वास्तव में यह पश्चिमी घटक था जो आधुनिक यूरोप तथा पश्चिमी सभ्यता के उदय में प्रमुख कारक समझा जाता था। पूर्व तथा पश्चिम के मध्य की गहरी खाई तथा यूनानी सभ्यता को मुख्य रूप से आर्य सभ्यता समझने का दावा इतिहास लेखन में आए नवीन परिवर्तनों, जो मानव इतिहास को आधुनिक विविधता के साथ समकालिक परिवर्तनों तथा विभिन्न साक्ष्यों के रूप में देखता है, के कारण अब मान्य नहीं हैं। मानव इतिहास को यूनानी सभ्यता के माध्यम से यूरोप की उत्पत्ति की एक सीधी रेखा के रूप में नहीं देखा जाता है और न ही यूरोपीय यूनान को पुनर्जागरण और ज्ञानोदय के माध्यम से आधुनिकता की नींव के रूप में देखा जाता है। यूरोपीय इतिहास के स्थान पर विश्व इतिहास को मानव सभ्यता के सूचकांक के रूप में देखने से यह बदलाव दिखाई देता है। यूनान की अवधारणायें इस बदलाव के लिये, अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, यह बात हम इस इकाई को पढ़ने के बाद समझ पायेंगे।

यह उल्लेखनीय है कि प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिकों और विचारकों को इस बारे में जानकारी थी तथा उन्होंने पूर्वी प्रभावों जैसे मिस्री फोनिशियन्स, मेसोपोटामिया और एशिया माइनर में हो रहे बदलावों की प्रशंसा की और ग्रीस पर उनके प्रभावों को सराहा तथा व्यक्त किया। हालांकि यूरोप के स्थानीय विकास महत्वपूर्ण थे लेकिन यूनानी सभ्यता के विकसित तथा समृद्ध होने में केवल यही तत्व उत्तरदायी नहीं थे।

प्राचीन काल में एक ही समय में अलग-अलग जगहों पर विभिन्न विकास हो रहे थे। यूनानी सभ्यता, दूसरी अन्य सभ्यताओं की तरह, विभिन्न क्षेत्रों और समाजों में विचारों और भौतिक संस्कृति के प्रसार का परिणाम थी। इन अलग-अलग अवधारणाओं की झलक, यूनानी सभ्यता की अफ्रीकी-एशियाई जड़ों के बारे में मार्टिन बरनाल के आलेख में प्रदर्शित होती है (*ब्लैक एथेना, द एफ्रो एशियाटिक रूट्स ऑफ क्लासिकल सिविलाइजेशन*)।

भौतिक संस्कृति और सामाजिक संरचनाओं के संदर्भ में, यूनानी सभ्यता का उदय लोहे के व्यापक उपयोग के साथ जुड़ा हुआ है, जैसा कि गॉर्डन चाइल्ड (1986) और मोसेस आई. फिनले (1987) के द्वारा स्पष्ट किया गया है। अधिकांश विद्धानों के द्वारा यह भी रेखांकित किया गया है कि यूनानी समाज अनिवार्य रूप से एक दास समाज था, हालांकि श्रम के दूसरे रूप भी अस्तित्व में थे। और यह एक ऐसा पहलू था जिस पर भव्य शहर, शहरी जीवन, संस्कृति, और बौद्धिक उपलब्धियाँ, जिनके लिये यूनान इतनी अच्छी तरह से जाना जाता है, आधारित थी। हालाँकि कृषि में विकास तकनीकी कारकों तथा फसलों के प्रसार की तरफ इशारा करता है, स्थानीय कृषि तकनीकों का विकास विश्व के कई स्थानों पर स्वतंत्र रूप से लोहे के प्रयोग के साथ हुआ जो शहरी सभ्यता के विकास में भी प्रमुख था। इस प्रौद्योगिकी का प्रसार भूमध्यसागर के आसपास के क्षेत्रों, जो यूनानी सभ्यता के गठन का मूल केन्द्र थे, में हुआ। लोहे के व्यापक उपयोग के साथ, विकास और परिवर्तन की गति, प्राचीन समाजों के संदर्भ में, काफी तेजी से हुई। प्राचीन यूनान की उपलब्धियों की यह प्रगति जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिबिंबित होती है।

एक पहलू जिसमें यूनानी सभ्यता असाधारण थी वह यह था कि राज्यों और साम्राज्यों के गठन के इस दौर में भी यह एक साम्राज्य के रूप में विकसित नहीं हुआ। यह स्वतंत्र नगर राज्यों की सामूहिकता में बना रहा। कभी भी राजनीतिक रूप से या क्षेत्रीय रूप से ये एकजुट नहीं हुये, फिर भी इन्होंने सभ्यता की एकता का गठन किया। इसका क्लासिकीय युग कला विज्ञान और दर्शन में उच्च उपलब्धियों से चिन्हित होता है जो 500 बी सी ई से 338 बी सी ई तक चला, जब सिकंदर की मकदूनियाई सेना ने यूनानी राज्यों पर विजय प्राप्त की। हालाँकि इसकी शुरुआत 2000 बी सी ई के आसपास हुई, जब क्रीट जहां यूनानी आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहता था, यूरोप की प्रथम कांस्य युगीन सभ्यता के रूप में विकसित हुआ। इस संदर्भ में हम पुरातन (800-500 बी सी ई) और क्लासिकल और हेलेनिस्टिक यूनान (500-100 बी सी ई) के बारे में भी चर्चा करने से पहले मिनोअन सभ्यता (2000-1400 बी सी ई), माइसीनियन सभ्यता (1600-1200 बी सी ई) और 'अंधकार युग (1200-800 बी सी ई) के बारे में बात करेंगे। हम यहाँ लगभग इतिहास के 2000 वर्षों के बारे में चर्चा कर रहें हैं जिसके उत्तरार्ध में परिवर्तन कहीं अधिक गति के साथ हुआ, लेकिन फिर भी यह बदलाव हमारे आधुनिक युग में एक व्यक्ति के जीवन के भीतर प्रौद्योगिकी, समाज और ज्ञान के क्षेत्र में आने वाले महत्वपूर्ण बदलावों की तुलना में कुछ भी नहीं था।

इस इकाई में हम उन बिंदुओं की चर्चा करेंगें जो क्लासिकीय युग के समाज, अर्थव्यवस्था और राज्य व्यवस्था को परिभाषित करेंगे। हालाँकि आप यह भी जान पायेंगे कि पहले की सदियों ने किस प्रकार क्लासिकल सभ्यता की नींव रखी जो कांस्य युग से लौह युग में विकसित हुई जो कि प्रमुखतः क्लासिकीय यूनान था। हम यह भी विस्तार से देखेंगे कि अर्थव्यवस्था और

समाज की स्थापना ने यूनान की लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था और उसकी प्रमुख विशेषताओं का निर्माण कैसे किया।

14.3 यूनानी कौन थे?

फिनले (1987: अध्याय-1) का मानना है कि जो लोग आद्य-यूनानी भाषा बोलते थे (यूनानी भाषा का प्रारंभिक प्रारूप) शायद 2200 बी सी ई के आसपास द्वितीय सहस्राब्दी बी सी ई में यूनानी प्रायद्वीप में प्रवासित हुये। उनके आगमन ने माइसीनियन कांस्ययुगीन सभ्यता (1600-1200 बी सी ई) को जन्म दिया, जो प्रारंभिक लिपि जिसे रेखीय बी लिपि कहा जाता है, जो कि प्रारंभिक यूनानी लिपि थी, का प्रयोग करते थे। लेकिन सदियों बाद इस क्षेत्र में यह समझना कठिन हो गया कि जिसे यूनानी तत्व कहते थे वह 'पूर्व-यूनानी' से कैसे अलग थे, ठीक उसी प्रकार जैसा कि इस मिश्रित मानव प्रजाति को अलग करना मुश्किल हो गया। प्रजाति, भाषा और संस्कृति का एक दूसरे से इस क्षेत्र में कोई संबंध नहीं था (फिनले, 1987: 15)। हाल के इतिहास लेखन की रोशनी में आज हम कह सकते हैं कि भारत में भी यही हमारी प्राचीन विरासत की कहानी है।

हालाँकि युद्ध और विजय अभियान इस आदान-प्रदान के महत्वपूर्ण घटक थे और इस प्रक्रिया के लिये लोकप्रिय शब्द 'उपनिवेशवाद' का प्रयोग किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अर्थ में उपनिवेशवाद तो नहीं था, अतः इतिहासकार इसका प्रयोग प्रवास की घटना के रूप में करते हैं। 2000 वर्षों के काल, जिसकी हम चर्चा कर रहे हैं, में भूमध्यसागर के आसपास त्वरित स्थानांतरण और युद्ध निरंतर होते रहे जिन्होंने 5वीं शताब्दी बी सी ई में क्लासिकल यूनानी सभ्यता को जन्म दिया, इसके बावजूद कि पहले की सदियों के अन्तराल को 'अधंकार युग' के रूप में जाना जाता है, तथा जिस अवधि में लिपि का प्रयोग या तो बंद हो गया या इतिहासकारों को इसके कोई साक्ष्य नहीं मिलते। धातु विज्ञान, कृषि और भाषा का ज्ञान क्लासिकल यूनानी सभ्यता में 'अंधकार युग' के माध्यम से स्थानांतरित हुआ।

इन सदियों में बोली जाने वाली बोलियाँ और भाषाओं के शब्द विभिन्न भाषा स्रोतो से मिलते हैं, लेकिन हमेशा 'दूसरों' या 'बर्बरों' के बीच अंतर को रेखांकित किया गया। फिनले का मानना है कि यूनानियों ने अपनी बोलियों में स्वयं को यूनानी के रूप में इंगित नहीं किया। माइसीनियन सभ्यता के दिनों में वे एकियन के रूप में, जिसे होमर की कविताओं में भी निर्दिष्ट किया गया है, जाने जाते थे। 'अंधकार युग' के समय में 'हैलेनिक' शब्द, इस क्षेत्र के सामाजिक और सांस्कृतिक तत्वों को परिभाषित करने के लिये प्रयोग किया जाता था, और अंत में जिसके द्वारा विभिन्न नगर-राज्यों, भूमध्यसागर के आसपास के क्षेत्रों और जिन क्षेत्रों में सिकंदर ने विजय प्राप्त की, 'हेलास' नामकरण के रूप में जाने गये। इन सभी सीमांकन क्षेत्रों में उनमें एक समान संस्कृति और जीवनशैली से संबंधित होने की चेतना थी, लेकिन कई संदर्भो में यह विविध थी तथा उनका मानना था कि वे गैर-यूनानियों से भिन्न भी थी (फिनले, 1987: 15-18)।

14.4 प्राचीन यूनानी सभ्यता का भौगोलिक विस्तार

जैसा कि पहले बताया गया है जब हम प्राचीन यूनानी सभ्यता की बात करते हैं तो हम वर्तमान यूनान से कहीं बड़े क्षेत्र की बात करते हैं। प्राचीन यूनानी सभ्यता का विस्तार पश्चिमी अनातोलिया, थ्रेस, एजियन सागर के द्वीपों, क्रीट, साइप्रस, यूनान के मुख्य भाग, दक्षिण इटली और सिसिली तक फैला हुआ था। यह मुख्य रूप से भूमध्यसागर और एजियन सागर के आसपास का क्षेत्र था। भौगोलिक रूप से कहा जाये तो इसने इस क्षेत्र की महत्वपूर्ण विशेषताओं के निर्माण में सहायता की। जलवायु, भौतिक संरचना और देश के कानून और सबसे ऊपर बंदरगाहों और व्यापार और परिवहन के रास्ते उपलब्ध कराने के अलावा प्रवासियों

तथा कबीलों के भारी आवागमन को सुसाध्य बनाने में समुद्र का महत्वपूर्ण योगदान था। यूनानी शहरों में से अधिकांश अपने पूरे इतिहास में समुद्र तट से अधिक दूरी पर स्थित नहीं थे।

यूनान की मुख्य भूमि एक प्रायद्वीप है जो चारों तरफ से समुद्र से घिरा हुआ है। इसके दक्षिणी हिस्से को पेलापोनीस कहा जाता है, जो मुख्य भाग से एक खाई द्वारा जुड़ा है जहां कोरिंथ शहर विकसित हुआ। अन्य प्रमुख शहर एथेंस, अट्टिका क्षेत्र में स्थित है जो लगभग एजियन सागर से घिरा हुआ है। अट्टिका के उत्तर पश्चिम की ओर के क्षेत्र को बोइटिका कहा जाता है जिसका प्रमुख शहर थेब्स है। इसके अलावा उत्तर पूर्व की ओर मैसीडोनिया और थ्रेस हैं, और फिर तुर्की की ओर मर्मारा सागर के दूसरी ओर पश्चिमी अनातोलिया है। यूनानी प्रायद्वीप और पश्चिमी अनातोलिया ऐजियन सागर के विपरीत कोनों पर हैं तथा इनके बीच द्वीपों की एक बड़ी संख्या है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण क्रीट है। दक्षिण इटली और सिसली में भी यूनानी आबादी थी।

कृपया **मानचित्र 14.1** को देखें जिसमें क्लासिकल यूनान कालीन शहरों तथा क्षेत्रों को दर्शाया गया है:

मानचित्र 14.1 : यूनानी नियंत्रण के तहत प्रदेशः क्लासिकल यूनान (स्रोतः MHI-01, प्राचीन एवं मध्यकालीन समाज, खंड 3, इकाई 12, पृष्ठ-34)

14.5 प्रारंभिक यूनानी सभ्यता

विभिन्न समुदायों, जो प्रारंभिक यूनान के क्षेत्रों में बसे हुये थे, ने अपनी संस्कृति और आजीविका के साधनों का विभिन्न क्षेत्रों में विकास किया। इन आजीविका के साधनों की अपनी कुछ विशेषताएं थीं जबकि दूसरी अन्य विशेषताएं समय और स्थान के अनुरूप परिवर्तित हुईं।

प्राचीन यूनानी सभ्यता का विकास लगभग कांस्य युग से लौह युग में संक्रमण के साथ हुआ। इस क्षेत्र में लोहे के सर्वप्रथम चिह्न मिनोअन सभ्यता में मिलते हैं, जो कि इस क्षेत्र की पहली कांस्य युगीन सभ्यता थी, जिसमें यूनानी आबादी थी। दूसरी ओर, माइसीनिअन सभ्यता यूनान की मुख्य भूमि पर स्वतंत्र रूप से विकसित हुई।

इन दोनों पर मेसोपोटामिया तथा फोनिशियन सभ्यता का प्रभाव था, तथा साथ ही लंबे समय से अनातोलिया तथा पूर्वी भूमध्यसागरीय समाजों में होने वाले परिवर्तन भी शामिल थे। मेसोपोटामिया और मिस्र की तरह मध्य अनातोलिया में भी एक परिपक्व कांस्य सभ्यता विकसित हुई थी।

विकसित व्यापार तथा विभिन्न कबीलों के कृषीय समुदायों के साथ अन्तर्संबंधों ने दो तरह की भाषाओं के उद्‌भव को प्रेरित किया: सेमेटिक तथा इंडो-यूरोपीय। दोनों के अवशेष तत्कालीन विभिन्न यूनानी बोलियों में पाये जाते हैं। दास प्रथा आंरभिक काल से यूनानी अर्थव्यवस्था और समाज की एक प्रमुख विशेषता थी तथा यह निरंतरता का एक महत्वपूर्ण पहलू भी थी।

14.5.1 मिनोअन सभ्यता

प्राचीन क्रीट गाथाओं में प्रसिद्ध मिनोस नामक राजा के नाम पर जानी जाने वाली मिनोअन सभ्यता (2000-1400 बी सी ई) की खोज सर आर्थर इवान्स ने पुरातात्विक खुदाई के माध्यम से प्रारम्भिक 20वीं सदी में की थी। खुदाई में बड़े महलों के अवशेष मिलते हैं। यह राजनीतिक सत्ता और उच्च वर्ग के आवासों और आर्थिक गतिविधि के केंद्र थे, जिनमें गेहूं, जैतून और अंगूर के कृषि उत्पादन के साथ-साथ भेड़ पालन और ऊन उत्पादन भी शामिल था, यह यूनानी सभ्यता की उस प्रमुख विशेषता की ओर इंगित करती है जिसकी ग्रामीण सभ्यता के शहरी सभ्यता तथा शहरी जीवन के साथ घनिष्ठ संबंध थे, इसका भूमध्यसागरीय क्षेत्र और उसके इतर समृद्ध व्यापार था। मृदभांड विकसित थे तथा इस द्वीप पर कई शहर स्थापित थे जो बहुत प्रसिद्ध थे।

हालांकि उनकी लिपि को अभी पढ़ा नहीं गया है, यह ज्ञात है कि उनकी एक लिपि थी जिसका इस्तेमाल मिस्र, अनातोलिया, लेबनान के तट, साइप्रस और एजियन के साथ सक्रिय बातचीत में किया जाता था। इस तरह के संबंध तथा वस्तुओं और लोगों के आदान-प्रदान और स्थानांतरण (जिसे औपनिवेशीकरण भी कहा गया) ने, हालांकि लगभग 1400 बी सी ई में इसके अचानक अंत के बावजूद, मिनोअन सभ्यता के एक नए चरण को जन्म दिया, जो कि इस मिनोअन ऐतिहासिक अनुभव में सम्मिश्रित था। हालांकि मिनोअन लिपि को 'रेखीय अ' कहा जाता है, एक अन्य लिपि 'रेखीय ब' भी उपयोग में थी तथा एक और अन्य क्रीटन चित्र लिपि भी प्रयोग में थी। इस प्रकार वहां प्राचीन यूनान में तीन अलग-अलग लिपियां थी, जो एक दूसरे से संबंधित भी थीं तथा उनमें समानताएं भी थीं। इस क्षेत्र में प्रचलित लिपि का सबसे पुराना रूप क्रीटन चित्रलिपि का है जो चित्र आधारित थी और 2000 बी सी ई के आसपास विकसित हुई। रेखीय अ लगभग 1700 बी सी ई में मिनोअन सभ्यता के दौरान अस्तित्व में आई, और रेखीय ब 1450 बी सी ई के आसपास प्रचलन में आई और मायसीनियन सभ्यता के दौरान प्रयोग में बनी रही। चित्रलेख ज़्यादातर मिट्‌टी की पट्‌टियों पर मिलते हैं, लेकिन उन्हें अभी पढ़ा नहीं जा सका है। जबकि क्रीटन चित्रलिपि चित्र आधारित थी। रेखीय अ, देखने में एक रेखीय थी, जिसमें शब्दांश लेखन प्रणाली थी। 'रेखीय अ' लिपि के ज़्यादातर अभिलेख एक वर्गाकार क्षेत्र में व्यवस्थित हैं, जो 4 से 9 लाइन के हैं। वे ज़्यादातर क्रीट क्षेत्रों में पाए गये हैं तथा कुछ क्रीट के बाहर भी पाए जाते हैं।

'रेखीय अ'

मिनोअन द्वारा विकसित यह यूरोप की प्रथम लिखित पद्धति है। यह 1800 बी सी ई और 1450 बी सी ई के बीच उपयोग में थी। इसमें मोटे तौर पर 77 से 85 ध्वन्यात्मक प्रतीक थे जो अभी तक पढ़े नहीं जा सके हैं। लेकिन संकेत दृश्यों और संख्या के संयोजन से मुख्य रूप से यह व्यापार के माल की सूची बनाने के लिए इस्तेमाल की गई प्रकट होती है। इसकी अक्षरमाला और चिन्ह ध्वनि, साकार वस्तुओं और अमूर्त सोच का प्रतिनिधित्व करते हैं। धर्म और अनुष्ठान के साथ जुड़े स्थानों पर भी ये पाए गए हैं। यह बाएं से दाएं तथा समानांतर लिखी जाती थी।

'रेखीय ब'

मायसीनियन सभ्यता के दौरान विकसित यह लिपि आधुनिक विद्वानों द्वारा पहचानी गई लिखित यूनानी लिपि है, और इसको ज़्यादातर मुख्य भूमि पर मिट्टी की पट्टियों पर बड़ी संख्या में पाया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें शिलालेख तथा सूची सामग्री संकलन के बही-खाते भी मिलते हैं। यह भी बाएं से दाएं लिखी जाती थी और यह लोगोग्राम रूप में है, जो लगभग चित्र आधारित है। इस प्रकार यह चित्रलेख और रेखिक अ की कुछ विशेषताएं साझा करती है। इसमें 90 शब्दांश संकेत हैं, जिनकी आधुनिक विद्वानों द्वारा पहचान कर ली गई है।

स्रोतः https://www.omniglot.com/writing/lineara.htm

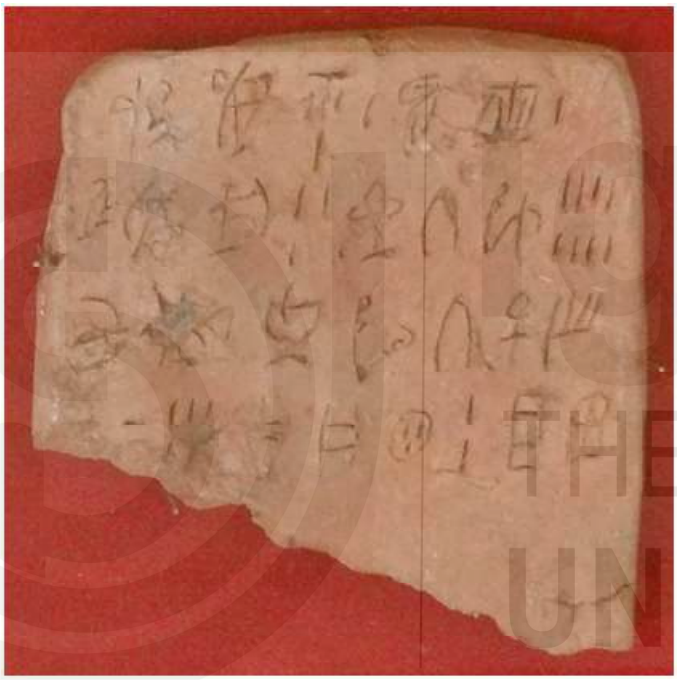

चित्र 14.1 : ज़ाक्रोस के महल से रेखीय अ की पट्टिका, सितिया पुरातात्विक संग्रहालय
साभारः ओलाफ टॉश्च
स्रोतः https://en.wikipedia.org/wiki/file%sitia-Museum_linear A_0.2pg

चित्र 14.2 : ज़ाक्रोस के महल से रेखीय ब पट्टिका, सितिया पुरातात्विक संग्रहालय
साभारः विंटेज विभाग (vinatgedept)
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/2/25/Clay_Tablet_inscribed_with_Linear_B_seript.jpg

14.5.2 मायसीनियन सभ्यता

1600 बी सी ई के बाद से, पेलापोनीस प्रायद्वीप और यूनान की मुख्य भूमि में स्वतंत्र विकास के तहत एक अन्य सभ्यता का विकास हुआ। इसका नाम मुख्य उत्खनित स्थल माईसीन के नाम पर मायसीनियन सभ्यता (1600-1200 बी सी ई) के रूप में जाना जाता है। यह विभिन्न कबीलों के स्थानांतरण से विकसित हुई तथा जिसके परिणामस्वरूप बस्तियों और योद्धाओं द्वारा शासित पृथक राज्यों का जन्म हुआ। समय के साथ, 1400 बी सी ई के लगभग इन्होंने क्रीट के द्वीप को जीत लिया, जो मिनोअन सभ्यता का केंद्र था। साथ ही उन्होंने अपने शासन के अंतर्गत अलग राज्यों के रूप में उनके प्रसिद्ध द्वीप शहरों को शामिल किया। यह निवासी विभिन्न यूनानी बोलियां बोलते थे जो उनके शासन के दौरान एक भाषा के रूप में विकसित हुई। इन्होंने 'रेखीय ब' लिपि को अपनाया, जिसमें क्रीट भी शामिल था। रेखीय ब लिपि इस प्रकार मायसीनियन सभ्यता की लिपि है और यह मायसीनियन यूनानी लिपि के रूप में जानी जाने लगी। इस लिपि में ज़्यादातर मिट्टी की पट्टियों पर महल प्रशासन संबंधी आर्थिक लेन-देन और कभी-कभी सैन्य गतिविधियां दर्ज हैं। यह लिपि यूनानी वर्णमाला से कई सदी पहले की है। ज़्यादा जानकारी के लिए देखें: https://www.omniglot.com/writing/lineara.htm;https://www.britannica.com/topic/Greek-language।

उन्नीसवीं सदी के अंत में हेनरिक श्लाइमन द्वारा मायसीनियन सभ्यता की खोज की गई और वहां पाई मिट्टी की पट्टियां इस काल के लिए लिखित साक्ष्य के रूप में प्रमुख स्रोत हैं। मिट्टी की पट्टियां विस्तृत विदेशी व्यापार, मिट्टी के बर्तन, कपड़ा और तेल, और सोना, तांबा और टिन का व्यापक उपयोग, जिसका प्रायः निर्यात किया जाता था, को दर्शाती हैं। हालांकि महल परिसर, जैसा कि मिनोअन के मामले में था, शहरी केंद्रों को दर्शाते हैं। ये शहर मजबूत किलों से घिरे होते थे जो बड़े योद्धा प्रमुखों की उपस्थिति की तरफ इशारा करते हैं, जो शहरों पर अपने महलों से शासन करते थे। यही योद्धा प्रमुख भू-अभिजात वर्ग भी था, जो नौकरशाही के विकसित ढांचे के माध्यम से राजनीतिक शक्ति और अर्थव्यवस्था दोनों को नियंत्रित करता था। इसमें छोटे अधीनस्थ कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों से करों की वसूली और उपहारों की प्राप्ति, कांस्य का उत्पादन, ऊनी कपड़े की बुनाई होती थी और कृषि उपज और कुटीर उत्पादन दोनों में समुद्री व्यापार शामिल था। वे अपनी सभी आर्थिक गतिविधियों के व्यापक दस्तावेज़ रखते थे। उनके धन और शक्ति की ताकत माईसीन की कब्रों के साक्ष्यों में झलकती हैं जैसा कि टीरियंस एथेंस, थेब्स, ग्ला और पायलोस के अवशेषों से स्पष्ट है (काशलिंस्की, इत्यादि, 1995)।

अधिशेष के रूप में आय की निकासी में निश्चित रूप से मिनोअन सभ्यता की अपेक्षा अधिक वृद्धि हुई और इस काल में राजनीतिक नियंत्रण भी अधिक सुदृढ़ था। लेकिन इस अवधि में भी राजनीतिक इकाई स्वतंत्र राज्यों के रूप में ही थी जो साम्राज्यों के उदय के काल में भी यूनानी सभ्यता की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी।

मायसीनियन सभ्यता का 1200 बी सी ई के आसपास अत्यधिक प्रवासीकरण और युद्धों में वृद्धि के परिणामस्वरूप अंत हो गया और शायद कुछ प्राकृतिक आपदाओं या सामान्य संकट ने 12 वीं शताब्दी बी सी ई के दौरान पहले से ही चरमराये कमज़ोर कृषि आधार को और अधिक प्रभावित किया। यूनानी इतिहास के इतिहासकार पतन के किसी भी एक कारण पर सहमत नहीं हैं। लेकिन लगभग पतन की इस स्थिति के कारण योद्धा शासक वर्ग के सैन्य आधिपत्य को राजस्व तथा राजनीतिक सत्ता दोनों के क्षेत्र में गहरा धक्का पहुंचा, इस प्रकार एक नए युग, जिसे 'अंधकार युग' (1200 बी सी ई से 800 बी सी ई) के रूप में जाना जाता है, की शुरुआत हुई।

14.5.3 'अंधकार युग'

ऐसा माना जाता है कि 1200 बी सी ई के आसपास यूनानी संस्कृति और समाज आदिम स्तर की तरफ लौट गए, यह चरण 800 बी सी ई तक चला। मायसीनियन काल के पतन के तत्काल बाद कुछ शहरों ने अपनी चमक खो दी और आर्थिक गतिविधियों के समृद्ध केंद्रों की जनसंख्या में ह्रास हुआ। कुछ शहरों को पूरी तरह लूट लिया गया और वे पूरी तरह से नष्ट हो गए। इस अवधि में यूनान गरीब, अधिक ग्रामीण और सामान्य रूप से शासित था, उसके शासक वर्ग में मुख्यतः लघु योद्धा थे जो एक दूसरे पर छापा मारते थे और आपस में लड़ते-रहते थे। राजनीतिक व्यवस्था के रूप में बहुत छोटे-छोटे राज्य थे, जिसमें सत्तारूढ़ योद्धा अन्य कुलीन वर्गों के साथ सत्ता साझा करते थे। यह वही अवधि है जिसमें बाद में जाकर **कुलीनतंत्र** की शुरुआत हुई। योद्धा प्रमुखों और कुलीन वर्ग के बीच अत्यधिक स्तरीकरण था और वे आपस में संघर्षरत रहते थे जिनके साथ वे सत्ता में भागीदारी के लिए मजबूर थे। तथा वे कृषक वर्ग, जो उत्पादन का आधार थे तथा साथ ही जो सबसे ज़्यादा उत्पीड़ित वर्ग था, के साथ भी संघर्षरत रहते थे।

अर्थव्यवस्था में कुछ हद तक आत्मनिर्भरता दिखाई देती है, लेकिन पुरातात्विक साक्ष्यों से पता चलता है कि टिन और तांबे के लंबी दूरी के व्यापार में गिरावट आई। कब्रिस्तान भी अपेक्षाकृत छोटे थे और मायसीनियन कब्रिस्तानों की तुलना में इनमें विलासिता की वस्तुओं की कमी भी थी। रेखीय 'ब' लिपि भी गायब हो गई थी और इसके साथ इस चरण के बहुत से लिखित दस्तावेज भी समाप्त हो गए।

लेकिन 1000 बी सी ई से अर्थव्यवस्था और भाषा का पुनरुद्धार हुआ। लोहे और इसके साथ जुड़ी प्रौद्योगिकी की शुरुआत भी इस समय की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। सरल उपकरण बनाने में लोहे के उपयोग ने टिन और तांबे के व्यापार की क्षति के बोझ से उबरने में मदद की और इसका प्रयोग जल्द ही व्यापक हो गया। यह एक निर्णायक विकास था। यूनानी बोलने वाले लोगों का एशिया माइनर, एजियन द्वीपों और आनातोलिया के पश्चिमी तट के क्षेत्रों में निवास करने वाले लोगों के साथ सामाजिक मिश्रण का यह एक बड़ा दौर था। इसके परिणामस्वरूप तीन प्रमुख बोलियोंः आयोनिक, डोरिक, एओलिक का विकास हुआ। इस अवधि के अंत में लिखाई का पुनरुत्थान हुआ जिसे फोनिशियन लोगों से लिया गया था, जिसे दाएं से बाएं लिखा जाता था तथा जिसे यूनानी भाषा में बखूबी प्रयुक्त किया गया।

इस प्रकार, अन्य सभी इतिहासों के 'अंधकार युग' की तरह, यूनानी इतिहास की यह अवधि भी समान रूप से 'अंधकार युग' नहीं थी। वास्तव में सिर्फ इतना था कि ऐसे कुछ तत्व जिनकी प्रधानता थी उनके विकास को झटका लगा या चीजें उस रूप में नहीं रहीं जिसके वे आदी थे। इसके अलावा कुछ ऐसे नए घटनाक्रम और उपलब्धियां थीं, जिन्हें बहुत बाद में जाना गया। अतः जब अक्सर ऐसा होता है, इसको 'अंधकार युग' कहा गया क्योंकि लंबे समय तक इसके बारे में ज़्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं थी, और इस अवधि के साक्ष्य भी सुलभ नहीं थे, या हमारे नजरिए भी इसकी सराहना नहीं करते, कि क्या हो रहा था। सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि आज इसे पूर्णतः स्वीकार किया जाता है कि इस अवधि को वास्तव में 'अंधकारमय' नहीं कहा जा सकता क्योंकि कुछ महान् साहित्य उस समय के दौरान और इस अवधि में लिखा जा रहा था। यूनान में होमर के *इलियड* और *ओडिसी* दो मशहूर महाकाव्यों की इसी अवधि में रचना की गई। इस प्रकार यूरोप के मध्ययुगीन काल की तरह, यूनान के इस प्राचीन काल को एक लंबे समय तक स्थिर या अपरिवर्तनीय के रूप में नहीं देखा जा सकता। वास्तव में, इस अवधि में, यहां तक कि सूक्ष्म स्तर पर ही सही, इसने क्लासिकल यूनानी सभ्यता के लिए एक मंच तैयार किया।

बोध प्रश्न-1

1) प्रारंभिक यूनान के कुछ महत्वपूर्ण शहरों के नामों की सूची बनाएं और व्याख्या करें कि यूनान का भौगोलिक विस्तार अपने प्रारंभिक विकास के लिए कैसे अनुकूल था।

.....

.....

.....

.....

.....

2) प्रारंभिक यूनान में प्रयुक्त लिपियां क्या थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) मिनोअन और मायसीनियन सभ्यताओं के बीच प्रमुख अंतर क्या था?

.....

.....

.....

.....

.....

4) उन तथ्यों का विवरण दें जिसके आधार पर कुछ इतिहासकारों द्वारा यह निष्कर्ष निकाला गया कि यूनान में 'अंधकार युग' उतना भी अंधकारमय नहीं था, जितना माना जाता है।

.....

.....

.....

.....

.....

14.6 पुरातन, क्लासिकीय और हेलेनिस्टिक यूनानः लोकतांत्रिक राजनीति के साथ प्रयोग

हालांकि समाज और राजनीतिक संगठनों में समय और स्थान के साथ कुछ बदलाव संभव है, लेकिन इस पूरी अवधि को कई कारणों से एक संपूर्ण काल के रूप में समझा जा सकता है। समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं में निरंतरता और व्यापकता दोनों को देखा जा सकता है। यह अवधि प्राचीन सभ्यता का केंद्र बिन्दु है, जिसके साथ यूनानी

सभ्यता की उपलब्धियों को पहचाना जाता रहा है। यह वह काल भी है जिसे प्राचीन विश्व में लोकतंत्र के साथ यूनानियों के विभिन्न प्रयोगों के रूप में भी देखा जाता रहा है।

पुरातन काल (800-500 बी सी ई) लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था के उद्भव और सामाजिक एवं आर्थिक उत्पादन, जो दास प्रथा प्रणाली पर खड़ा था, के बीच संबंधों का संकेत देता है। यह क्लासिकीय युग के दौरान और भी सुदृढ़ हो गया (500-323 बी सी ई)। एथेंस प्राचीन विश्व में नगर-राज्य के सबसे लोकतांत्रिक रूप के साथ, दास प्रथा का भी सबसे दमनकारी उदाहरण है।

समुदाय की स्वतंत्रता का विचार, भूमिपति शासक वर्ग पर आधारित मुखियाओं के कुल के शासन के आधार पर विकसित अवधारणा से भिन्न है। पुरातन काल के दौरान कई राज्यों में लोकतांत्रिक व्यवस्था विकसित हुई जिसका गठन और प्रक्रिया आम जनता की भागीदारी के आधार पर विकसित हुई। भूमि धारक वर्गों और अन्य लोगों, जो अपना धन व्यापार से प्राप्त करते थे, और किसानों, कारीगरों और छोटे निर्माताओं के बीच संघर्ष राज्यों के विभिन्न संस्थानों में गैर-कुलीनों की भागीदारी की प्रक्रिया का निर्धारण करने में महत्वपूर्ण थे।

क्लासिकीय काल में परिषदें और विधानसभाएं, जो प्राचीन लोकतंत्र की विशिष्टता को दर्शाते हैं, यूनानी दुनिया में हर जगह व्याप्त थीं। वहां पर एक ओर वे राज्य भी थे जो कुलीनतंत्र के समान थे, तथा दूसरी ओर एथेंस था जिसमें सर्वाधिक लोकतांत्रिक व्यवस्था थी। लेकिन इनमें समानताएं भी थीं जो उन्हें उत्पादन के प्राचीन संबंधों, जिनमें दास प्रथा सबसे महत्वपूर्ण है, के ढांचे के भीतर बांधती थी। हम इस इकाई के आगे के खंडों में इन मतभेदों और समानताओं तथा लोकतंत्र के साथ-साथ इसकी सीमाओं और उपलब्धियों की रूपरेखा प्रस्तुत करेंगे। हम उदाहरण के रूप में प्रयोग करने के लिए कुछ राज्यों में इसके विकास की भी जानकारी देंगे।

इससे पहले कि हम विभिन्न क्षेत्रों में नगर-राज्यों के उद्भव और विकास की धारणा के इस सूत्र की चर्चा करें जिसने प्राचीन यूनान को एक सूत्र में पिरोया था, यहां प्राचीन यूनान के सामाजिक-आर्थिक आधार को समझना उपयोगी होगा। इस संदर्भ में हम दास प्रथा और भूमध्यसागरीय क्षेत्र में समुद्री व्यापार के बारे में बात करेंगे।

सिकंदर (Alexander) की विजयें और मैसीडोनिया साम्राज्य राजनीति के क्षेत्र में तीव्र अवरोध को चिन्हित करता है। संस्कृति के क्षेत्र में ही सही कम से कम यह स्पष्ट है कि क्लासिकल अवधि में यूनान की कई उपलब्धियों ने जीवन और कला तथा साम्राज्य के एक बड़े भाग तथा उससे बाद की संस्कृति को प्रभावित किया, वहीं यूनान भी इससे लाभान्वित हुआ। राजनीतिक दृष्टि से, इन विजय अभियानों ने न केवल यूनानी राज्यों को मैसीडोनियन साम्राज्य में समावेशित किया, बल्कि नगर-राज्य संरचनाओं तथा इसकी लोकतांत्रिक व्यवस्था का भी अंत किया।

14.6.1 दास प्रथा और यूनानी सभ्यता

जब हम यूनानी सभ्यता की एक शहरी सभ्यता के रूप में बात करते हैं, जिनका मुख्य राजनीतिक पहलू नगर-राज्य थे, तो हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि ये नगर-राज्य मुख्य रूप से एक ऐसी कृषि प्रधान व्यवस्था, जिसका आधार दासों पर था, पर निर्भर थे। पैरी एंडरसन (2013) स्पष्ट रूप से कहते हैं: 'इस शहरी संस्कृति और राजनीतिक व्यवस्था के पीछे किसी भी तरह से कोई सहगामी शहरी अर्थव्यवस्था नहीं थी: इसके विपरीत, धन जिस पर बौद्धिक और नागरिक जीवन निर्भर था, उसे ग्रामीण इलाकों से एकत्रित किया गया था। कृषि ने इनके पूरे इतिहास में हमेशा उत्पादन के प्रमुख रूप का प्रतिनिधित्व किया, जिस पर निर्बाध रूप से शहरों की किस्मत आधारित थी' (एंडरसन,1974: 19)। कस्बे केवल मुख्य रूप से निर्माताओं,

व्यापारियों या कारीगरों के समुदाय से मिलकर नहीं बने थे, बल्कि भूमिपतियों तथा कृषि अधिपतियों के केंद्र थे, जिनका शहरों में बोलबाला था। यह स्पार्टा के कुलीनतंत्र और लोकतांत्रिक एथेंस दोनों के लिए ही सच था। संक्षेप में, प्रारम्भिक यूनानी काल से ही यूनानी सभ्यता ने शहर और ग्रामीण इलाकों, शहरी राजनीति तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था के बीच विशिष्ट संबंध स्थापित किया, जैसा कि उपरोक्त भाग में बताया गया है।

ग्रामीण उत्पादन से प्राप्त राजकोषीय राजस्व शहरी उत्पादन की तुलना में काफी अधिक था। अभिजात वर्ग द्वारा प्रयुक्त विलासिता की वस्तुओं का संपन्न व्यापार था। शहरों की सुंदर कलाकृतियों तथा भव्यता, उसकी वास्तु कला, मिट्टी के बर्तन, मूर्तिकला के निर्माण में और शानदार खेलों के संगठन में अत्यधिक धनराशि खर्च होती थी (इन आयामों पर **इकाई 15** में विस्तार से चर्चा की जाएगी)। इसमें से कुछ भी कृषि अधिशेष अर्थव्यवस्था और किसानों के परिश्रम के बिना संभव नहीं था। समान रूप से, यूनान की लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था, नगर-राज्य के विभिन्न संस्थानों और विधानसभाओं और परिषदों की कार्यप्रणाली, जिसकी इस इकाई में चर्चा करेंगे, उस धन और अधिशेष पर आधारित थी, जिसे प्राचीन यूनानी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पन्न किया गया था।

एक कृषि अर्थव्यवस्था जो विकास के अपने स्तर में अत्यधिक अल्पविकसित थी उससे किस प्रकार इतना अधिक अधिशेष निचोड़ा जा सका? कृषि और उद्योगों में, घरेलू श्रम और सैन्य शक्ति के लिए यूनानी समाज में उत्पादन के एक पहलू के रूप में दास प्रथा एक महत्वपूर्ण आयाम था। इतिहास में पहली बार कृषि और शहरी अर्थव्यवस्था, खनन, हस्तशिल्प और विभिन्न प्रकार की खेती में दास या अवैतनिक बंधुआ मजदूरों का उत्पादन में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था। लूट और भेंट वसूली के अतिरिक्त दासों का अधिग्रहण विजय अभियानों तथा भौगोलिक विस्तार का प्रमुख उद्देश्य था। इस सब ने और अधिक विजय अभियानों, नवीन बस्तियों के निर्माण और अभिजात वर्ग के विशेषाधिकारों को स्थापित करने तथा कई नगर राज्यों की गरिमा को स्थापित करने में योगदान दिया।

दास स्वयं एक प्रयोग की वस्तु बन गए और यहां तक कि उनके परिवारों, जिसमें बच्चे भी शामिल थे, पर भी उन स्वामियों का अधिकार हो गया, जिन्होंने उन्हें हासिल किया था। अपना कर्ज ना चुका पाने के कारण स्वतंत्र किसान जब अपने ऋण का भुगतान नहीं कर पाते थे तो उन्हें दास बना लिया जाता था। महिलाएं आरंभिक काल से ही दास आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। होमर भी अपनी कविताओं में उनका वर्णन करता है। प्रारंभिक मायसीनियन सभ्यता के संदर्भ में मिट्टी की पट्टिकाओं में वहां 550 महिला दासों के वस्त्र उत्पादन में कार्यरत होने तथा कई अन्य महिला दासों के महल में कार्यरत होने का संदर्भ मिलता है।

दासों के काम करने की स्थिति और जीवन की दशा काफी दयनीय थी। मालिकों के नियंत्रण में श्रमिकों की एक बड़ी संख्या होने के कारण, उनके स्वामियों द्वारा निवेश तथा प्रौद्योगिकी में सुधार लाने की ओर अधिक प्रोत्साहन नहीं दिया गया। दूसरी ओर, मानव श्रम के शोषण से और अधिक क्या निकाला जा सकता था इसकी भी एक स्पष्ट सीमा थी। अतः जब विजय अभियानों के माध्यम से विस्तार मुश्किल हो गया तो दास प्रथा को अपने आप में संकट से गुजरना पड़ा। यह ध्यान देने योग्य है कि यूनानी सभ्यता का उदय और पतन विशिष्ट रूप से दास प्रथा से जुड़ा हुआ था।

दास प्रथा के अलावा अन्य प्रकार के श्रम भी अस्तित्व में थे। इसमें स्वतंत्र किसान थे जो न केवल भेंट अर्पित करते थे, बल्कि इनका एक बड़ा हिस्सा ऋण के बंधकों में शामिल था। हालांकि यह मुख्य रूप से दास प्रथा के अधिशेष की निकासी थी जिसके कारण प्राचीन यूनान में शासक वर्ग अपनी विशिष्ट जीवनशैली बनाए रखने में सफल रहा। उस विशेषाधिकार और

विलासिता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा राजनीतिक वाद-विवाद, दार्शनिक विचारों तथा इतिहास में लोकतंत्र के साथ सबसे पहले प्रयोग का परीक्षण शामिल थे। हालांकि यह लोकतांत्रिक व्यवस्था अत्यंत अल्पविकसित थी और वह किसी भी तरह से आधुनिक लोकतंत्र की धारणा के समकक्ष नहीं थी।

हालांकि उपरोक्त चर्चा से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि सामाजिक परिदृश्य में हर जगह व्याप्त दास प्रथा में समानता थी। जो लोग स्वतंत्र थे और राजनीतिक व्यवस्था में भाग ले सकते थे और जो स्वतंत्र नहीं थे या दास थे, इसीलिए उन्हें नागरिक नहीं माना गया था, के बीच एक बुनियादी दरार थी। लेकिन इस विभाजन से परे, यूनानी समाज का स्वरूप समस्त नगर-राज्यों में एक गहरे वर्गीकृत समाज का था।

विशेषाधिकार प्राप्त के बीच सत्ता बंटवारे की प्रकृति भिन्न थी। आर्थिक भूमिकाओं के निर्वाहन में आपसी मतभेद था और यहां तक कि दासों के साथ संबंधों में भी विभिन्न नगर-राज्यों में मतभेद था। यह उनके आकार, सैन्य शक्ति और विशिष्ट आर्थिक गतिविधियों पर निर्भर करता था। उदाहरण के लिए, दास मालिकों में बड़े भूमिपतियों और सैन्य पुरुषों और योद्धा प्रमुखों से लेकर मध्यम वर्गीय तथा सम्पन्न किसानों तक थे। दूसरी ओर, दासों की प्रकृति एक **चल संपत्ति दास** (वह प्रणाली जिसमें एक दास पर उसके स्वामी का एक संपत्ति के रूप में स्वामित्व हो) के रूप में थी जो कृषि के क्षेत्र में काम करने वाला, एक घरेलू दास और दासों की निगरानी करने वाला एक पर्यवेक्षक दास भी हो सकता था। वह एक यूनानी हो सकता था और उस नगर-राज्य के वंश से संबंधित हो सकता था, जहां का वह निवासी था अथवा एक 'विदेशी' जिसे युद्ध और विजय के दौरान दास बनाया गया था, हो सकता था।

फिनले का मानना है कि विभिन्न नगर-राज्यों में सबसे अधिक दास विदेशी थे। वह दासों के वर्गीकरण और उनके विभिन्न व्यवसायों, जो आमतौर पर गैर-नागरिक दासों के रूप में थे, उनकी विशिष्ट भूमिकाओं का वर्णन करता है। वह उन उत्पाद क्षेत्रों का वर्णन करता है जहां वे मिश्रित रूप में थे, स्वतंत्र और बेगार श्रमिक या बंधक के रूप में। वह वर्णन करता है कि जिन्हें स्वतंत्र श्रमिक कहा जाता था वह सिर्फ दास ना होने के कारण स्वतंत्र थे, इसका यह मतलब नहीं था कि वह आधुनिक समाज की तरह अपने श्रम के पारिश्रमिक के संबंध में मोलभाव कर पाते। एक ऋण बंधक को आसानी से दास बनाया जा सकता था। इतिहासकारों की विभिन्न गणनाएं और आंकड़े अलग-अलग परिस्थितियों को दर्शाते हैं। साथ ही, उनकी संख्या उत्पादकों या श्रमिकों, यहां तक कि घरेलू श्रमिक भी, जो कभी-कभी वस्त्र उत्पादन तथा शिल्प उत्पादन में कार्यरत रहते थे, के द्वारा अधिशेष निकासी में दासों के महत्व को इंगित करती है। संक्षेप में, वहां विभिन्न नगर-राज्यों के बीच दास प्रणाली में विभिन्नता थी, और राज्यों के भीतर दास प्रथा में जटिलता थी।

स्पष्टता और संक्षिप्तता के लिए हम एथेंस और स्पार्टा के राज्यों के उदाहरण प्रस्तुत करेंगे। स्पार्टा में 'अंधकार युग' के अंत से ही बड़ी मात्रा में दास प्रथा का प्रचलन था। वहीं एथेंस में दास प्रथा, युद्ध अभियानों के साथ फैली लेकिन स्पार्टा और एथेंस में अंतर था। स्पार्टा में, दास सामूहिक रूप से राज्य के स्वामित्व में थे और *हैलॉटरी* व्यवस्था का हिस्सा थे, जबकि एथेंस में ज़्यादातर दास निजी स्वामित्व में थे और उन्हें वस्तुओं के रूप में बाज़ार में खरीदा और बेचा जा सकता था। स्पार्टा में दासों को राज्य द्वारा अलग-अलग परिवारों को, उत्पादन की आधारभूत इकाइयों को, या योद्धा सरदारों और भूमिपति शासक वर्गों को उनके द्वारा रखरखाव तथा उत्पादन के शासकीय अनुबंधों में उनके योगदान के आधार पर, उनके सामाजिक वर्गीकरण और सामाजिक भेद को ध्यान में रखते हुए, सौंपा जाता था। लेकिन जिन्हें वे प्रदान किये गए थे उन पर, उनका स्वामित्व नहीं था। इस कारण, स्पार्टा की दास व्यवस्था अपेक्षाकृत कम दमनकारी थी, क्योंकि दासों को अपने परिवार से अलग नहीं किया

जाता था। स्पार्टा में सामाजिक समझौते और उनकी राजनीतिक प्रणाली का आधार, मध्यम और छोटे किसान उत्पादक थे, जबकि एथेंस में श्रम और उत्पादन के आधार, मुख्य रूप से चल संपत्ति दास (chattel slaves) थे, जो वस्तुओं की तरह उनके स्वामियों द्वारा प्रयोग किए जाते थे और उनको एक अलग प्रकार के उत्पीड़न का सामना करना पड़ा। नगर राज्यों में दास स्वामित्व की प्रकृति या उन्हें सुपुर्द नियत कार्य काफ़ी हद तक इससे प्रभावित थे कि राजनीतिक शासन प्रणाली में इन नगर-राज्यों में नागरिक किस प्रकार अपना वक्त, ताकत तथा क्षमता का प्रयोग करते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि धन और आर्थिक दायित्व दोनों राज्य की संरचना और संस्थानों में राजनीतिक भागीदारी के विशेषाधिकार और राजनीतिक प्रभुत्व की प्रकृति को निर्धारित करते थे।

इस प्रकार, कुछ इतिहासकारों का मानना है कि एथेंस जो अपने लोकतंत्र के लिए जाना जाता है, वास्तव में वहां दास प्रथा का गंभीरतम रूप था, जबकि स्पार्टा जो अपने राजनीतिक रूप में कुलीनतंत्र था, वहां किसानों ने अपेक्षाकृत अधिक आत्मनिर्भरता का उपभोग किया। या दूसरी तरह से यह कहा जा सकता हैः दास प्रथा की सबसे दमनकारी विशेषताओं तथा दास चल सम्पत्ति ने एक ऐसी राजनीतिक संरचना को जन्म दिया जिसने उन लोगों को जिन्हें नागरिक होने का दर्जा प्राप्त था, विशेषकर अत्यधिक विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग को, राजनीतिक भागीदारी की अधिक स्वतंत्रता प्रदान की, जबकि *हैलॉटरी* और अधिक आत्मनिर्भर किसानों ने एक कुलीनतंत्र आधारित राजनीतिक संरचना को उत्पन्न किया। कई इतिहासकारों ने इस पर टिप्पणी की है और हम यूनानी राजनीतिक व्यवस्था पर चर्चा में आगे इसके बारे में बात करेंगे।

14.6.2 व्यापार, नगर-राज्य, कृषि उत्पादन, दास प्रथा

व्यापार, कृषि उत्पादन और दास प्रथा, जिसने सातवीं से पांचवी सदी बी सी ई में समृद्ध नगर-राज्यों का निर्माण किया, विशिष्ट अंतर-संबंधों को रेखांकित करने के लिए महत्वपूर्ण है। जैसा कि वर्णित किया गया है, शहरी नागरिकों ने भूमि से धन अर्जित किया और भूमि पर बिना किसी भागीदारी के शहरों में रहे और उन्होंने अपनी आवश्यक वस्तुओं की खरीदारी नगरों में की। उनकी आय का मुख्य साधन अनाज, शराब और तेल थे, ये वे वस्तुएं थीं जिनका उत्पादन शहरों की भौतिक सीमाओं के बाहर किया जाता था। इस प्रकार वस्त्र उद्योग, फर्नीचर और कांच के उत्पादों के अतिरिक्त, यहां तक कि ग्रामीण उत्पादों के लाभ का एक बड़ा हिस्सा शहर में किए गए विनिमय का परिणाम था। शहरों के बीच तथा निकट-पूर्व के साथ व्यापार जल परिवहन के माध्यम से होता था।

इस सभ्यता के तटीय चरित्र, जिसमें कोई शहर तट से 25 मील से अधिक की दूरी पर स्थित नहीं था, ने न केवल भूमिपति मालिकों की आय को व्यापार के माध्यम से संभव बनाया, बल्कि इसके साथ ही शहरों की भव्यता को भी स्थिरता प्रदान की। इनके निवासी मुख्य रूप से किसान और भूमिपति थे, जो यूनानी सभ्यता के मुख्य बिंदु थे। इस भव्यता का एक बड़ा हिस्सा सामूहिक और सार्वजनिक अनुष्ठानों की शक्ति, राजनीतिक बहस और विधानसभाओं और परिषदों की लोकतांत्रिक राजनीति के उन दृश्यों और सहभागी पहलुओं में परिलक्षित होता है, जिसके बारे में हम इतना अधिक सुनते आए हैं। हम यह भी कह सकते हैं कि लोकतांत्रिक राजनीति के इस सर्वाधिक प्रारम्भिक प्रदर्शन का प्रमुख लक्ष्य स्व-शासन और एक महान् सभ्यता के बारे में जागरुकता के विचार को प्रोत्साहन देना था, जैसा कि वे सोचते थे कि यह साम्राज्यों में सम्राट के महिमा गान से भिन्न है।

छठवीं शताब्दी बी सी ई के मध्य में 1500 यूनानी नगर-राज्य दास प्रथा, कृषि उत्पादन तथा अन्तः नगरीय व्यापार से जुड़े हुए थे, जिसने धन के सृजन को, एक शहरी शासक वर्ग के

लाभ तथा विलासिता को इस स्थिति में समर्थन प्रदान किया जबकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से साधारण औज़ारों पर निर्भर थी तथा समस्त राजनीति और शासन नगर-राज्यीय व्यवस्था के रूप में जुड़े हुए थे।

बोध प्रश्न-2

1) यूनानी सभ्यता के विकास में भूमध्यसागरीय और समुद्री व्यापार के महत्व पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यूनानी सभ्यता में दास प्रथा के महत्व की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

3) 'नगर-राज्यों और संस्थानों को चलाने के लिए धन कहां से आता था'? इसके बारे में आप क्या समझते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

14.7 यूनानी राज्य व्यवस्था, इसका अर्थ और संरचनाएं: पुरातन से क्लासिकीय यूनानी सभ्यता तक

प्राचीन यूनान में राज्य व्यवस्था के बारे में जानकारी का एक प्रमुख स्रोत अरस्तु का *'एथेंस का संविधान'* है, जो इतिहास और समकालीन राजनीति से संबंधित है। ऐसा माना जाता है कि उसने उक्त अवधि के लगभग 158 संविधानों का संकलन मुख्य रूप से एथेंस के संविधान के अध्ययन तथा उसकी तुलना के उद्देश्य से संकलित किया था। लेकिन समकालीन होने के साथ वह खुद अभिजात वर्ग से जुड़ा हुआ था तथा उसका वृतांत ऐसे अनेक स्रोतों पर आधारित था जिसे खुद उसके द्वारा सत्यापित नहीं किया गया था। अतः उसकी जानकारी को दूसरे अन्य और आधुनिक ऐतिहासिक अनुसंधानों से मिलाना तथा पुष्टि करना जरूरी है।

जैसा कि पहले उल्लेख किया जा चुका है पुरातन युग और यूनानी सभ्यता की क्लासिकीय

अवधि में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने (उपरोक्त उल्लेखित विवरण पर आधारित) नगर-राज्यों के विकास में योगदान दिया, न कि साम्राज्य के विकास में। यह विकास यूनानी दुनिया में विभिन्न रूपों में दिखाई देता है। भूमिपति शासक वर्गों और किसानों के बीच सामाजिक तनाव इस काल की विशेषता थी, जिसका हल अलग ढंग से किया गया, विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक समझौतो के साथ, जिसने नगर आधारित भूमिपतियों की शक्ति और नागरिकों और दासों के मध्य स्थित अंतर को संरक्षित किया। युद्ध, राजनीतिक संघर्ष और इस युग की सामाजिक समस्याओं ने सदियों से होने वाले राजनीतिक परिवर्तन की दिशा में योगदान दिया। यह विभिन्न नगर-राज्यों की राजनीतिक संरचनाओं और लोकतांत्रिक सक्रिय राजनीति में स्पष्टतः दिखाई देता है।

पोलिस और *डेमोस* यूनानी दुनिया में महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से प्रचलित विचार थे। दोनों शब्दों – *पोलिस* और *डेमोस* – का यूनानी संदर्भ में विशिष्ट अर्थ था। *पोलिस* का प्रयोग एक संस्था के बजाय समुदाय के संदर्भ में अधिक इस्तेमाल किया जाता था, जिसे सार्वलौकिक स्व-शासन और भागीदारी के मध्य संबंधों के रूप में अनुभव किया जा सकता था। न ही यह किसी क्षेत्र विशेष को सूचित करती थी, हालांकि समुदायों का कुछ विशिष्ट क्षेत्रों पर आधिपत्य थाः जैसे कि एथेंस, जहां साम्राज्य में एक से अधिक *पोलिस* शामिल थीं, ठीक उसी तरह से विजयों के पश्चात् स्पार्टा की भी वही स्थिति थी।

डेमोस का अर्थ सामान्य जनता से था, वे सभी लोग जो एक समुदाय से संबंधित थे, यहां बल आम सदस्यों, जो *पोलिस* का हिस्सा थे, पर था न कि उसके अन्दर निवास करने वाले किसी विशिष्ट समूह पर, जिनका कि समाज, अर्थव्यवस्था तथा राजनीति पर प्रभुत्व था। लोकतंत्र शब्द *डेमोस* से लिया गया है। इस प्रकार उसका प्रयोग समस्त लोगों के नाम पर और सैद्धांतिक रूप से सभी लोगों के द्वारा के संदर्भ में प्रयुक्त होता है। इसका कुछ अर्थ यह भी है जिसका प्रयोग आधुनिक लोकतंत्र में भी किया जाता है, हालांकि प्राचीन लोकतंत्र का संदर्भ कहीं अधिक प्राथमिक और सीमित है, यहां तक कि सैद्धांतिक रूप से भी, जैसा कि हम देखेंगे, कि यह मात्र अल्पविकसित सिद्धांत और व्यवहार के मध्य अंतर के रूप में ही ऐसा नहीं था। जैसा कि फिनले ने कहा है, 'प्रत्यक्ष भागीदारी एथेंस के लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण बिंदु है, और हम इसके साथ ही कई अन्य नगर-राज्यों को जोड़ सकते हैं। समस्त नागरिकों को व्यापक विधानसभा में, बड़े और छोटे सभी मामलों में उपस्थिति और मतदान और बहस के माध्यम से भाग लेने का अधिकार था। और यहां तक कि एक महत्वपूर्ण अनुपात नहीं होने की स्थिति में भी, कभी-कभी निर्णयों की सदस्यों द्वारा, जिनकी संख्या कुछ मामलों में सैकड़ों में या कभी-कभी एक हज़ार से ऊपर भी हुआ करती थी, पुष्टि की जाती थी। इसके अलावा, कहने के लिए कोई अलग नौकरशाही या अलग पुलिस या न्यायिक सेवा आदि नहीं होती थी (इस पर विस्तृत चर्चा के लिए देखें फिनले, 1987: 70-93)।

इस प्रकार प्रश्न अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से, भागीदारी का नहीं था, बल्कि स्वयं भागीदारी का था, चाहे किसी भी स्तर पर उन्हें अधिकृत किया गया हो। *प्रतिनिधि के बजाय प्रत्यक्ष भागीदारी प्राचीन लोकतंत्र की महत्वपूर्ण विशेषता थी, जो लोकतंत्र के आधुनिक अर्थ के विपरीत है*। वहां कोई अलग से कार्यकर्ताओं तथा नौकरशाहों की प्रशासन न्यायिक सेवा या पुलिस सेवा के लिए भर्ती नहीं की गई थी। इन कार्यों को नागरिकों द्वारा, जो इसके लिए अधिकृत थे, संपादित किया जाता था; कभी-कभी किसी विशिष्ट अवधि के लिए और कभी-कभी उन्हें चुना भी जाता था। इन्हें सभाओं में भाग लेने के लिए भुगतान भी किया जाता था ताकि उन्हें अपने कार्यकाल के दौरान प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों का सामना ना करना पड़े या वे उसमें भाग लेने के लिए असमर्थ न हो जाएं। ताकि सार्वजनिक कार्य के लिए छोड़ी गई अपनी आजीविका की भरपाई करने में वे सक्षम हों।

पोलिस और *डेमोस* खुद के भीतर पर्याप्त विविधता समायोजित करने की क्षमता रखते थे तथा इसका संदर्भ राज्य की किसी विशिष्ट संरचना से नहीं था। स्पार्टा का कुलीनतंत्र और लोकतंत्र की प्राचीन धारणा पर आधारित संविधान दोनों ही *पोलिस* के अंदर समाहित थे, जिसके साथ एक विशिष्ट नगर-राज्य की जनसंख्या संबंधित थी। अन्य *पोलिसों* के संबंध में एक *पोलिस* की स्वतंत्रता, यूनानी लोकतांत्रिक राजनीति की एक प्रमुख विशेषता थी, और विजय अभियानों और नए क्षेत्रों में औपनिवेशीकरण ने इसका सम्मान किया। इस प्रकार, एथेंस जब एक साम्राज्य बन गया (कुछ ही लोगों को पता है कि बाद में यह एक साम्राज्य बन गया था), इसने बेरहमी से शासित क्षेत्रों पर शासन किया, लेकिन फिर भी *पोलिस* क्षेत्रों के भीतर शासन की स्वतंत्रता थी। स्पार्टा ने अपने द्वारा विजित क्षेत्रों में कुलीनतंत्र की स्थापना की।

लोकतंत्र और स्वतंत्रता के विचारों की अवधारणा, जिसने राज्य के संबंध में पहली बार आवाज़ उठाई, उसका अर्थ राजा के शासन के विपरीत सामूहिक शासन और सामूहिक उत्तरदायित्व तथा समुदाय द्वारा शासन था, जो व्यावहारिक रूप से चाहे कितना ही असमान था। एक बार फिर से यूनानियों ने उद्देश्य और अस्तित्व की अवधारणा, जो कि धर्मनिरपेक्ष थी न कि दैवीय, पर बल दिया। लोकतंत्र और न्याय का अर्थ कानून के शासन से था; न कि राजा की इच्छा से, हालांकि चाहे यह कितना भी अपूर्ण और व्यवहार में विषम क्यों न था।

राज्य की संरचना के प्रत्युत्तर में वहां जनता को तर्क से अपने साथ लेने का विचार विकसित किया गया, जो आधुनिक राजनीतिक अभियानों की अवधारणा का अग्रदूत था। राजनीतिक बहस और वाकपटुता द्वारा अनुनय लोकतांत्रिक राजनीति का एक महत्वपूर्ण बिंदु था, और एक अच्छा जननेता होना एक विशिष्ट गुण तथा सम्मान की बात थी। अच्छा प्रवक्ता और शक्तिशाली तर्क से वोटों को अपनी ओर खींचना परिषदों और विधानसभाओं की सर्वव्यापी अंतर्भूत विशिष्टता थी।

एक नगर-राज्य में स्थिति समुदायों के विभिन्न खंडों में समुदाय से संबंधित दबावों और संघर्षों के विपरीत व्यक्तियों के अधिकारों के संघर्ष को महत्व दिया गया। लोकतांत्रिक राजनीतिक संरचना की कार्यप्रणाली की व्यापक संरचना में सामाजिक संघर्ष, अस्थिरता तथा परिवर्तनशीलता व्याप्त थी, वह चाहे एथेंस का संप्रदाय आधारित लोकतंत्र हो या स्पार्टा का कुलीनतंत्र हो। और वहीं एथेंस और स्पार्टा के बीच वर्चस्व के लिए संघर्ष भी था।

यूनानी राज्य व्यवस्था के संदर्भ में नागरिकता का तात्पर्य स्वतंत्र जनसंख्या से था। दास नागरिक नहीं थे, न ही महिलायें या विदेशी या जो मूल रूप से शहर के निवासी नहीं थे। दासों के अलावा, जो किसी भी तरह नागरिक नहीं थे, वहां स्वतंत्र गैर-नागरिक भी थे उन्हें स्पार्टा में *पेरिओइकोई* और एथेंस में *मेटोइकोई* कहा जाता था। इस प्रकार यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इन नगर-राज्यों में बहुमत जनसंख्या गैर-नागरिकों की थी, जो भूमि के स्वामित्व सहित कई सामाजिक अधिकारों से वंचित थे। इन गैर-नागरिकों को कुलीनतंत्र या लोकतंत्र की संरचना में भाग लेने की अनुमति नहीं थी। हालांकि वे इनकी कार्यप्रणाली से प्रभावित होते थे। अर्थव्यवस्था और समाज में जिन्हें 'विदेशी' समझा जाता था के योगदान की स्वीकार्यता का अर्थ नागरिकता और राज्य में उनकी भागीदारी नहीं था।

जैसा कि कुछ इतिहासकारों ने दर्शाया है और हम भी अर्थव्यवस्था और समाज के संदर्भ में इस पर चर्चा कर चुके हैं, समस्त कालानुक्रमिक अवधि के दौरान दास प्रथा और यूनानी दुनिया के भौगोलिक विस्तार पर आधारित प्राचीन सामाजिक संरचनाओं की इस विविधता को समझने का सबसे अच्छा तरीका तीन विशिष्ट नगर-राज्यों – कोरिंथ, स्पार्टा, एथेंस – का परीक्षण करना होगा। अन्य नगर-राज्य थोड़ी बहुत भिन्नता के साथ इन्हीं नगर-राज्यों के कुलीनतंत्र और लोकतंत्र के अनुरूप थे।

14.7.1 संक्रमण कालः पुरातन युग और निरंकुश शासन

मध्य सातवीं शताब्दी बी सी ई तक ज़्यादातर नगर-राज्य 'अंधकार युग' के किसी भी आम राज्य की तरह कुलीन कबीलों द्वारा शासित थे। वंशीय संबंध ही प्राथमिक वैद्यता तथा राजनीतिक सत्ता का सामाजिक आधार था।

पुरातन काल के राजनीतिक संविधानों के बारे में हमें जानकारी नहीं है क्योंकि वह क्लासिकल युग तक अस्तित्व में नहीं रहे। लेकिन जैसा कि पैरी एंडरसन ने कहा है, वह 'शायद शहरी जनसंख्या पर विशेषाधिकार प्राप्त वंशानुगत कुलीन वर्ग के शासन पर आधारित थी, जिसके द्वारा नगर पर विशिष्ट कुलीन परिषद की सरकार द्वारा राज्य किया जाता था' (एंडरसन, 2013: 30)।

कालांतर में, जनसंख्या में वृद्धि, नए क्षेत्रों में उपनिवेशवाद, अर्थव्यवस्था में बदलाव के कारण उत्पन्न होने वाले सामाजिक तनावों में वृद्धि ने शहर पर नवीन समूहों ने कब्जा तथा शासन किया। ये अनाधिकृत कब्ज़ा करने वालों के रूप में जाने जाते थे। लेकिन उन्हें फिर भी, जनता का समर्थन प्राप्त था और उन्होंने अपने दावों और शासन की स्थापना निरंकुशता से की। एक नए चरण की शुरुआत हुई, जिसे निरंकुश शासन के काल के रूप में जाना जाता है। उनके अधीन जन्म और वंश के आधार पर आधारित कुलीन वर्ग ने सत्ता पर एकाधिकार नहीं किया। यह काल राजतंत्र और क्लासिकीय यूनान और प्राचीन लोकतंत्रों, एथेंस में विशेष रूप से, के मध्य सेतु का काल था।

निरंकुशतावाद (tyranny) में प्रशासन द्वारा सख़्ती से शासन शामिल है और यह भागीदारी पर आधारित नहीं था, जैसा कि बाद की शताब्दियों में हुआ जब कुछ नगर-राज्य लोकतंत्र के रूप में विकसित हुए। फिर भी उस शासन को लोगों का समर्थन प्राप्त था और इसलिए यह उन सभी नकारात्मक अर्थों के भाव का संकेत नहीं देता, जैसा कि इस शब्द का अर्थ आज के संदर्भ में माना जाता है। निरंकुश शासकों ने व्यापार से अर्जित किए धन और नई अधिग्रहीत शक्ति द्वारा जन्म पर आधारित परंपरागत कुलीनों को विस्थापित किया, और उनके द्वारा पीड़ित किसानों का समर्थन जीतने के लिए परिवर्तन लाया गया। इस प्रक्रिया में उन्होंने उन संस्थानों को कमज़ोर किया, जिनके माध्यम से अभिजात वर्ग राजनीतिक सत्ता को एकाधिकार में किए हुए था। निरंकुश शासकों ने उस वर्ग का प्रतिनिधित्व किया जिन्होंने व्यापार और अन्य स्रोतों से धन अर्जित किया था। थेसली के अलावा उनके शासकों द्वारा छोटे खेतों को कई राज्यों में संगठित किया गया। परिवर्तन और जो रास्ते इन निरंकुश शासकों ने अपनाए, और इस काल में कृषक वर्ग ने जिस प्रकार विभिन्न नगर-राज्यों की राजनीति को प्रभावित किया, उस आधार पर वे कभी-कभी एक मुक्तिदाता की तरह देखे जाते हैं।

और क्यों, विशेष रूप से, उनके शासन की निरंकुश और तानाशाही प्रकृति के बावजूद, क्या हम इनमें से कई यूनानी निरंकुश शासकों को लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था के निर्माण में एक संक्रमण काल के प्रतिनिधि के रूप में मान सकते हैं? उदाहरण के लिए, कह सकते हैं कि, पांचवी शताब्दी बी सी ई में एथेंस की कई विशेषताओं की जड़ें छठी शताब्दी बी सी ई के सोलोन के सुधारों में पाई जाती हैं। उल्लेखनीय यह है कि सोलोन को चुना गया था और यह ज़िम्मेदारी उसे विरासत में नहीं मिली थी। वह एक भूमिपति था जो व्यापार में भी संलिप्त था और उसने सामाजिक समझौतों की उस अवधारणा को जन्म दिया, जिसमें भूमिपति अभिजात वर्ग के एकाधिकारों को चुनौती दी गई तथा उसे उन व्यक्तियों के साथ साझा किया गया जिन्होंने धन-सम्पदा तथा प्रतिष्ठा, उत्पादन तथा व्यापार के माध्यम से अर्जित की थी। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए वह किसानों को उनके कर्ज से मुक्त करने के लिए तैयार था। यह एक ऐसी विशेषता बन गई जिसे क्लासिकल यूनान के नगर-राज्यों में से कुछ ने इसे समाविष्ट कर लिया। इसके अलावा निरंकुश शासक ज़्यादातर पुरुष थे, जिन्होंने खुद

अपने प्रयास के माध्यम से सत्ता हथियाई थी और जिनके कोई वंशानुगत दावे नहीं थे और न ही उन्होंने अपनी स्थिति को दैवीय ठहराया। उन्होंने कानून को अपना आधार बनाया। जैसा कि कुछ इतिहासकारों ने बताया है, कुछ शुरुआती कानूनों को इस निरंकुश शासकों के काल में ही संहिताबंद किया गया। हम क्लासिकल अवधि के दौरान विभिन्न नगर-राज्यों में लोकतांत्रिक राजनीति की कार्यप्रणाली के बारे में चर्चा में इन निरंकुश शासकों के बारे में थोड़ा और विस्तार से बात करेंगे। साथ ही यह ध्यान में रखना होगा कि शायद सबसे अच्छी तरह से ज्ञात एथेंस कई नगर-राज्यों में से केवल एक था। एंडरसन के अनुसार निरंकुश शासकों ने 'क्लासिकल *पोलिस* की ओर महत्वपूर्ण रूप से संक्रमण किया', और उनके काल में ही 'क्लासिकल यूनानी सभ्यता की आर्थिक और सैन्य नींव रखी गई थी' (एंडरसन, 2013: 30)।

इसका प्रथम उदाहरण मध्य सातवीं शताब्दी में कोरिंथ में था, जिसे निम्न वर्ग का समर्थन प्राप्त था, बाद में एथेंस में सोलोन के द्वारा सुधार किये गये, जिनकी चर्चा नीचे की गई है।

14.7.2 क्लासिकल यूनान में लोकतांत्रिक राजनीतिः एथेंस, कोरिंथ, स्पार्टा

लोकतांत्रिक रूपों की उत्पत्ति, जो क्लासिकल अवधि के दौरान अस्तित्व में आए, को चिओस में देखा जा सकता है। मध्य छठवीं शताब्दी के दौरान चिओस पहला शहर था जिसने पूर्व से दासों का आयात किया था (एंडरसन, 2013: 37; फिनले, 1987: 46)। *पोलिस,* 'स्वयं शासित राज्य' थे, जिसका प्रयोग यूनानी नगर-राज्यों का वर्णन करने के लिए किया जाता था, जिनमें एथेंस सबसे बड़ा था जो कि लगभग 1000 वर्ग मील क्षेत्र में फैला हुआ था तथा जिसकी जनसंख्या 2,50,000 थी (फिनले, 1987)। *पोलिस,* कानून, गैर-गुलामों की कानूनी स्वतंत्रता और राजनीतिक सत्ता का एकमात्र स्रोत था। अतः *पोलिस* को किस तरह से संगठित किया जाता था इसका प्राथमिक महत्व है। *पोलिस* के गठन में मूल प्रश्न है, जैसा कि फिनले कहते हैं, कि किसे शासन करना चाहिएः कुछ लोगों द्वारा या बहुमत द्वारा तथा सामाजिक समझौतों को किस प्रकार संगठित किया जाना चाहिए। इस मुद्दे को युद्धों ने और विदेशी समस्याओं ने और विस्तार की महत्वाकांक्षाओं ने और भी अधिक जटिल बना दिया (फिनले, 1977: 54-60).

ईरान के साथ युद्ध और क्लासिकल यूनान में संक्रमण का घटनाक्रम एक ही समय में हुए। ईरानी, डेरियस और बाद में ज़रक्सेज़ के शासन के विस्तार के समय यूनानी राज्यों से संघर्ष में आए, जो 500 से 450 बी सी ई तक चला; और दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष था यूनानी राज्यों में आपस में विशेष रूप से एथेंस और स्पार्टा के बीच की वर्चस्व के लिए लड़ाई। स्पार्टा भूमि पर मुख्य सैन्य शक्ति थी, जबकि एथेंस की सबसे मजबूत नौसेना थी।

ईरानियों के साथ युद्ध का मतलब था रक्षा के लिए आपसी एकता की आवश्यकता, जिसने 478 बी सी ई में एथेंस के नेतृत्व में राज्यों के एक संघ में 'डेलियन लीग' (Delian League) का गठन किया। इससे अंततः एथेंस भी साम्राज्य के रूप में परिवर्तित हो गया, और एथेंस ने पूरी तरह से पेलापोनीसस प्रायद्वीप पर कब्जा करने की कोशिश की जिसके कारण स्पार्टा और एथेंस के मध्य संघर्ष हुआ। स्पार्टा ने अपने हितों की रक्षा करने के लिए 'पेलापोनीसियन लीग' (Peloponnesian League) का गठन किया। उन दोनों के बीच हुए युद्धों के दो चरणों 431-421 बी सी ई के बीच प्रथम पेलापोनीसियन युद्ध और 421-404 बी सी ई के बीच द्वितीय पेलापोनीसियन युद्ध में अतंतः एथेंस की हार हुई और उसकी नौसेना पूर्णरूप से नष्ट हो गई, जो कि उसकी श्रेष्ठता का प्रमुख आधार थी।

स्पार्टा के लिए अब थेब्स एक चुनौती था, जिससे संघर्ष 362 बी सी ई तक जारी रहा। इस समय मैसीडोनिया फिलिप द्वितीय के अधीन, जिसने यूनानी राज्यों को केरोनिया में हराया

था, एक शक्तिशाली ताकत के रूप में उभर रहा था। उसके बाद, उसके पुत्र सिकंदर महान् ने अपने विजय अभियानों की शुरुआत की, जिसने क्लासिकल यूनान और *पोलिस* का अंत कर दिया। यूनान मैसीडोनिया के शासन के अधीन आ गया।

सैन्य सेवा को भी नागरिकता के साथ जोड़ा गयाः क्योंकि कोई भाड़े की सेना नहीं थी, कई राज्यों में वयस्क पुरुष इस भूमिका को पूरा कर रहे थे। यहां तक कि क्लासिकल युग में भी ज़्यादातर राज्यों में, पूर्ण नागरिकता के लिए योग्यता वंशानुगत थी, हालांकि एथेंस में जब माता-पिता दोनों नागरिक हों तब ही नागरिक बन सकते थे। कई राज्यों में यह विशेषाधिकार संपत्ति के एक निश्चित राशि के स्वामित्व पर भी निर्भर था।

कोरिंथ

आठवीं और सातवीं शताब्दी बी सी ई के दौरान **कोरिंथ** में कुलीनों के एक परिवार का शासन था, जिसे बाक्कीयाड के रूप में जाना जाता था, जो अंततः साइप्सेलस/क्लाइस्थनीज़ द्वारा परास्त हुए तथा उसके बाद उसके बेटे पेरिआंडर, 657 से 550 बी सी ई तक, ने निरंकुश शासक के रूप में नगर पर शासन किया।

कोरिंथ एक वाणिज्यिक केंद्र था, जो अपनी भौगोलिक स्थिति और स्थलडमरूमध्य (isthmus; प्रत्येक ओर भूमि की एक सकरी पट्टी) की वजह से, इसकी नागरिकों की विधानसभा पर कुलीनतंत्र का प्रभुत्व था। यहां निरंकुश शासकों ने करों का पुनर्गठन किया था, जो सीमा शुल्क पर अधिक निर्भर था। अतः इसने किसानों को प्रभावित नहीं किया। पेरिआंडर (627-585 बी सी ई), जो निरंकुश शासन के संस्थापक शासक क्लाइस्थनीज़ का बेटा था, ने स्थलडमरूमध्य, जहां व्यापारी जहाजों से माल उतारने के लिए कोरिंथ की खाड़ी में लाते थे, जो धन की प्राप्ति का एक मुख्य स्रोत था, पर एक पक्की सड़क का निर्माण किया। यह एक प्रमुख बंदरगाह और नौ-सैनिक शक्ति बन गया, जो प्रसिद्ध काली मिट्टी के बर्तनों के उत्पादन का एक केन्द्र बन गया, जो पूरे भूमध्यसागर में प्रसिद्ध थे। उन्होंने यहां कबीलाई और परिषद व्यवस्था की स्थापना कर व्यापक राजनीतिक भागीदारी की भी नींव रखी। इन्होंने यहां किसी भी प्रकार के निरंकुश शासक के मनमानीपन को समाप्त किया और स्थिरता प्रदान की। लेकिन फिर भी इसकी संरचना और सदस्यता की लंबी अवधि में केवल 80 लोगों के हाथ में सत्ता प्रदान की, न कि *डेमोस* या वयस्क पुरुषों की विधानसभा के हाथों में। इस प्रकार यह एक समृद्ध नगर बन गया जो राजनीतिक संस्थाओं में कुलीनतंत्र रहा। जबकि कोरिंथ समाज एक कुलीन वर्ग, व्यापारी, शिल्पकारों और किसान वर्ग के मिश्रित रूप में विकसित हुआ, जिस पर कुलीनतंत्र का शासन था तथा जिसका आधार दास प्रथा थी।

स्पार्टा

स्पार्टा में इसी प्रकार के सामाजिक तनावों ने दो-स्तरीय संरचना का विकास कियाः योद्धा प्रमुखों का एक छोटा सजातीय समूह जिसने दासों की एक विशाल आबादी पर शासन किया। स्पार्टा, कोरिंथ और एथेंस की तरह निरंकुश शासन के रास्ते नहीं गया, लेकिन मेसानिया (पेलापोनीस क्षेत्र का दक्षिण-पश्चिमी भाग) की विजय के बाद इसने एक बड़ी दास आबादी को प्राप्त किया, जो राज्य के स्वामित्व के अधीन थी, लेकिन जिन्हें कुछ भूखंडों (जो असमान रूप से जन्म स्थिति के आधार पर आवंटित किए गए थे) के साथ, भिन्न-भिन्न नागरिक पुरुष आबादी को सौंपा जाता था। दास प्रथा का रूप अपेक्षाकृत कम गंभीर था और यह कम विकसित थी, लेकिन इस व्यवस्था के कारण नागरिकों के मध्यम और छोटे भूमिपतियों (जिन्हें व्यापार अथवा उत्पादन, जो दासों द्वारा किया जाता था, में कार्य करने की अनुमति नहीं थी) के वर्ग से भी एक शक्तिशाली पूर्णकालिक पैदल सेना का गठन किया गया। इन्हीं में से विधानसभा के सदस्य भी बनाए गए थे और जिन्होंने विधानसभा में अपनी भूमिका भी अदा की।

शीर्ष पर दो राजा थे जिनके अधिकार वंशानुगत थे और जो परिषद् (***गेरुसिया***) के सदस्य भी थे। *गेरुसिया* एक उच्च राजनीतिक परिषद थी, जिसके सदस्य सिर्फ 28 पुरुष थे जिनकी आयु 60 वर्ष से ऊपर होनी चाहिए थी, उसमें दोनों राजा भी शामिल थे। परिषद् अकेले ऐसे निर्णय ले सकती थी, जिन पर विधानसभा में निर्णय लिया गया था। लेकिन वास्तव में नागरिकों की संख्या बहुत ही कम थी जो कुल पुरुष जनसंख्या की 12 प्रतिशत से भी कम थी।

विधानसभा एथेंस की तुलना में कहीं अधिक निष्क्रिय थी। सबसे महत्वपूर्ण सदस्य पांच मजिस्ट्रेट या *ईफोर्स* थे, जिनके पास अंतिम कार्यकारी शक्तियां थीं और वे आसानी से विधानसभा के निर्णय को रद्द कर सकते थे। हालांकि हैरानी की बात यह है कि स्पार्टा में *हॉपलाइट्स* के रूप में मध्यम किसानों ने नगर-राज्य के संविधान द्वारा मताधिकार का पहला विशेषाधिकार प्राप्त किया। लेकिन प्रारंभिक परिवर्तन लंबे समय तक यहां बने रहे। एथेंस सहित अन्य नगर-राज्यों में कहीं अधिक उन्नत संविधान के काफी बाद तक इस प्रकार राजतंत्र, कुलीनतंत्र और लोकतंत्र मिश्रण दृढ़ता से एक कुलीनतंत्र के पक्ष में झुका हुआ था। यह परिषद् और विधानसभा के संघटन द्वारा सुनिश्चित किया गया था, एथेंस की तुलना में यहाँ विधानसभा की अपेक्षा परिषदों के अधिकार कहीं ज़्यादा थे।

एथेंस

एथेंस का अपना संविधान था, जैसा कि कुछ अन्य राज्यों के पास भी था, जबकि कुछ के पास कोई संविधान नहीं था। यह अपनी कानूनी संहिताओं और राजनीतिक संरचनाओं के विकास की एक लंबी अवधि के माध्यम से यूनानी राज्यों में सबसे लोकतांत्रिक रूप में विकसित हुआ। इसलिए हम यहां इसके बारे में अधिक विस्तार से अध्ययन करेंगे।

एथेंस में सुधारों का एक लंबा इतिहास है जो छठी शताब्दी बी सी ई से पहले शुरू हुआ। ड्रैको (650-600 बी सी ई) को पहले विधायक के रूप में जाना जाता है, जिसे एथेंस के नागरिकों, जो अत्यधिक कठोर कानून के माध्यम से शासित थे, के द्वारा चुना गया था, जिसे नगर-राज्यों के लिए कानून बनाने का अधिकार दिया गया। उसके द्वारा यह निर्मित एथेंस का सबसे पहला संहिताबद्ध संविधान था, जो सभी साक्षर लोगों के लिए उपलब्ध था, यह पहले के मौखिक कानून से अलग था, जिसे मात्र कुछ लोगों द्वारा ही जाना जाता था तथा उसकी व्याख्या की जाती थी और जिसे मनमाने ढंग से लागू किया जाता था। इस कानून में हत्या और गैर इरादतन हत्या के बीच अंतर स्पष्ट किया गया। उसके कानून को कठोर कहा जाता था क्योंकि छोटे से अपराधों के लिए भी मौत की सज़ा का प्रावधान था। इसकी मुख्य विशेषता ऋण बंधन थी, जो ऋण नहीं चुकाया जाने की स्थिति में था। यह एक बहुत बड़े अन्याय और सामाजिक असंतोष का स्रोत बना।

लोकतांत्रिक सुधारों की एक शृंखला बाद में सोलोन द्वारा शुरू की गई (लगभग 638-558 बी सी ई; जो एथेंस का राजनेता और पुरातन एथेंस का कानून निर्माता था)। इसे एथेंस के लोकतंत्र के पिता के रूप में जाना जाता है, इसे 594 बी सी ई में संघर्ष और वर्ग संघर्ष के युग में सामाजिक आम सहमति लाने के लिए चुना गया था)। उसने एक निरंकुश शासक की तरह सत्ता हथियाई नहीं। उसने समुदाय द्वारा स्व-शासन के लिए नियमों को तैयार किया। जैसा कि अरस्तु ने संविधानों के संबंध में अपने अध्ययन में बताया है, और जिससे फिनले भी सहमत हैं, उसके तीन सबसे महत्वपूर्ण उपाय थेः i) ऋण के लिए दासता का उन्मूलन, ii) एक पीड़ित व्यक्ति की ओर से अदालत में न्याय की तलाश के लिए तीसरे पक्ष के अधिकार का सृजन, और iii) लोक अदालतों में अपील की शुरुआत। तीनों में एक बात समान थीः ये वास्तव में समुदाय की उस विचारधारा से प्ररित थे जिसके द्वारा कमज़ोर बहुसंख्यक वर्ग को अभिजात वर्ग की ज्यादतियों तथा अतिरिक्त कानूनी शक्तियों से बचाया जा सकता था (फिनले, 1987: 430)।

सोलोन ने भू-स्वामित्व के आधार पर नागरिकों को चार वर्गों में विभाजित किया। एथेंस की परिषद् एक व्यापक प्रतिनिधि संस्था थी जिसकी सदस्यता पहले तीन वर्गों के लिए खुली थी, जिसमें कुलीन, अमीर और मध्यम किसान शामिल थे। इसमें से केवल पहले दो सैन्य और राजनीतिक और न्यायिक विभागों में नियुक्त किए जा सकते थे; जबकि नगर-राज्य संरचना में सबसे शक्तिशाली वर्ग बड़े भूमिपतियों का था, जो अल्पसंख्यक थे। अन्य राज्यों की तुलना, में यहां विधानसभा संरचना में सबसे अधिक लोकतांत्रिक थी और इसमें सभी नागरिकों को भागीदारी और मतदान का अधिकार प्राप्त था। प्राथमिक राजनीतिक इकाई *डेमे* थी, सभी नागरिक जिसके सदस्य थे। इस प्रकार *ड्रैको* के कानूनों ने नागरिकों के सृजन और उनके अधिकारों की रूपरेखा प्रस्तुत करने में कई नए कदम उठाए। हालांकि कर्ज का भुगतान करने की असमर्थता में अब बंधक या दास नहीं बना सकते थे, फिर भी भूमिपति कुलीन वर्ग का अभी भी अधिकांश भूमि पर नियंत्रण बना रहा।

पेइसिस्ट्राटस, जो 545-527 बी सी ई में सत्ता में था, एक निरंकुश शासक था, लेकिन कुछ यूनानी नगर-राज्यों में निरंकुश शासकों की तरह, जैसा कि उपरोक्त निरंकुश शासन के भाग में बताया गया है, उसने भी कुछ सुधार किए तथा क्लासिकल युग में नगर-राज्यों के लिए मार्ग प्रशस्त किया।

क्लाइस्थनीज़ (570-508 बी सी ई) के साथ एक नए चरण की शुरुआत हुई, जो मुख्य *आर्कान* (525-524 बी सी ई) यानी एथेंस के मजिस्ट्रेट के रूप में कार्यरत था। उसने राजनीतिक परिवर्तनों की शुरुआत की, जैसे पैत्रक (gens), परिवार (phratry) और कबीले का विघटन, कबीले आधारित समुदायों के स्थान पर क्षेत्रीय निर्वाचक क्षेत्रों की स्थापना तथा क्षेत्र और संपत्ति के आधार पर, जो कि वर्गीकरण का आधार बना, निर्वाचन सिद्धान्त की स्थापना। परिषद् या *बाउल* की संरचना के आकार को विस्तृत किया गया, सदस्यों को समूह (lots) के आधार पर चयनित किया गया और *पोलिस* जिसकी सबसे निचली इकाई अब *डेमे* थी, उसे भी क्षेत्रीय आधार पर गठित किया गया। भूमिपति उच्च वर्ग कई *डेमों* में बिखरे हुए थे, इसने लोकतांत्रिक सिद्धांतों को कोई सहायता प्रदान नहीं की बल्कि कुलीनतंत्रों के बीच संघर्ष को बढ़ावा दिया, उसने सरकारी पदों को पूरी तरह से जन्म या नातेदारी के सिद्धांत पर आधारित न कर उसके लिए चयन की शुरुआत की, लेकिन क्योंकि उसने कुलों की शक्तियों का विघटन किया था, इसीलिए उसे कभी-कभी लोकतांत्रिक सिद्धांतों को आगे बढ़ाने का श्रेय दिया जाता है।

प्रशासन और सुधारों के साथ अनुभवों की यह शृंखला प्राचीन यूनान में ऐथेंस के लोकतंत्र के लिए आधार बनी। हालांकि यह कह सकते हैं कि एथेंस के लोकतंत्र का सामाजिक आधार ऋण के आधार पर बंधक या दास बनाने का उन्मूलन था, जिसे सोलोन ने सुधार के माध्यम से किया था। इसने बड़े अभिजात भूखंडों के मालिकों को एकाधिकार से रोका, और इसने मध्यम और छोटे खेतों में स्थिरता लाई। इसने छठी शताब्दी बी सी ई में क्लासिकल एथेंस के लोकतंत्र में एक बड़ी सामाजिक भागीदारी का पथ प्रदर्शित किया। यूनानी नागरिकों में मामूली कृषि संपत्ति के साथ दूसरे अन्य लोगों को भी शामिल किया गया। और इसने 'सशस्त्र नागरिक पैदल सेना' के अस्तित्व को संभव बनाया। व्यवहार में इन पहलुओं ने ऐसे संविधान के लिए योगदान दिया जिसके द्वारा किसी भी अन्य नगर-राज्य की तुलना में लोगों द्वारा बड़ी संख्या में प्रत्यक्ष लोकतंत्र में भागीदारी संभव हुई। इन्होंने एथेंस के संविधान की नींव रखी, जिसने विधानसभा को प्रत्यक्ष लोकतंत्र और आम नागरिकों की भागीदारी का एक महत्वपूर्ण अंग बना दिया। बाज़ार में स्थित विधानसभा एथेंस के लोकतंत्र का सक्रिय केंद्र बन गई।

पांचवी शताब्दी बी सी ई के दौरान क्लासिकल एथेंस में युद्ध और शांति, कराधान, धर्म-संप्रदायों के नियमन, सेना, युद्ध वित्त, लोक निर्माण, आदि के नियमन पर प्रस्तावों, साथ ही संधियों और युद्ध वार्ताओं पर विधानसभा इन सभी महत्वपूर्ण मुद्दों पर निर्णय लेने के लिए एक

प्राथमिक संस्था थी। इसके ऊपर एक परिषद् थी, जो कि एक निर्वाचित संस्था थी, जिसमें लगभग 500 सदस्य थे, जिन्हें एक वर्ष की अवधि के लिए चुना जाता था। इन निर्वाचित सदस्यों को अपने कार्यकाल के दौरान वेतन दिया जाता था, जिससे यह सुनिश्चित किया जाता था कि जो समय उनके द्वारा परिषद् के कार्यों में बिताया गया उससे हुए नुकसान के लिए उन्हें मुआवजा दिया गया था, ताकि जो धनी नहीं थे वे भी सदस्य बन सकते थे। हर अधिकारी सीधे ***डेमोस*** के प्रति उतरदायी था।

तथापि स्पार्टा की तरह एथेंस में भी शक्तियां परिषद् के पक्ष में भारित थीं, हालांकि विधानसभा और *डेमेस* में जन भागीदारी कहीं अधिक विस्तृत थी। हालांकि चर्चा और बहस लगातार होती थी, और अन्य नगर-राज्यों की तुलना में यह कहीं अधिक स्वतंत्र तथा आज़ाद ख्याल की थी, फिर भी गैर-नागरिकों को सभी सामाजिक अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी से वंचित रखा गया था।

सैद्धांतिक रूप से, विधानसभा, जिसमें पांचवी शताब्दी बी सी ई में लगभग 43,000 सदस्य थे, के हाथ में अंतिम राजनीतिक निर्णय और शक्तियां थीं। वास्तविक संदर्भ में, सभी निर्णय पहले से ही सूक्ष्म परिषद् में लिए जा चुके होते थे, जहां धनी प्रभुत्व में थे, जिन्हें बाद में विधानसभा में ले जाया जाता था, जहां केवल उनकी पुष्टि की जाती थी। और सभा के सदस्यों का केवल एक छोटा सा प्रतिशत ही वास्तव में नियमित रूप से भाग लेता था। और परिषद् के भीतर से जो समितियां बनाई जाती थीं, उन पर 1200 धनी नागरिकों का एकाधिकार था। ये समितियां कराधान निर्धारण, लोक निर्माण के लिए अनुबंध, खानों के लिए रियायतें, सैन्य और नौसैनिक बलों पर नियंत्रण रखती थीं। ये विदेशी मामलों को भी निर्देशित करती थीं, उनके पास पुलिस शक्तियां थीं और वे न्याय व्यवस्था को नियोजित करती थीं। धार्मिक समारोहों की अध्यक्षता अमीर लोग करते थे। यहाँ की कानूनी प्रणाली के तहत गैर-नागरिकों को किसी प्रकार की सुरक्षा की पेशकश नहीं की गई, दास प्रधान रूप से अपने मालिकों के प्रति जवाबदेह थे, जिन पर उनका संपत्ति के रूप में स्वामित्व था, और महिलाएं अपने पति और पिता के प्रति जवाबदेह थीं। एक ही अपराध के लिए नागरिकों और दासों के बीच दंड के प्रावधान मनमाने और असमान थेः नागरिकों पर अक्सर जुर्माना लगाया जाता था, दासों को चाबुक और शारीरिक क्रूरता से दंडित किया जाता था। सेनापति बिना किसी भी समय-सीमा के बार-बार निर्वाचित किए जा सकते थे और वे एथेंस समाज के सबसे प्रभावशाली वर्ग में से थे।

राज्य संपत्ति, विजय प्राप्त क्षेत्रों से भेंट, व्यापार, अप्रत्यक्ष करों और दास परिश्रम से अर्जित अधिशेष, तथा स्वयं सशस्त्र नागरिक नगर-राज्यों के लिए सामाजिक आधार और राजस्व प्रदान करते थे। हालांकि भूमि के स्वामित्व के आधार पर कर का निर्धारण नहीं होता था। इस प्रकार, अंततः प्राचीन यूनान की लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था में अमीरों के प्रभुत्व का प्रमुख कारण यही था। साथ ही यह बताता है कि क्यों और कैसे एथेंस, सबसे अधिक दमनकारी दास प्रथा प्रणाली के अस्तित्व के बावजूद अपने समय में यूनानी संविधानों में सर्वाधिक लोकतांत्रिक था।

लेकिन यूनानी संवैधानिक सिद्धांत या सिद्धांत की कार्यप्रणाली में शक्तियों के विभाजन की परिकल्पना नहीं की गई थी, जैसा कि हम आधुनिक समय में करते हैं। परिषदें और विधानसभाएं, सभी व्यावहारिक प्रयोजनों के लिए, कानून के न्यायालय भी थे, जो विवादित मुद्दों पर फैसला करते थे। जब अलग-अलग अदालतें विकसित भी हो गईं तो उनका गठन परिषद् के सदस्यों में से किया गया तथा जिन पर उनका प्रभुत्व भी था। तृतीय पक्षीय शिकायतों को समय के साथ स्वीकृति मिली, लेकिन झुकाव केवल उन पक्षों की शिकायतों पर था जो उस संघर्ष से संबंधित थे। वहां आपराधिक (क्रिमिनल) और नागरिक (सिविल) मामलों के बीच कोई भेद नहीं थे, जैसा कि आज आधुनिक समय में किया जाता है, यद्यपि निजी और सार्वजनिक मुद्दों के बीच कुछ भेद अवश्य किए गए थे।

पोलिस की सामाजिक संरचना, लोकतांत्रिक राजनीति के औपचारिक तत्वों के बावजूद, स्तरीकृत थी। यह स्तरीकरण इस क्रम में थाः अरिस्टोई, *पेरिओकोई,* दास, ज़ेनोई। इन वर्गों में अपेक्षाकृत सामाजिक स्थिति और असमान राजनीतिक प्रभाव सहित असमान अधिकार की स्थिति लगातार बनी रही। यह ध्यान देने योग्य है कि नागरिकों और गैर-नागरिकों के बीच अपरिहार्य औपचारिक राजनीतिक अधिकारों को छोड़कर, उनमें फर्क की दरार बहुत स्पष्ट रूप से चिन्हित और पैनी थी।

पांचवी शताब्दी बी सी ई का सबसे महत्वपूर्ण नेता पेरिक्लेस (494-429 बी सी ई) था, जो एक सुवक्ता और एक सेनापति था, विशेष रूप से ईरान और पेलापोनीसियन युद्धों के दौरान एक प्रभावशाली राजनेता बनकर उसने 461 से 429 बी सी ई के मध्य एथेंस का नेतृत्व किया। सुवक्ता होने तथा अपने व्यक्तित्व के प्रभाव की शक्ति के कारण उसने एथेंस के लोकतंत्र में नए तत्वों, बहस और अनुनय, के महत्व का सूत्रपात किया। उसने सार्वजनिक वित्त के प्रशासन में दक्षता को बढ़ाया, कराधान और कुलीनों की सैन्य ज़िम्मेदारी और सार्वजनिक व्यय, जिसके द्वारा बुनियादी ढांचों की संरचना की गई, इन सभी को सुनिश्चित किया। उसे डेलियन लीग को एथेंस के साम्राज्य में बदलने का श्रेय दिया जाता है। साहित्य और कला में अपनी रूचि के माध्यम से एथेंस से बाहर के नगर-राज्यों में यूनानी प्रथाओं का प्रभाव बढ़ाने का श्रेय भी उसे जाता है। अधिकारियों को अन्य यूनानी राज्यों के साथ संबंध बनाए रखने के लिए, विजय प्राप्त क्षेत्रों से भेंट इकट्ठा करने और कराधान के लिए नियुक्त किया गया था। वह एक्रोपोलिस के निर्माण के लिए भी काफी हद तक ज़िम्मेदार था।

सबसे उन्नत यूनानी नगर-राज्य एथेंस की प्रमुख ताकत नौसेना थी, जिसकी सहायता से बड़े क्षेत्रों में साम्राज्य का विस्तार किया गया, जब तक कि सिकंदर (336-323 बी सी ई) द्वारा उसके विजय अभियानों को रोका नहीं गया। सिकंदर की विजयों के पश्चात् यूनानी राज्य मैसीडोनिया साम्राज्य का हिस्सा बन गये, जिसके बाद नगर-राज्यों की लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रयोग का अंत हो गया। हालांकि यूनानी संस्कृति मैसीडोनिया के संपर्कों के माध्यम से दूर-दूर तक फैली और यह हेलेनिक संस्कृति के रूप में जानी जाने लगी। एथेंस के साम्राज्य के दौरान यूनानी राज्यों और नवीन विजित क्षेत्रों के प्रति अलग ढंग से व्यवहार किया गया। विजित क्षेत्रों के कई राज्यों में शासन अपेक्षाकृत अधिक केंद्रीकृत, अधिक क्रूर था और इन पर कराधान का बोझ कहीं अधिक था। इस प्रकार साम्राज्य ने एथेंस के संसाधनों में काफी कुछ जोड़ा, जिससे एथेंस मैसीडोनियाई विजय अभियान तक एक मुख्य यूनानी नगर-राज्य बना रहा। मैसीडोनियाई विजय ने नगर-राज्य की धारणा को समाप्त कर दिया, इसने राजनीतिक प्रशासन और न्याय और अपराधों की सजा से जुड़े संस्थानों या संस्कृति और नगरों के अभिन्यास को परिवर्तित किया। मैसीडोनियाई शासन में शहरी सम्मिश्रण और समझौता दिखाई देता है, जो रोमन साम्राज्य के उदय तक चला। आप इसके बारे में हमारे पाठ्यक्रम **बीएचआइसी-104** में पढ़ेंगे।

14.8 यूनानी समाज में महिलाएं

महिलाओं, जो यूनानी समाज का 50 प्रतिशत का हिस्सा थीं, के विषय में तथा उनकी समाज तथा राजनीति में भूमिका की चर्चा के बिना यूनानी सभ्यता पर परिचर्चा अधूरी है। आधुनिक समाज की तरह गरीब और श्रमिक आबादी के मध्य महिलाएं कार्यबल का हिस्सा थीं। वह खेतों और घरों में काम करती थीं। यूनानी समाज में वे भी दास समूह का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। उनके श्रम से उत्पन्न अधिशेष ने भूमिपति वर्ग के धन तथा विलासिता में बढ़ोत्तरी की। महिलाएं घरेलू दास के रूप में और वस्त्र और हस्तशिल्प उद्योगों में कार्यरत थीं। पुरुषों की तरह, उन्हें युद्ध में कैदी बनाया गया और दासों में बदल दिया गया, और यह सब उनके ऊपर महिलाओं के रूप में शोषण के अतिरिक्त था जो जारी रहा। यह सभी यूनानी नगर-राज्यों के बारे में सच है।

प्राचीन समाज का अनुमान आधुनिक मानकों के अनुसार नहीं लगाया जा सकता। लेकिन फिर भी, प्राचीन समाजों को 'स्वर्णिम' स्थिति के रूप में चित्रण के प्रयास के आलोक में इस तथ्य पर यहां यह जोर देना आवश्यक है कि, जहां यह सत्य है कि महिलाओं ने इन समाजों की महानताओं के फल का भोग किया तथा उसमें भाग लिया लेकिन इन समाजों की महानता का वर्णन अतिशयोक्ति पूर्ण है क्योंकि महिलाओं की अधीनता बहुत अधिक थी। देवियों की पूजा अवश्य की जाती थी, सत्तारूढ़ वर्ग में कुछ प्रसिद्ध विदूषी महिलाएं भी थीं, जिनका विवरण साहित्यिक स्रोतों से मिलता है। कई महिलाओं ने प्रारम्भिक काल में सार्वजनिक धार्मिक अनुष्ठानों में भी भाग लिया, लेकिन हम कह सकते हैं कि सत्तारूढ़ और श्रमिक दास या गैर-दास श्रमिकों की महिलाओं में एक बड़ा अंतर था। यह अंतर विलासिता, आराम और पारिवारिक धन के उपभोग तथा कुछ हद तक शिक्षा के क्षेत्र में स्पष्टतः परिलक्षित होता है। वहां गणिकायें भी थीं, जिनकी उपलब्धियां तथा ज्ञान उच्च थे। वेश्यावृत्ति यूनानी समाज का एक अन्य पहलू था।

महिलाएं नागरिकों की तरह स्वतंत्र नहीं थीं। वास्तव में, उन्हें नागरिक नहीं माना गया और वे विधानसभाओं में किसी भी स्तर पर भाग नहीं ले सकती थीं, उच्च संस्थाओं की तो बात ही नहीं। महिलाओं को विरासत और संपत्ति के स्वामित्व की अनुमति नहीं थी। परिवार में जो पहले से ही निजी संपत्ति के उद्भव के साथ पितृसत्तात्मक समाज की ओर अग्रसर था, उनकी स्थिति अधीनस्थ थी, पिता और पति के नियंत्रण में थी। हम अपनी अगली इकाई में संस्कृति और रोजमर्रा की जिंदगी के संदर्भ में उनके बारे में अधिक बात करेंगे।

बोध प्रश्न-3

1) क्या आप सहमत हैं कि विविधता प्रारंभिक काल से ही यूनानी सभ्यता की एक विशेषता थी? कुछ उदाहरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) एथेंस और स्पार्टा के राजनीतिक ढांचे का वर्णन करें, जैसा कि यह क्लासिकल कालीन यूनान में विकसित हुआ।

.....

.....

.....

.....

.....

3) प्रारंभिक यूनानी इतिहास में निरंकुश शासन काल के संबंध में आपके क्या विचार हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) प्राचीन यूनानी सभ्यताओं में महिलाओं की स्थिति पर एक संक्षिप्त विवरण दीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

14.9 सारांश

इस इकाई में हमारा प्रयास प्रारंभिक काल से यूनानी राज्य व्यवस्था की विविधता को रेखांकित करने का रहा है। हमने प्राचीन यूनान के नगर-राज्यों के कामकाज तथा संरचनाओं और लोकतंत्र के साथ उनके कुछ प्रयोगों को देखा। हमने देखा कि व्यवहार में यह लोकतंत्र सीमित था तथा केवल एक छोटे से अल्पसंख्यक वर्ग के लिए ही उपलब्ध था। हालांकि इस काल में कुछ वैचारिक बहसों और नए विचारों का उदय हुआ, जिसकी हम अगली इकाई में चर्चा करेंगे। यहां आपने देखा कि कैसे यूनानी सभ्यता की महान् उपलब्धियों में दासता का महत्वपूर्ण योगदान था, यहां तक कि वास्तव में इसने इसकी नींव का गठन किया। आप अब दास प्रथा, राजनीतिक प्रयोगों और भूमध्यसागर के आसपास व्यापार के केंद्रीकरण और यूनानी सभ्यता के उदय तथा विकास के मध्य संबंधों का विशलेषण करने में सक्षम होंगे। आप अब नागरिकों और दासों के बीच के अंतर को समझ गए होंगे। हालांकि हमने दासों और उनके रोजमर्रा के कामकाज से जीवन में आने वाली समस्याओं का वर्णन नहीं किया है। यह काफी स्पष्ट है कि उन्हें कोई भी सामाजिक अधिकार प्राप्त नहीं थे और उन्हें किसी भी उत्पादित वस्तु की तरह खरीदा और बेचा जा सकता था। आपने यूनानी समाज में अन्य वर्गों, जो दास नहीं थे, लेकिन नागरिक भी नहीं थे और नागरिकों और दासों के मध्य स्थित थे, उनकी स्थिति के बारे में भी जानकारी प्राप्त की होगी। महिला दासों की स्थिति के बारे में भी चर्चा की गई है। आपने यह नोटिस किया होगा कि उनका शोषण उनके पुरुष साथियों की अपेक्षा कहीं अधिक था।

14.10 शब्दावली

चल संपत्ति दास (Chattel slaves) : दासों का एक रूप जिसमें एक व्यक्ति और उसके परिवार को जीवन भर के लिए दास बनाया जाता था और उन्हें संपत्ति माना जाता था और साथ ही उनका व्यापार भी किया जा सकता था।

डेमेस : यूनानी नगर-राज्यों में स्थानीय परिषदें जिनके गठन में या तो कई छोटी बस्तियाँ या गांव (hemlets) या एक शहरी जिला शामिल होता था।

गेरुसिया : स्पार्टा में 30 पुरुष बुजुर्गों की परिषद्, उनमें से दो स्पार्टा के राजा होते थे जबकि अन्य 28 पुरुषों की आयु 60 से अधिक होती थी।

कुलीनतंत्र : सरकार का एक ऐसा रूप जिसमें सत्ता कुछ लोगों या धनी और विशेषाधिकार प्राप्त परिवारों के हाथ में होती थी।

पोलिस : एक स्व-शासित यूनानी नगर-राज्य

थेसली : प्राचीन यूनान में एक पारंपरिक प्रशासन का क्षेत्र। मायसीनियन काल के दौरान यह एओलिया के रूप में जाना जाता था।

14.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 14.4 देखें

2) रेखिक अ/मिनोअन लिपि और रेखिक ब लिपि

3) उप-भाग 14.5.1 और 14.5.2 देखें

4) साहित्य कार्य, अनियमित पतन, आदि, उप-भाग 14.5.3 देखें

बोध प्रश्न-2

1) उप-भाग 14.6.2 देखें

2) उत्पादन, घरेलू काम, अधिशेष, आदि के लिए योगदान। उप-भाग 14.6.1 देंखें

3) विस्थापित पारंपरिक अभिजात वर्ग, छोटे खेतों का समेकन, आदि। उप-भाग 14.6.2 देखें

बोध प्रश्न-3

1) राजनीतिक व्यवस्था, दासता के अंतर को विभिन्न नगर-राज्यों में चिन्हित करें, जैसे इस इकाई के भागों और उप-भागों में बताया गया है।

2) उप-भाग 14.7.2 देखें

3) निरंकुशता के काल के मूल्यांकन के लिए उप-भाग 14.7.1 देखें

4) वे नागरिक नहीं थीं, तथा पुरुषों के अधीनस्थ थीं, उप-भाग 14.8 देखें

14.12 संदर्भ ग्रंथ

एंडरसन, पेरी. 2013. *पैसेज फ्रॉम एंटिक्विटी.* लंदन और न्यूयार्कः वर्सो.

चाइल्ड, गॉर्डन. 1986. *व्हॉट हैपंड इन हिस्ट्री.* पेंगुइन बुक्स.

बरनाल, मार्टिन. 1991. *ब्लैक एथेना, द एफ्रोएशिः याटिक रूट्स ऑफ क्लासिकल सिविलाइजेशन.* लंदनः विंटेज.

फिनले, एम. आई. 1977. *द एनसियंट ग्रीक्स.* न्यूयार्कः पेगुइन बुक्स.

फिनले, एम. आई. 1999. *द एनसियंट इकोनॉमी.* अपडेटेड एडीशन. बार्कले एण्ड लॉस एंजेलेसः यूनिवर्सिटी आफ कैलीफोर्निया प्रैस.

हरमन, जोचिम एवं एरिक जुरचर (संपा). *1996. हिस्ट्री आफ हयूमैनिटीः साइंटिफिक एंड कल्चरल डेवलपमेंट.* भाग III. *फ्रॉम द सेविंथ संचुरी बी. सी. टू द सेविंथ संचुरी ए. डी.* लंदन एवं न्यूयार्कः यूनेस्को एवं रुटलेज.

फारूकी, अमर. 2001. *अर्ली सोशल फार्मेशन्स.* नई दिल्लीः मानक पब्लिकेशन्स.

फगन, ब्रायन एम. 2004. *पीपुल आफ द अर्थः एन इंट्रोडक्शन टू वर्ल्ड प्रीहिस्ट्री.* 11th एडीशन. पियरसन प्रेंटिस हाल.

पी डी एफः

एनसिएन्ट हिस्ट्री एन्साइक्लोपीडिया

https://www.ancient.eu/Linear A Script/

https://www.britannica.com/tipic/Greek-language

14.13 शैक्षणिक वीडियो

एनसिएन्ट ग्रीक डेमोक्रेसी

https://www.youtube.com/watch?v=NR-tjUYfYSE

इकाई 15 यूनानी सांस्कृतिक परम्पराएँ*

इकाई की रूपरेखा

15.1 उद्देश्य

15.2 प्रस्तावना

15.3 भौतिक संस्कृति और जीवनशैली

15.4 यूनानी वैश्विक दृष्टि: धर्म, सार्वजनिक अनुष्ठान और देवता

15.5 किंवदंतियाँ, मिथक और कहानियाँ

15.6 साहित्य

15.7 विज्ञान

15.8 चिकित्सा

15.9 दर्शनशास्त्र

15.10 इतिहास और इतिहासलेखन

15.11 कला, वास्तुकला और मूर्तिकलाः सामूहिक से व्यक्तिगत तक

15.12 खेल और व्यायाम

15.13 लिंग (जेण्डर) और परिवार

15.14 सारांश

15.15 शब्दावली

15.16 बोध प्रश्नों के उत्तर

15.17 संदर्भ ग्रंथ

15.18 शैक्षणिक वीडियो

15.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- यह समझ सकेंगे कि सांस्कृतिक परम्पराओं से हमारा तात्पर्य केवल दृश्य कला और निष्पादन कलायें नहीं है, अपितु जीवनशैली और सोचने का तरीका भी है,
- जान सकेंगे कि यूनानी संस्कृति शून्यक में नहीं उभरी, इसने पहले की संस्कृति को समायोजित किया और अपने आसपास की संस्कृतियों को प्रभावित किया,
- यूनानी सांस्कृतिक परम्पराओं का यूनानी समाज और राज्यव्यवस्था की सक्रियता, जो सदियों में विकसित हुई, के संबंध को समझ सकेंगे,
- यूनानी समाज की, उस समय के संदर्भ में, उपलब्धियों की सराहना कर पाएंगे,

* डॉ. नलिनी तनेजा, स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

- आधुनिक यूरोप के विकास में यूनानी समाज और अन्य तत्वों की, जो यूनानी संस्कृति से संबंधित नहीं थे, योगदान की सराहना कर सकेंगे,
- यह जान सकेंगे कि यूनानी सभ्यता के अलावा अन्य प्राचीन सभ्यताओं ने भी मानव विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई,
- यूनानी समाज के वर्ग चरित्र और उसके निर्माण में अधिकार विहीन वर्ग के योगदान का मूल्यांकन कर सकेंगे, और
- यह विश्लेषित कर सकेंगे कि यूनानी समाज की गहन असमानताओं ने यूनानी सभ्यता में विलासिता, अभिव्यक्ति और स्मारकीय संरचनाओं की उन्नति को कैसे आकार प्रदान दिया और स्वीकृत किया।

15.2 प्रस्तावना

यूनानी सांस्कृतिक परम्पराओं की जानकारी के स्रोत दुर्लभ हैं, परन्तु विविध प्रकार के हैं: i) पुरातात्विक खुदाईयों से प्राप्त वास्तुकला-संबंधी अवशेष, मूर्तियां, मिट्टी के पात्र, कलाकृतियां और अन्य उपयोग की वस्तुएं, ii) किंवदंतियां तथा विवरण जो मौखिक रूप से प्रसारित होते रहे और बाद में लिखित रूप में भी मिले हैं – जिनमें समय के साथ तब्दीलियाँ आईं, और iii) संपन्न साहित्यिक और दार्शनिक योगदान, जिन्हें भी पहले मौखिक रूप से प्रसारित और बाद में लिखित रूप में हस्तांतरित किया गया। यूनानी ऐतिहासिक ग्रंथ यूनानी समाज द्वारा स्वयं के अतीत को लिखने और समझने का पहला सचेत प्रयास था। इसलिए, जब हम सांस्कृतिक परम्पराओं की बात करते हैं तब हम उनकी कलात्मक उपलब्धियों के अलावा पुरातात्विक उत्खननों से प्राप्त अन्य पहलुओं को भी ध्यान में रखते हैं।

इस इकाई में हम सांस्कृतिक उत्पादन और दार्शनिक अन्वेषण के माध्यम से यूनानी धर्म, लिंग और वर्ग असमानताओं के बारे में बात करेंगे। साथ ही हम यूनानी चिकित्सा और विज्ञान के बारे में भी बात करेंगे क्योंकि यह महत्वपूर्ण है कि आप कई विषयों के बारे में समझ विकसित करें। इस इकाई में हम कुछ विशिष्ट पहलुओं का गहराई से अध्ययन न करके संपूर्ण सांस्कृतिक विकास का सिंहावलोकन करेंगे। यह इकाई आपको अनेकानेक विषयवस्तुओं से अवगत कराएगी। **इकाई 14** में हमारा प्रयास यूनानी लोकतांत्रिक राज्य व्यवस्था के सामाजिक आधार का गहराई से अध्ययन करना था।

इसके अतिरिक्त यूनानी सांस्कृतिक परम्पराओं को केवल क्लासिकल युग की परम्पराएं या स्थिर और कालातीत नहीं समझना चाहिए। जब हम यूनानी जीवन और सामाजिक अभिव्यक्ति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करेंगे तब इन परम्पराओं में समय के साथ बदलाव और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के विकास की भी चर्चा करेंगे। यहां हमारा प्रयास बहुत से नामों या किताबों के शीर्षकों को जानने के बजाए प्रवृत्तियों को रेखांकित करना और उनके स्पष्टीकरण की ओर होगा।

15.3 भौतिक संस्कृति और जीवनशैली

विशेष रूप से हम प्राचीन यूनान की भौतिक संस्कृति, दैनिक जीवन और व्यवसायों के बारे में पुरातात्विक अवशेषों – जैसे सार्वजनिक इमारतें, उनमें मिलने वाली कलाकृतियां और मिट्टी के पात्रों – के माध्यम से जानते हैं। यह अवशेष हमें पिछली इकाई में वर्णित मिनोआई काल (2000-1400 बी सी ई) से लेकर क्लासिकल युग के ग्रीस, यूनानी साम्राज्य तक के परिवर्तनों की जानकारी देते हैं। यहां हम यूनान के बाहर सिकंदर के विजय अभियान पथ क्षेत्र में यूनानी संस्कृति के प्रतीकों के विस्तार पर चर्चा करेंगे। यूनानी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

का प्रभाव महाद्वीप के बाहर एशिया में विस्तारित हुआ, उदाहरण के लिए, भारतीय उपमहाद्वीप की गान्धार कला, जिसके बारे में आप जानते होंगे।

यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि बहुत सी भौतिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ प्रतिदिन के गैर-धार्मिक जीवन से संबंधित थीं, परन्तु बहुत सी भौतिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ धार्मिक अभिव्यक्ति के साथ भी जुडी हुई थीं। मंदिर और धार्मिक इमारतें कलात्मक अभिव्यक्ति के कार्यस्थल हैं। दृश्य और वास्तुकला तकनीकें, जो विचारों के धर्मनिरपेक्ष तौर-तरीकों से प्राप्त हुईं, दूसरी ओर धर्मनिरपेक्ष वस्तुएं अक्सर धार्मिक रूपांकनों का वहन करती हैं। कब्रें ऐसे स्थान हैं जहां यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता हैः अनुष्ठान में इस्तेमाल होने वाली साम्रगी और मृतकों की आत्मा के लिए देवताओं के तुष्टीकरण में अक्सर हर प्रतिदिन इस्तेमाल होने वाली वस्तुएं पूर्वजों को उपहार के रूप में भेंट की जाती हैंः ऐसा करते समय वह मृतकों और जो उनके लिए शोक कर रहे हैं उनका सामाजिक स्तर भी बताते हैं। कब्रों से जो अवशेष प्राप्त होते हैं वह अमीरों से ही जुड़े हो सकते हैं। किसी भी स्थिति में, गरीबों की कब्रें समय की कठिनाइयों का सामना नहीं कर पायी होंगी।

आरंभिक मिनोआई सभ्यता क्रीट द्वीप के शहरों में अच्छी तरह से जुड़ी सड़क व्यवस्था, नगरों में भली-भांति संगठित सड़क-योजनाएं, जल निकासी व्यवस्था, और अभिजात वर्ग और गरीब घरों के बीच स्पष्ट भेद दर्शाती हैं। विशाल महल परिसर, भंडारगृह, कार्यशालाएं और बैठक कक्ष एक केंद्रीय चौक के चारों तरफ बने होते थे। पाए गये **भित्तिचित्र (frescoes)** उत्तर कांस्य युग के दैनिक जीवन का चित्रण प्रस्तुत करते हैं (किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 37-38)। हालाँकि, इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि यह मुख्य रूप से अपने समय की अभिजात्य संस्कृति थी; साक्ष्यों के अभाव में यह नहीं बताया जा सकता कि गरीब अगर उनके पास कोई अतिरिक्त समय होता था तो वे उसे कैसे व्यतीत करते थे। यह स्पष्ट है कि उस समय अधिकतर उत्पादित धन इन विशाल महल परिसरों में व्यय किया जाता था।

चित्र 15.1 : मिनोआई शहरों की शहरी-संरचना
साभारः कोरवैक्स
स्रोतः https://en.wikipedia.org/wiki/File:Knossos_sewers_PA067399.JPG

ग्रीस में माइसीनियन सभ्यता (1600-1200 बी सी ई) की जानकारी तीस क्रबों के रूप में मिले साक्ष्यों से मिलती है, खासतौर पर छत्रक (bee-hive) आकार के मक़बरे जो 'वास्तुकला और चिनाई की शानदार उपलब्धियों का नमूना पेश करते हैं, ऐसी सुंदरता जो अब तक यूरोप में पहले नहीं देखी गयी थी। पैमाने और पत्थर के छत्रक वज़न वाले विशालकाय वॉल्ट (vault;

मेहराबदार गुम्बद वाले कक्ष) लगभग सोलह सौ सालों तक विश्व के सबसे बड़े वॉल्ट थे' (किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 39)। सोने के गहने, कांस्य की तलवारें, कुल्हाड़ियां, चाकू और बर्तन विशिष्ट वर्ग की संपत्ति और सैनिक चरित्र को दर्शाते हैं, जबकि चारों ओर बिखरे विशाल महल परिसर और कुछ पांच सौ गाँव इस सभ्यता के फैलाव और इसके समुद्री व्यापार को दर्शाते हैं।

चित्र 15.2 (a) : माइसीनियन कब्रें
साभार: आन्द्रियास त्रैप्ते
स्रोत: https://en.wikipedia.org/wiki/Grave_Circle_A,_Mycenae#/media/File:Grave-Circle-A-Mycenae.jpg

चित्र 15.2 (b) : माइसीनियन कब्र से प्राप्त वस्तुएं; प्राचीन अगोरा संग्रहालय, एथेंस
साभार: दोरीओ
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Offerings_from_a_Mycenaean_Pit_Grave_of_an_infantil_girl_(1400_BC.)._Ancient_Agora_Museum,_Athens.jpg

आर्काइक (Archaic) ग्रीस (800-500 बी सी ई) और क्लासिकल (Classical) ग्रीस (490-323 बी सी ई) में लोहे ने कांस्य का स्थान ले लिया। आभूषण, उपकरण और हथियार बेहतर तकनीकों को दर्शाते हैं: लोहे के साथ काम करना आसान था, और क्योंकि लोहा सस्ता था इसलिए वह ज़्यादा आसानी से प्राप्त किया जा सकता था।

सिकंदर के विजय अभियानों और उसके साम्राज्य के विस्तार के बाद हम एक अलग तरह की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को देखते हैं, जिसमें विजय प्राप्त किये गए क्षेत्रों के तत्व शामिल थे और वे भी जिन्होंने उन क्षेत्रों पर प्रभाव डाला। इस संश्लेषण ने बाद में आधुनिक यूरोप को प्रेरित किया।

चित्र 15.3 : आर्काइक और क्लासिकल ग्रीस कालीन लोहे के औज़ार
साभार: ब्राउवर्स, जोशो. 2015.
स्रोत: https://www.ancientworldmagazine.com/articles/swords-in-ancient-greece/

15.4 यूनानी वैश्विक दृष्टिः धर्म, सार्वजनिक अनुष्ठान और ईश्वर

हम यूनानी वैश्विक दृष्टि और विचारधारा की विधाओं पर चर्चा यूनानी धर्म के विवरण से शुरू कर रहे हैं क्योंकि किसी भी पूर्व-आधुनिक समाज की वैश्विक दृष्टि, नैतिकता और सही और गलत की भावना को समझने के लिए उनके धर्म को समझना महत्वपूर्ण है। धर्म सामाजिक परिवेश के संदर्भ में गठित होता है, परिणामस्वरूप धर्म सार्वजनिक जीवन और राज्यव्यवस्था का नैतिक मूल्य होता है, और ब्रह्मांड के निरूपण और उसमें मानव के स्थान का निर्धारण करता है। यह निश्चित रूप से, यहां तक कि प्राचीन काल के संदर्भ में भी, अपरिवर्तित नहीं था।

आरंभिक क्रीट समाज (2000-1550 बी सी ई) में पुरुष और महिला देवी-देवता थे, परन्तु वे विशेष रूप से देवियों की अधिक आराधना करते थे, जिनमें मातृ-देवी (मातृ-देवी या सर्प-देवी के रूप में उल्लिखित) मुख्य थीं। मातृ-देवी दुनिया में फैली अच्छाई और बुराई का निर्धारण करती थीं। बैल के सींग धार्मिक अनुष्ठानों के साथ जुड़े हुए थे, हालांकि नरबलि के कुछ चिह्न भी पाये गये हैं।

चित्र 15.4 : क्रीट की मातृ-देवी (सर्प-देवी)
साभार: सी मेसीअर
स्रोत: Wikimedia Commons

चित्र 15.5 : क्रीटः बैल के सींग
साभार: मार्क कार्टराइट
स्रोत: https://www.ancient.eu/crete

अंधकार युग से लेकर पुरातन युग और क्लासिकल ग्रीस में सार्वजनिक अनुष्ठान, धर्म और पूजा की पद्धतियाँ और पूजा के स्थल अधिक विस्तृत तथा जटिल होते गए, हालांकि छोटी संरचनायें सभी नगर-राज्यों के क्षेत्रों में फैली हुई थीं। बलि की भेंट वेदियों पर की जाती थी, इनमें से कुछ आम लोगों द्वारा भी की जाती थीं, जिनमें निर्धारित पुजारी का होना ज़रुरी नहीं था। 'अंधकार युग' से ही वेदियां विशिष्ट देवी-देवताओं को समर्पित की जाने लगीं और उन्हें अनुष्ठानों के स्थान के बजाय देवी-देवतों का देवालय माना जाता था। आरंभ में लकड़ी के मंदिर बनाये जाते थे और क्लासिकल ग्रीस में पत्थर के मंदिर आदर्श बन गये, जिन्होंने समकोण कमरे की आकृति धारण की, जो एक छत के साथ काफी हद तक स्तंभों से घिरे हुए अनावृत क्षेत्र थे। इन मंदिरों को सामुदायिक स्थानों के तौर पर देखा जाता था और भारत की तरह देवताओं की इच्छाओं को पूरा करने में या धन्यवाद करने के लिए प्रसाद समर्पित किया जाता था। देवी-देवता मानवीय गुण सम्पन्न थे और उनसे जुड़ी गाथायें करीब-करीब मानव कहानियों के सदृश्य ही थीं, जो जीवन के उतार-चढ़ाव और युग-संघर्ष को दर्शाती थीं।

चित्र 15.6 : प्राचीन यूनानी वेदिकाएं
साभार: ज़ेड
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki File:Ancient_Greek_Altar_Hermes_Delos_130033.jpg

विशिष्ट देवी-देवताओं को समर्पित मंदिरों का स्वयं के लिए साल में उत्सव का एक निर्धारित समय था और उन पर केंद्रित अन्य सामुदायिक समारोह, पर्व, खेल-कूद की प्रतियोगितायें और दावतें होती थीं। इन मंदिरों की पहचान उन विशेष शहरों के साथ की जाती थी जहां उन्हें बनाया गया था। इनमें से दो महत्वपूर्ण मंदिर – डेल्फी का मंदिर और ओलंपिया का मंदिर – थे जो क्रमशः अपोलो (सूरज, प्रकाश, संगीत और उपचार के देवता) और ज़ीअस (आकाश और बिजली के देवता) को समर्पित थे। अपोलो को भविष्यवाणी के साथ संबंधित किया जाता था और यूनानी अक्सर उनके मंदिर में लड़ाई या संघर्ष के परिणाम से संबंधित 'ऑरेकल' भविष्यवाणी सुनने जाया करते थे। अपोलो को संगीत, चिकित्सा और न्याय का देवता भी माना जाता था। डायोनाइसस भावनाओं और मदिरा के देवता थे जिन्हें आरंभ में लोक-देवता माना जाता था जिसे बाद में उन्हें उच्च धर्म के देवता की श्रेणी में अपनाया गया। पोसाइडन को समुद्र, भूकंप और जल का देवता माना जाता था।

चित्र 15.7 : प्राचीन ग्रीस में ओलंपिया का मंदिर
साभारः अवा बाबिली
स्रोतः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Temple_of_Olympian_Zeus_Athens_Greece_9.jpg

हालांकि देवताओं को एक बेहतर जीवन के लिए तुष्ट और प्रसन्न किया जाता था लेकिन उनसे जुड़ी कहानियां उन्हें पूजने वाले मनुष्यों की कमज़ोरियों सहित उस समय के सामाजिक मूल्यों को प्रतिबिम्बित करती थीं। उनसे जुड़े मिथक, दास प्रथा, प्रचलित राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था को मंजूरी और समर्थन प्रदान करती थीं। उदाहरण के लिए, पैन्डोरा की कहानी। अपने प्राचीनतम संस्करण में पैंडोरा बुराई का प्रतिनिधित्व करती थी, परन्तु बाद में जिज्ञासा, न कि बुराई, के रूप में चित्रित की गयी। उसी प्रकार आर्चिलोकस, एक यूनानी कवि, एक कविता में होमरिक उपाख्यान की व्याख्या और पुनःकथन में बहुत स्वतंत्रता लेते हुए यह सवाल उठाते हैं कि लड़ाई से हारा हुआ और जीवित वापस लौटने को कायरता कहना उचित था, बजाय परिस्थितियों की मांग अनुसार मरना (किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 52)।

पैन्डोरा (सबसे प्रतिभाशाली/सबसे संपन्न) यूनानी पौराणिक कथाओं के अनुसार धरती पर अवतारित प्रथम महिला थीं। वह हेफाएस्टस (अग्नि के देवता और कारीगरों के संरक्षक) के द्वारा, ज़ीअस के निर्देश पर, (देवताओं के देवता) बनाई गईं ताकि दो भाइयों – एपिमेथियस और प्रोमेथियस – को सज़ा मिल सके जिन्होंने ज़ीअस की अनुमति के बिना लोगों को आग देकर ज़ीअस को खिन्न किया था। इस मिथक के कई संस्करण हैं। मिथक के एक और संस्करण में प्रोमेथियस (अग्नि के देवता और दैवीय जादूगर) ने स्वर्ग से अग्नि को चुराकर मनुष्यों को उपहार में दिया था। हेसॉइड की *थिओगनी* के अनुसार समस्त देवी-देवताओं ने पैन्डोरा को अद्वितीय भेंटें प्रदान की थीं (अधिक जानकारी के लिए शैक्षणिक वीडियो देखें)।

15.5 किंवदंतियाँ, मिथक और कहानियाँ

किंवदंतियाँ, मिथक और कहानियाँ आधुनिक युग तक पूर्ण रूप से समाज के साथ रहती हैं। यूनान के अपने मिथक और किंवदंतियाँ ऐसी शक्तिशाली कहानियाँ थीं जो यूनानी जीवन, नैतिकता और प्रतिदिन के सामाजिक मानदंडों को शासित करती थीं। हमारे अपने महाकाव्यों की तरह वह शुरू में मौखिक थीं। समय और स्थान में कई पुनःकथनों के अधीन, वे किसी समय में लेखन-शैली में प्रतिबद्ध हुईं और इन पुनःकथनों के माध्यम से लिखित होने के बाद भी इनमें परिवर्तन होते रहे। ऐसा इसलिए था क्योंकि हर पीढ़ी उन्हें अपने ज्ञान, तर्क और

सामाजिक पूर्वामिरूचियों के प्रकाश में देखती है। अतः मिथक कहानियाँ थीं जिनमें ऐतिहासिक तथ्य शामिल नहीं थे, फिर भी वह हमें उस समय से संबंधित चिंतन, सामाजिक मूल्यों, मानसिकताओं और विचारों की जानकारी प्रदान करते हैं। यह समग्र कहानी-संग्रह प्राचीन साहित्य का निर्माण करता है। होमर की कविताएं और उपाख्यान सुविख्यात हैं, परन्तु हम डेल्फी या अपोलो या अन्य देवताओं के ऑरेकल से जुड़ी कहानियों का उल्लेख भी कर सकते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि विभिन्न नगर-राज्यों को एक साथ संगठित रखने में और एक आम सभ्यतागत लोकाचार स्थापित करने में इन काल्पनिक कथाओं और किंवदंतियों का योगदान था जिन्हें यूनानी सभ्यता के समस्त क्षेत्रों में अत्यंत पसंद किया जाता था। जैसा विद्वानों द्वारा बताया गया है कि इन काल्पनिक कथाओं और किंवदंतियों का अर्थ 'सिर्फ चीज़ों के काल्पनिक स्पष्टीकरण की तुलना से कहीं अधिक था। वह सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक परंपराओं के प्रभुत्व का समर्थन करती थीं'। और 'पुरातन युगीन यूनानियों ने लगातार प्राचीन मिथकों पर फिर से काम किया, उनका पुनःकथन, विषयवस्तु का समायोजन, और इस प्रकार उसकी अर्थपूर्ण व्याख्या की'...और 'इस संशोधन और पुनःकथन की प्रकिया में मिथक विश्व में तर्क के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरे' (किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 52)। पूर्व-भाग में हमने पैन्डोरा के बदलते चित्रण पर चर्चा की। प्रोमेथियस और अपोलो की कहानियों में भी समय के साथ परिवर्तन आया। देवताओं और मानव के बीच के संबंध को चित्रित करने में उपासना को स्वतंत्रता के साथ संयुक्त किया गया। भारतीय महाकालों की भांति मानव जीवन के घटनाचक्र को दर्शाते हुए देवताओं को मानव आकृति में प्रस्तुत किया गया। देवताओं से जुड़ी लगभग सारी कहानियों में उन्हीं घटनाओं का उल्लेख था जो मनुष्य के जीवन में भी हो सकती थीं। देवताओं को हमेशा दैवत्व पालन करते हुए ही नहीं बल्कि बुराई और प्रतिशोध का अनुगमन करते हुए भी दर्शाया गया है। प्रोमेथियस के विश्वासघात के लिए ज़ीअस उन्हें पैन्डोरा, प्रथम महिला, जिसे कहानी के सर्वाधिक प्राथमिक संस्करण में बुराई का प्रतीक दर्शाया गया है, को उपहार में देकर उनसे प्रतिशोध लेते हैं। इसको उपहार के रूप में स्वीकार कर मनुष्य ने खुद पर बुराई ली।

यूनानी मिथक मात्र देवताओं से ही जुड़े नहीं थे, बल्कि यह कहानियाँ शहरों और उनके आरम्भ; नदियों, पहाड़ों और धार्मिक स्थलों; त्योहारों और मौसमों; और स्पष्टतः विश्व के आरम्भ से भी जुड़ी थीं। उदाहरण के लिए, मनुष्य की स्थिति से जुड़ी कहानी यह हैः कि वह राक्षसों और देवताओं के बीच खड़े हैं क्योंकि प्रोमेथियस ने ज़ीअस के साथ विश्वासघात कर मनुष्य को अग्नि सौंपी। विभिन्न मौसम इसलिए अस्तित्व में हैं क्योंकि पर्सीफोन, ज़ीअस की बेटी, का हेडेस, मृतकों के देवता, ने अपहरण कर लिया था और इसलिए पर्सीफोन को हर साल के चार महीने हेडेस के अंधेरे राज्य में व्यतीत करने पड़ते थे, इत्यादि (इन कहानियों और मिथकों के संदर्भ के लिए किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 52 देखें)।

बोध प्रश्न-1

1) क्या आप इस बात से सहमत हैं कि विभिन्न कालों में यूनानी सांस्कृतिक परम्पराओं में समय के साथ बदलाव आया और ऐसा कई प्रभावों के कारण हुआ ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) यूनानी धर्म के मुख्य पहलुओं पर चर्चा कीजिए। यूनानियों द्वारा पूजे जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण देवताओं का भी उल्लेख कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

3) यूनानी समाज में मिथक और किंवदंतियों का क्या महत्व था ?

.....

.....

.....

.....

.....

15.6 साहित्य

यूनानी साहित्य ने दो मुख्य रूप अपनाएः काव्य और नाट्य, जो शुरुआत में मौखिक थे और बाद में लिखित रूप में प्रचलित हुए। काव्य और नाट्य में समय के साथ, यूनानी सभ्यता के शुरुआती चरणों से पांचवीं और छठी शताब्दी के क्लासिकल ग्रीस काल तक, परिवर्तन आए। कला और साहित्य के सामाजिक इतिहासकार ऑर्नल्ड हॉसर ने विस्तार से इन घटनाओं का वर्णन किया है – सामूहिक मंत्र उच्चारण और आमंत्रण से व्यक्ति विशेष लेखक का और निर्माता के रूप में महत्वपूर्ण बनने तक का सफर। वह इस बात पर भी बल देते हैं कि व्यक्तिगत सृजन का उद्देश्य समुदाय की आवश्यकता थी, विशेषकर युद्व और शहर के गौरव-गान के समय और मनोरंजन या सार्वभौमिक मूल्यों की शिक्षाप्रद अभिव्यक्ति के लिए।

प्राथमिक मंत्र, जैसा कि सभी आरंभिक समाजों में था, जादू, प्राकृतिक देवताओं के आह्वान से जुड़े सामूहिक अनुष्ठान से संबंधित लोकप्रिय गीत, युद्व और काम संबंधी गीतों, ऑरेकल भविष्यवाणियों और प्रार्थनाओं के साथ जुड़े थे। लेकिन वीर युग की शुरुआत के साथ काव्य के सामाजिक प्रकार्य और कवि की सामाजिक स्थिति पूरी तरह से बदल गयी। व्यक्तियों के भाग्य के संबंध में विशिष्ट गीत थे, जबकि इनके लेखन का श्रेय अक्सर एक व्यक्ति को दिया जाता था, जो समय के साथ वास्तव में व्यक्तिगत बन गए जबकि इनका प्रदर्शन अभी भी सामूहिक था। *इलियाड* और *ओडिसी* जैसे महाकाव्यों में विभिन्न कलाकार विभिन्न पात्रों की भूमिका निभाते हैं। इन काव्यों का वातावरण कुलीनतंत्रीय और दरबार के साथ जुड़ा हुआ था। काव्य के मुख्य रूप महाकाव्य, तद्नुपरान्त संबोधगीत (odes) और जय गान (paeans) थे। वह धार्मिक मामलों से अधिक सांसारिक मामलों से संबंधित थे। क्लासिकल युग से वह समुदाय और नगर-राज्यों द्वारा अधिकृत होने लगे। लोक साहित्यिक अभिव्यक्ति और शिक्षित वर्ग अथवा विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के काव्यों के बीच भिन्नता थी। कवि को 'बुद्धिजीवियों' के रूप में उच्च दर्जा प्राप्त था (हॉसर, 2003: 50)।

सबसे प्रख्यात कविताओं में होमर के दो महाकाव्य, *इलियाड* और *ओडिसी*, थे। यह निश्चित नहीं है कि होमर ही इनके एकमात्र लेखक थे या समय के साथ इनमें कुछ भागों को जोड़ा गया हो। कुछ समय तक यह मौखिक थे और भाटों और कलाकारों, जो उसका मंत्रोच्चारण

करते थे, द्वारा उनमें बदलाव किया जाता रहा, जब तक 750 बी सी ई में वह लिखित रूप में प्रचलित नहीं हुए। वे होमर के जीवनकाल, 'अंधकार युग' (1200-700 बी सी ई) जिसमें वह जीवित था, और बीते हुए समय को दर्शाते हैं। वह भूमध्यसागरीय क्षेत्र के आसपास के शहरों की महानता को स्मरण करते हैं, जैसे कांस्य युग में एथेंस और कोरिन्थ। हालांकि इसमें वर्णित जीवन और समाज का विवरण 'अंधकार युग' के साथ जुड़ा है। उनके नायक उसी युग के हैं।

इलियाड **ट्रॉय के युद्ध**, अधिक विशेष रूप से ट्रॉय की दस साल की घेराबंदी और यूनानी रानी हेलेन को बंधकों से बचाने के लिए की गई लड़ाई, की पृष्ठभूमि पर आधारित है। *ओडिसी* की कहानी ट्रॉय के पतन से शुरू होती है और अपने नायक, ओडीसियस, के जीवन में आये परिवर्तनों को दर्शाती है।

दोनों महाकाव्य, *इलियाड* और *ओडिसी,* न सिर्फ अपने समय के संदर्भ में बतायी गयी कहानियों की घटनाओं के बारे में बताते हैं और नैतिक मूल्यों और विभिन्न नायकों को वर्णित करते हैं, अपितु इन महाकाव्यों के लेखक मानव जीवन के कुछ सार्वभौमिक तत्वों को भी दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए, मनुष्य प्रेम और पीड़ा की परिस्थितियों में क्या करते हैं, वह कैसे विपरीत परिस्थितियों में धीरज से काम लेते हैं, मृत्यु का सामना करने पर वह क्या करते हैं। संक्षेप में यह महाकाव्य 'मानव त्रासदी के मूलभूत' तत्वों से युक्त हैं। ये महाकाव्य समाजशास्त्रीय आंकड़े और वैश्विक मूल्यों के मिश्रण से युक्त हैं, जो यूनानी सांस्कृतिक परम्पराओं की विशिष्टता है। होमरिक उपाख्यान यूनानी मिथकों का हिस्सा बन गये जिन्होंने पूरी यूनानी दुनिया को एक साथ जोड़े रखा, और जिनका मंचन यूनानी क्लासिकल युग और हैलेनिक युग में किया जाता था। हेसिओड का काव्य किसानों और आम जीवन के साथ अधिक आत्मीयता दर्शाता है। साप्फो (लेस्बोस द्वीप से संबंद्ध, 630-570 बी सी ई), अपने संगीतमय काव्य के लिए जानी जाती थीं, जो वीणा के साथ गाये जाने के लिए लिखे जाते थे। पिंडार (थेब्स के एक प्रगीतकार, 518-438 बी सी ई) के चार अलग-अलग शहरों में आयोजित यूनानी त्योहारों पर कथित संबोधनगीत चार पुस्तकों में एकत्र थे। उदाहरण के लिए, 'ओलंपियन ओड 1' एक विजय-काव्य हो सकता है, जिसे संभवतः विजेता के परिवार के किसी सदस्य द्वारा अधिकृत किया गया हो और विजेता की घर वापसी के अवसर पर गाया और नृत्यांकन किया जाता हो। पुरातन युग (Archaic period) में सामूहिक से महाकाव्य और व्यक्तिगत रूप में परिवर्तन हुआ। इस प्रकार क्लासिकल ग्रीस में हमें एक उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता है जब 'दोनों विषय-वस्तु और घटनाक्रम, जो तत्कालीन समुदाय के लिए उच्च नैतिक चिंताएं थीं, समस्त समुदाय के बन गये न की किसी व्यक्ति विशेष के', (फिनले, 1977: 97)। होमरिक कविताएं और ऊपर उल्लेखित अन्य कृतियां इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

काव्य और शुरुआती सामूहिक प्रदर्शनों के तत्वों ने यूनानी समाज में नाट्य-कला को जन्म दिया। यह नाटक सार्वजनिक त्योहारों पर, शहर के सामुदायिक केंद्रों में, खुले रंगमंच पर करीब 1,000 कलाकारों की भागीदारी और 12,000 या उससे अधिक दर्शकों के बीच प्रस्तुत किये जाते थे। प्रतियोगिताएं, न्यायपीठ की व्यवस्था (jury) और पुरस्कारों का आयोजन भी होता था जहां व्यक्तिगत नाटककार और विशिष्ट प्रदर्शन टीमें प्रसिद्व बन सकती थीं। महाकाव्य, काव्य, गद्य और गीतात्मक अन्तराल इन नाटकों में संयुक्त थे। इनमें अक्सर विशिष्ट प्रसिद्व ऐतिहासिक परिस्थिति का उल्लेख होता था जो ऐतिहासिक स्मृति का हिस्सा थी।

त्रासदी (tragedy) और हर्षप्रधान नाटक दो मुख्य तरह के चित्रण थे। त्रासदियां मनुष्य के शाश्वत नैतिक प्रश्नों, उनके भाग्य और दुविधाएं, अच्छा और बुरा, से संबंधित थीं। वह कैसे

विपरीत परिस्थितियों का सामना करते थे, और वह अपने व्यक्तित्व और नैतिकता के आधार पर इन सवालों का समाधान कैसे करते थे। हर्षप्रधान नाटक वर्तमान सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य, अक्सर समकालीन स्थितियों के साथ संबंधित थे जो व्यंग्य से भरे थे और महत्वपूर्ण लोगों का मज़ाक उड़ाते थे। हर्षप्रधान नाटक आलोचनात्मक थे, अक्सर तीक्ष्ण, जिनमें हास्य और एक विशेष प्रकार का आनंद संयुक्त था, जो त्रासदियों से भिन्न था। त्रासदियां शिक्षाप्रद होने के लिए बनी थीं जिनका मक़सद विचारप्रेरक और गहन चिंतन पैदा करना था।

पांचवीं शताब्दी के तीन मुख्य नाटककार एशिलस, सोफोक्लीज और यूरीपाइडिस थे जिन्होंने करीब तीन सौ नाटक लिखे जिनमें से कुल तैंतीस प्राप्त होते हैं (फिनले, 1977: 104)। हालांकि एथेंस प्रमुख केंद्र था, परन्तु इन नाटकों को हर जगह संरक्षण प्रदान किया गया और इन लेखकों के नाटकों का प्रदर्शन तीसरी शताब्दी तक जारी रहा। ऐरिस्टोफेन्स हर्षप्रधान नाटककारों में सबसे प्रख्यात थे। विद्वानों ने लोकतांत्रिक राजनीति और यूनानी नाट्यशाला में अन्वेषित विषयों के बीच एक कड़ी को दर्शाया है। सोफोक्लीज का *ओडिपस द किंग* आज शायद यूनानी नाटकों में सबसे प्रख्यात नाटक है।

15.7 विज्ञान

मिथकों पर फिर से कार्य और साहित्यिक महाकाव्यों के पुनःकथन ने समय के साथ, छठी शताब्दी तक, खोजबीन को अग्रसर किया। यह खोजबीन गैर-धार्मिक संदर्भ में ब्रह्मांड की उत्पत्ति और प्रकृति की जांच, ज्ञान के क्षेत्र में, विचारों के आदान-प्रदान और प्रवास और व्यापार के परिणामस्वरूप अन्य समाजों के साथ संपर्क के माध्यम से प्रोत्साहित हुई। पहला प्रयास पूर्वी यूनानी बस्ती, माइलीटस, में छठी शताब्दी बी सी ई के आसपास उल्लेखित है। अवलोकन और तर्कसंगत विचार विश्लेषण के उपकरण बने जिन्होंने चौंकाने वाली नई परिकल्पनाओं को जन्म दिया। जो पूरी तरह से वैज्ञानिक नहीं थीं लेकिन फिर भी वह धर्म और मिथकों के दायरे से परे थीं। ब्रह्मांड और उसके चारों ओर की दुनिया के लिए उनके द्वारा प्रतिपादित प्राकृतिक व्याख्या की वजह से वे विज्ञान शास्त्रियों या प्राकृतिक दार्शनिकों के रूप में जाने जाने लगे।

उदाहरण के लिए, थेल्स ने निष्कर्ष निकाला की जल ब्रह्मांड के निर्माण का मौलिक तत्व है। एनेग्ज़ीमेण्डर के मतानुसार जल पदार्थ है। हेराक्लीटस द्वारा स्पष्ट किया गया कि परिवर्तन अत्यावश्यक लक्षण था क्योंकि न तो जल और ना ही पदार्थ अपरिवर्तित रह सकते थे। उसके बाद उन्होंने परिवर्तन और स्थिरता के बीच संबंधों का अनुमान लगाया और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि ब्रह्मांड के कार्य में कुछ व्यवस्था और तर्क होना चाहिए, भले ही वे हमें अभी तक पता नहीं चल पाया है। डेमोक्रिटस (470-400 बी सी ई) ने अपने निष्कर्ष को परीक्षण पर आधारित नहीं किया और प्राकृतिक दार्शनिकों से प्रेरणा लेकर यह तर्क दिया कि ब्रह्मांड का कोई मूल तत्व है जिसको विभाजित नहीं किया जा सकता और जो जीवन सहित विश्व का मूलभूत है। यह मूल तत्व अपने परिवर्तन और विभिन्न क्रम-परिवर्तन और संयोजनों में भी हमारे आसपास की विविधता की व्याख्या करता है: इस मूल तत्व को उन्होंने परमाणु कहा।

चार बातें यहाँ महत्वपूर्ण हैं: i) दुनिया के संदर्भ में जवाबों की खोज वास्तविक मौजूदा दुनिया के ढांचे के भीतर की जा रही थी; ii) पूछे जाने वाले प्रश्न सही थे, भले ही उनके जवाब हमेशा सही न रहें हों; iii) यह स्वीकृत था कि किसी भी समय में ज्ञान की सीमा तय नहीं थी और अध्ययन की जा रही घटना का पूरा ज्ञान उस विशेष समय में प्राप्त नहीं था, नए साक्ष्य के आधार पर हमेशा अधिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता था; और iv) पाये गये जवाब विशिष्ट खानों या भागों में विभाजित नहीं थे, एक घटना के बारे में ज्ञान अन्य घटनाओं के अग्रिम ज्ञान का आधार बन सकता था। इस समय तक, अर्थात छठी शताब्दी बी सी ई के बाद से, धार्मिक

और पौराणिक व्याख्याओं को चुनौती देना संभव हो गया था। संभवतः ऐसा सभी वर्गों के लोगों के बीच प्रचलित नहीं था, हालांकि शिक्षित वर्गों के बीच यह स्वीकार्य किया गया कि नए विचारों को समाज में जगह मिलनी चाहिए।

जिज्ञासा और प्राकृतिक दुनिया के अवलोकन की भावना ने 'खगोल विज्ञान, रेखागणित और चिकित्सा के क्षेत्रों में विशाल प्रगति' को अग्रसर किया, फिर चाहे पृथ्वी केंद्रित ब्रह्मांड के बारे में अनुमान, हूमोरल के रोग का सिद्वांत और अरस्तु का गिरती हुई वस्तुओं का सिद्वांत अंत में गलत साबित हुए।

हूमोरल के रोग का सिद्वांत

हूमोरल के रोग का सिद्वांत, जिसे चार परिहास के सिद्वांत के रूप में भी जाना जाता है, मानव शरीर के कामकाज का एक मॉडल था। वह हिप्पोक्रेट्स (460-370 बी सी ई) और गैलन (129-216 बी सी ई) के उपदेशों के लिए केंद्र बिंदु था। चार मनोवृत्तियों या व्यक्तिगत मनोवैज्ञानिक स्वभाव में असंतुलन – विषादपूर्ण, रक्तपात पूर्ण, प्रकृति या क्रोधी और श्लेष्म – के परिणामस्वरूप रोग हो सकते थे। यथा, इस सिद्वांत के अनुसार रोगों का इलाज संतुलन बहाल करने में निहित था।

अरस्तु का सिद्वांत

यूनानी दार्शनिक अरस्तु (384-322 बी सी ई) के गिरती हुई वस्तुओं के सिद्वांत के अनुसार, हल्की वस्तुओं की अपेक्षा भारी वस्तुएं तेज़ी से गिरती हैं। उसका मानना था कि एक गिरती हुई वस्तु की एक निश्चित 'प्राकृतिक गिरने की गति' होती है जो उस वस्तु के भार के समानुपाती होती है।

पाइथागोरस (570-495 बी सी ई), प्रारंभिक यूनानी आयोनियन गणितज्ञ, को एक महत्वपूर्ण गुणोत्तर थ्योरम खोजने का साभार प्राप्त है, जो उनके नाम से जानी जाती है – पाइथागोरस प्रमेय (थ्योरम)। इस थ्योरम के हिसाब से एक समकोण त्रिभुज की दो भुजाओं की लम्बाइयों के वर्गों का योग कर्ण की लम्बाई के वर्ग के बराबर होता है। हालांकि इस थ्योरम की जानकारी में अन्य गणितज्ञों, विशेषकर मिस्र और मेसोपोटामिया के गणितज्ञों का योगदान था, पर पाइथागोरस का गणित के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। सामान्य तौर पर भी, उनके प्रभाव से विज्ञान के क्षेत्र में, और यहां तक कि मूर्तिकला और वास्तुकला के क्षेत्रों में भी, विकास हुआ। विज्ञान के क्षेत्र में मिथकों और धर्म में वर्णित आस्थाओं पर उन्होंने प्रश्न चिन्ह लगाया और मूर्तिकला और वास्तुकला के क्षेत्र में भावना और आकार और अनुपात की सापेक्षता के माध्यम से अपनी भूमिका निभाई। यूनानियों ने शून्य की धारणा में भी अपना योगदान दिया। आर्किमिडीज़ (287-212 बी सी ई) अपनी एक भौतिक विज्ञान के नियम की खोज के लिए जाने जाते हैं जो कि उनके नाम से – आर्किमिडीज़ सिद्वांत के रूप में – प्रख्यात है। यूक्लिड (323-283 बी सी ई) एक और जाना माना नाम है जिनका संकलन कई शताब्दियों तक रेखागणित के अध्ययन का आधार बना।

एलेक्जेंड्रा में एक अद्भुत पुस्तकालय था जिसमें किताबों और हस्तलेखों के विशाल संग्रह मौजूद थे। वह उस समय ज्ञान का भंडार था जहां भूमध्य क्षेत्र से ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में रुचि रखने वाले विद्वान ज्ञान प्राप्ति के लिए आया करते थे।

प्राचीन यूनानी अतीत के अपने लेखकों के संरक्षण में तत्पर थे। पहली शताब्दी बी सी ई में एलेक्जेंड्रा में स्थित महान् पुस्तकालय ने लगभग 500,000 पुस्तकों को लोगों तक पहुंचाया। इस पुस्तकालय को एक अन्य बड़ी अनुसंधान संस्था, माओसेयान, का हिस्सा माना जाता है जो म्यूसिस – कला की नौ देवियों – को समर्पित था। यह पुस्तकालय या उसके संग्रह का एक भाग गलती से जूलियस सीज़र द्वारा 48 बी सी ई में गृह युद्व के दौरान जला दिया गया था और ऐसा माना जाता है कि उसके बाद उसे फिर से बनाया गया था। रोमन काल के दौरान इसका पतन हो गया।

15.8 चिकित्सा

चिकित्सा और शारीरिक ज्ञान की तुलना अगर हम आधुनिक मानकों के साथ न करें तो, अपने समय में प्रचलित मानकों के साथ तुलना करने पर हम पाते हैं कि यूनानी चिकित्सा कहीं आगे थी। यूनानियों ने तीसरी शताब्दी बी सी ई में एक समय के लिए मृत जानवरों के शरीरों के साथ प्रयोग किया, जिससे उन्हें मानव शरीर के आंतरिक अंगों, मांसपेशियों और हड्डियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई।

असल में, यह अधिकांशतः ज्ञात नहीं है कि शुरू में अरस्तु (384-322 बी सी ई) जंतु-विज्ञान के शोध में गहराई से लीन थे। उनके शुरुआती लेखन में से कुछ जो बचे हैं वह समुद्री जीवन सहित करीब 540 जंतु-विज्ञानिक जातियों के बारे में चर्चा करते हैं। अरस्तु के मुर्गी के भ्रूण और अंडों, समुद्री जानवरों की पाचन प्रणाली, मधुमक्खियों की आंखों की संरचना, इत्यादि से प्रयोग और अनुसंधान ने 'जीव-विज्ञान के अध्ययन को ठोस अनुभवजन्य नींव' प्रदान की। हेरोफाइलस (330-260 बी सी ई) ने मस्तिष्क, तंत्रिका तंत्र, मानव नेत्र, अग्नाशय (पेनक्रियाज) और डिम्बवाही नली (फैलोपियन ट्यूब) के विषय में जाँच की, और धमनियों और उनकी हृदय तक खून ले जाने वाली वाहिकाओं के रूप में भूमिका को खोजने का साभार भी उन्हें ही जाता है। इरेसिस्ट्रेटस (330-255 बी सी ई) ने वाल्व और हृदय के कार्य में उनकी भूमिका का वर्णन किया। इसमें से अधिकतर जानकारी समय की कसौटी पर खरी उतरी और तब तक मान्य रही जब तक अरब वैज्ञानिकों और दार्शनिकों ने वैज्ञानिक ज्ञान के क्षेत्र की प्रगति में अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया (नन्दा, 2016: 115-117)।

इन खोजों ने चिकित्सा के क्षेत्र में प्रगति में मदद कीः विभिन्न रोगों और उनके इलाज के कारणों के बारे में टिप्पणियां और उनके विश्लेषण ने सहायता की। चिकित्सा और हीलिंग के कौशल आंशिक रूप से जादू-टोने से मुक्त किए गए। हिप्पोक्रेट्स सबसे प्रख्यात नाम है जिन्हें विभिन्न रोगों के लक्षणों के आधार पर रोगों के प्राकृतिक कारणों की खोज का श्रेय जाता है। चीन, भारत, रोम और साथ ही प्रमुख रूप से ग्रीस के प्राचीन विद्वानों का यह मानना था कि मानव शरीर पृथ्वी के समान तत्वों – हवा, पानी, मृदा और अग्नि – से मिलकर बना है। इन तत्वों में असंतुलन के कारण ही रोग उत्पन्न होते हैं।

हिप्पोक्रेट्स पीले पित्त, काले पित्त, कफ और खून – को चार बलगमों (humours) के नाम से संबोधित करता था और उसका यह दावा था कि स्वास्थ्य इन चार बलगमों के बीच संतुलन है। हिप्पोक्रेट्स ने काफी गैर-यूनानी स्रोतों की पढ़ाई की और अनेक ग्रंथ लिखे जिन्हें बाद में संकलित किया गया। हालांकि यह स्पष्ट नहीं है कि इन ग्रंथों में दूसरों के विचार और कार्य शामिल थे या नहीं। हालांकि इन विचारों को आधुनिक चिकित्सा के क्षेत्र में एक छोटा सा स्थान प्राप्त है परन्तु महत्वपूर्ण बात यह बदलाव था कि रोगों के प्राकृतिक कारणों और दवा से उनके इलाज की तलाश की जा रही थी न कि जादू-टोने और धार्मिक विश्वास से। हालांकि दोनों विचारधारायें सदियों तक साथ-साथ जारी रहीं और लोग आज भी दोनों में विश्वास रखते हैं।

15.9 दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्र या तत्वज्ञान के क्षेत्र में प्रगति और मानव अस्तित्व के साथ व्यस्तता ब्रह्मांड के अध्ययन की उपशाखा थी। इस लंबे युग के दौरान कई विचारक उभरे जिनमें सबसे प्रख्यात 400 बी सी ई के आसपास सुकरात से शुरू होकर, प्लेटो और फिर अरस्तु थे। मानव अस्तित्व और ब्रह्मांड के बारे में सोच में बदलाव सुकरात से शुरू हुई, जो प्लेटो के शिक्षक थे। ऐसा कहा जाता है कि सुकरात द्वारा स्थापित तर्क और वितर्क के स्तर ने यूनानी दर्शनशास्त्र में इतना बदलाव किया कि सुकरात से पहले के यूनानी दर्शन को पूर्व-सुकरात युग के रूप में

संबोधित किया जाने लगा। बेशक सुकरात की शुरुआत किसी शून्य में नहीं हुई थी। वह समस्त क्षेत्र में विस्तारित विचारों के प्रवाह, जिसके साथ यूनानी दुनिया संपर्क में आई, को ही आगे बढ़ा रहे थे।

प्लेटो (427-347 बी सी ई) के विचार जिसे दर्शनशास्त्र की आदर्शवादी धारा की प्ररेणा माना जाता है, जो विचारों तथा विश्वासों को महत्व देते थे और मानते थे कि भौतिक चीजों का अस्तित्व हमारी उन चीजों के प्रति धारणाओं में निहित होता है। उदाहरण के लिए, अगर हम किसी पदार्थ को पेड़ के निश्चित रूप में अवधारित कर लेते हैं तो हम उस पदार्थ को पेड़ का अस्तित्व प्रदान कर देते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो वास्तविकता को केवल अवलोकन और विचार से ही समझा जा सकता है। जैसा कि एक लेखक ने कहा है, 'जिस तरह से प्लेटो ने बुद्वि और पदार्थ के बीच रिश्ते पर प्रश्न उठाया, यह उनका दर्शनशास्त्र में स्थायी योगदान था' (फारुकी, 2001: 189)। प्लेटो, एथेंस में अपने द्वारा स्थापित, विद्यापीठ में शिक्षक थे। प्लेटो शिक्षा के महान् अभिवक्ता थे जिन्होंने समाज में 'सही ढंग से' शिक्षित लोगों की प्राथमिक भूमिका की व्याख्या की।

अरस्तु, प्लेटो के शिष्य थे, वे बुद्वि और पदार्थ के बीच रिश्ते को पूरी तरह से विपरीत ढंग से समझते थे। इस अवधारणा को दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में भौतिकवादी दृष्टिकोण या परिप्रेक्ष्य के नाम से जाना जाता है। जैसा कि हमने पहले भी कहा था कि अरस्तु का शुरुआती काम विज्ञान के क्षेत्र में था और प्रयोग और वर्गीकरण से संबंधित था। उनका मानना था कि पदार्थ हमारी अवधारणा से परे है और हम उसे केवल अपने अनुभव से समझ सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाये तो, हमारे विचार और भौतिक विश्व की समझ पहले से अस्तित्व में मौजूद चीजों के अध्ययन से विकसित हुई।

इन सभी विचारकों और दार्शनिकों में आम बात यह थी कि वे अपने समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर आधारित थे। सुकरात को उनके विचारों और उनके सवालों की प्रकृति की वजह से मृत्यु दंड दिया गया था क्योंकि वह बिना सवाल उठाये, वार्तालाप और भिन्न मतों के माध्यम से, चीज़ें स्वीकार नहीं करते थे। उनका तरीका विस्फोटक माना जाता थाः हालांकि वह एथेंस की मौजूदा राजनीतिक परिस्थितियों के प्रशंसक थे। प्लेटो ने अपना प्रमुख कार्य *यूटोपिया* (Utopia), जिसका संबंध एक आदर्श समाज के साथ था, लिखा परन्तु उनके गणतंत्र की कल्पना में आम लोगों की कोई भूमिका नहीं थी और वह पूरी तरह से निरंकुश था जो केवल उन्हीं लोगों द्वारा शासित किया जा सकता था, जो शिक्षित थे। अरस्तु ने एथेंस सहित अपने समय के बहुत से संविधानों का विश्लेषण किया, जिसकी लोकतंत्र की कई विशेषताओं को मान्यता देने के लिए प्रशंसा की जाती है। परन्तु उन्होंने एथेंस के संविधान की सीमाओं और उसका कुछ विशिष्ट लोगों के लिए ही सुरक्षित होने का अनुभव नहीं किया, जो उस संविधान की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी।

उन विद्वानों में से किसी ने भी, एक संस्था के रूप में, गुलामी पर सवाल नहीं उठाये। वास्तव में उन्होंने गुलामी का समर्थन किया यह मानते हुए कि गुलाम निम्न प्राणी थे जिनकी भूमिका विशेषाधिकार युक्त और उनकी श्रेणी से श्रेष्ठ लोगों की सेवा और गुलामी करना था जो कि विद्वान थे। महत्वपूर्ण यह है कि, जैसा कि विश्व के कई हिस्सों में, इन विचारकों और दार्शनिकों ने गुण, अच्छाई, नैतिकता और न्याय के गठन पर सवाल उठाये और उन्हें मानव अस्तित्व और राज्य व्यवस्था, जिसका वे हिस्सा थे, के संदर्भ में परिभाषित करने का प्रयास किया।

15.10 इतिहास और इतिहासलेखन

यह समझना भ्रम होगा कि प्राचीन समय के लोगों को अपने अतीत की कोई अवधारणा नहीं थी या उनका अपना समाज कैसे अस्तित्व में आया या जीवन और ब्रह्मांड की प्राकृतिक

योजना में उनका अपना क्या स्थान था इससे उनका कोई संबंध नहीं था। इतिहासकारों ने जैसा विभिन्न समाजों, चीन, भारत और प्राचीन ग्रीस सहित, के लिए बताया है, में इस तरह की व्यस्तताओं की प्रचुरता थी। इन शुरुआती कोशिशों को 'इतिहास' और उनकी अभिव्यक्ति को इतिहासलेखन नहीं कहा जा सकता। लेकिन इस तरह की अभिव्यक्ति हमें उस समय के समाज और उसमें आए परिवर्तनों के बारे में बहुत कुछ व्यक्त करती है। जैसा कि कई विद्वानों ने उल्लेख किया है कि प्राचीन यूनानी अपने 'पूर्वजों' के प्रति काफी जागरुक और ऋणी थे। उनका मानना था कि यूनानी सभ्यता के निर्माण में समस्त पूर्ववर्ती प्रभावों का योगदान था।

यूनानी विचारकों ने, जिनमें इतिहासकार भी थे, अतीत का चिंतन किया। उनके प्रकृति, ब्रह्मांड और मावन जाति के नैतिक आयामों पर विशिष्ट मत थे, जबकि उन्होंने वर्तमान के बारे में भी चिंताओं को व्यक्त किया। इतिहास, दर्शनशास्त्र और आज हम जिन्हें समाजशास्त्र और मावनविज्ञान के तत्व कहते हैं, वास्तव में पूरी नैतिक दुनिया के बीच शायद ही कोई विभाजन रेखा थी। उस समय, विशेषज्ञता और बहु-अनुशासनिक दृष्टिकोण के अस्तित्व में आने से कहीं पहले, ज्ञान के क्षेत्र में गैर-पृथक्करण था।

जिसे हम इतिहासलेखन के तत्वों के रूप में जानते हैं उनकी शुरुआत का श्रेय यूनानियों को जाता है। इतिहास शब्द भी स्वतः यूनानी शब्द *इस्टोरिया* से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है खोज और हेरोडोटस 'इतिहासलेखन के पितामह' के नाम से प्रसिद्ध हैं। हम यहां हेरोडोटस और थ्यूसीडाईडस के साहित्य पर चर्चा करेंगे, जिन्होंने यूनानी में लिखा और जो पाँचवी शताब्दी बी सी ई के क्लासिकल ग्रीस सभ्यता के काल में थे। हेरोडोटस और थ्यूसीडाईडस के ग्रंथों में हम उस समय के सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ के तत्वों को पहचान सकते हैं, हालांकि किसी भी सामान्यीकरण से सावधान रहना चाहिए क्योंकि, जैसा कि किसी भी सोच और महान् हस्तियों के संदर्भ में होता है, वे विचारक एक निश्चित मौलिकता का प्रदर्शन करते थे। वे अपने काल के मुख्य विचारों का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ वे स्वयं के समय से कहीं आगे की बातें करते थे।

हेरोडोटस और थ्यूसीडाईडस

हेरोडोटस को विश्व का पहला इतिहासकार माना जाता है। दूसरी ओर, थ्यूसीडाईडस को पहला वैज्ञानिक इतिहास लिखने का श्रेय दिया जाता है। उन दोनों का इतिहासलेखन के प्रति शैली, व्याख्या और उद्देश्य के संदर्भ में दृष्टिकोण भिन्न था।

हेरोडोटस (484-425 बी सी ई) की रचनाः *हिस्ट्रीज़*

थ्यूसीडाईडस (460-400 बी सी ई) की रचनाः *हिस्ट्री ऑफ द पेलापोनेशियन वॉर*

लेकिन फिर भी जब हम इन दो इतिहासकारों की कृतियों को देखते हैं तो हमें उनमें इतिहासलेखन के कुछ स्वीकृत आवश्यक तत्व मौजूद दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, यूनानी इतिहासकारों के ग्रंथों में स्रोतों के महत्व को मान्यता दी गई थी। उन्होंने चश्मदीद गवाहों का वर्णन, साक्षात्कार, लिखित स्रोतों की एक शृंखला के अतिरिक्त परंपराओं, धार्मिक संस्थाओं और समकालीन ग्रंथों से प्राप्त जानकारी का वर्णन प्रस्तुत किया। यथा हेरोडोटस ईरानी राजा साइरस के बारे में लिखते समय कहते हैं कि, 'और इसके साथ ही मैं उन ईरानी विद्वानों का अनुसरण करुंगा जिनका लक्ष्य साइरस के कारनामों का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करना नहीं अपितु उनका लक्ष्य साधारण सच का विवरण करना था। मेरे विवरण के अतिरिक्त साइरस की कहानी के विवरण के मुझे तीन और भिन्न व्याख्यायें मालूम हैं जो मेरे वर्णन में हैं' (किताब I, भाग 95)।

थ्यूसीडाईडस कहता है, 'जिस तरह से अधिकांश लोग परंपराओं के साथ संव्यवहार करते हैं, यहां तक कि अपने देश की परंपराओं के साथ, उसका उद्देश्य उन सब को बिना किसी समीक्षा के जिस रूप में वे वितरित की जाती हैं, उन्हें समान रूप से ग्रहण करना है...'।

इस प्रकार, जैसा कि हम देख सकते हैं, यूनानी इतिहासकारों के ग्रंथों में स्रोतों में शामिल व्यक्तिपरक तत्व की मान्यता, पक्षपात की संभावना की आशंका, सही जानकारी को खोजने का महत्व और स्रोतों को जाँचकर निकालने का तरीका मौजूद था।

स्पष्टतः इतिहासकारों ने विशेषाधिकार प्राप्त, कुलीन, साक्षर पाठकों के लिए लिखा। लेकिन उन्होंने अपने लेखन की शैली और प्रारूप को कवियों या नाटककारों से भिन्न करने की कोशिश की। वे अपने कथन में उस समय के निर्णायक घटनाक्रम को प्रस्तुत करने और उन्हें विशिष्ट स्थान और समय में निर्धारित करने का प्रयत्न करते हैं। हालांकि, इन निर्णायक घटनाओं के कारण वे पता नहीं लगा पाये थे और अक्सर इन घटनाओं के लिए देवताओं के हस्तक्षेप को जिम्मेदार ठहराया जाता था। इन घटनाओं को, नैतिक रूप से बुराई का दर्जा न देकर, सही और गलत के बीच संघर्ष के रूप में देखा जाता था। भाग्य, दैवीय कोप और किस्मत की धारणा को यूनानी समाज में स्वीकृति प्राप्त थी और डेल्फी की आकाशवाणी की पवित्रता पर कोई प्रश्न नहीं उठाया गया था। परन्तु मानव माध्यम को भी एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में देखा जाता था। इतिहासकारों द्वारा शहरों के महत्व के पतन के भौतिकवादी कारकों को नज़रअन्दाज़ किया गया। उदाहरण के लिए, उनके द्वारा एथेंस और स्पार्टा के दृष्टांत में संघर्ष को भौतिक कारकों से और वर्चस्व के लिए उत्पन्न होता देखा गया। और ऐथिनियन साम्राज्य के विजय अभियानों के विश्लेषण को भी इसी दृष्टि से भौतिक कारकों के संदर्भ में देखा गया।

डेल्फी की भविष्यवाणी

यूनानी किंवदंतियों के अनुसार, डेल्फी भगवान अपोलो की पवित्रता से संबंधित एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल था। डेल्फी की भविष्यवाणी (oracle; पुजारिन) अपोलो के लिए बात करती थी और उन्हें ज़रुरी प्रश्नों पर सलाह दिया करती थी। इस आकाशवाणी कि वजह से डेल्फी एक महत्वपूर्ण नगर-राज्य के रूप में उभरा (ज़्यादा जानकारी के लिए, शैक्षणिक वीडियो देखें)।

उनकी चिंताओं का केंद्र और रुचि के विषय सीमित थे। लेकिन यह आधुनिक इतिहासलेखन के युग में भी देखा जा सकता है। यूनानी इतिहासकार यादों को बनाए रखना और उन्हें भविष्य के लिए रिकॉर्ड करना चाहते थे, विशेषरूप से उन्हें जिन्हें वह शानदार समझते थे, जैसे अपने समय या उससे पहले की लड़ाई और युद्व का वर्णन। उदाहरण के लिए, हेरोडोटस (484-425 बी सी ई) का मुख्य लेखन यूनानियों की उत्पत्ति, और यूनानियों और ईरानियों के बीच संघर्ष और युद्व की घटनाओं का विवरण था। यह लेखन मानव विकल्पों, सोच-समझ कर की गई कारवाई और सामाजिक बाधाओं को ध्यान में रखते हुए लिखा गया। हेरोडोटस ने महत्वपूर्ण शहरों का व्यापक रूप से दौरा किया, कहानियां और जानकारियां एकत्र कीं और सक्षम रूप से 'छठी शताब्दी बी सी ई के अंत में सभ्य दुनिया का महान् चित्रण प्रस्तुत किया। हेरोडोटस के वर्णन में ईरानी साम्राज्य से लेकर महान् पिरामिडों के निर्माण तक के विवरण शामिल हैं... धीरे-धीरे कहानी का गठन यूनानी और पूर्व की ओजस्वी सभ्यताओं के बीच टकराव को प्रस्तुत करता है (किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 79)। इसके अतिरिक्त उन्होंने विभिन्न कहानियों और किंवदंतियों को पुनः चुना और उन पर यह बताते हुए टिप्पणी की कि उन्होंने उन कहानियों और किंवदंतियों को क्यों चुना। उन्होंने यूनानी और ईरानियों के बीच संघर्ष का विवरण प्रस्तुत किया जिसमें यूनानियों और ईरानियों दोनों की उपलब्धियां और महानता शामिल थीं। उन्होंने इस युद्व को सभ्यता और बर्बरता के बीच एक महान् लड़ाई के रूप में देखा जिसका केंद्र शिकायतों और प्रतिकार की इच्छाओं पर आधारित था। हेरोडोटस द्वारा मेसोपोटामिया में कृषि और ईरानियों के जीवन का वर्णन स्वयं अवलोकन पर आधारित था और काफी विस्तृत था।

थ्यूसीडाईडस (460-400 बी सी ई) के अध्ययन का विषय **पेलापोनेशियाई युद्ध** था। युद्व

के आरंभ में एक ऐथेनियन सेनापति के रूप में उनका वर्णन कहीं ज़्यादा स्वयं अवलोकन पर आधारित था न कि उपलब्ध लेखन पर। उनका वर्णन मुख्य रूप से नगर-राज्यों की कार्यप्रणाली के मुद्दों और राजनीतिक शक्ति के प्रश्नों से संबंधित था, जिसे वह शामिल राज्यों के तर्कसंगत स्व-हितों से उत्पन्न होता देखते थे। वह मानव समाज की क्रियाशीलता के बारे में लिखना चाहते थे जिसमें राज्यों के उत्थान और पतन का कारण नैतिकता की वृद्धि और पतन से जुड़ा दर्शाया गया। फिर भी, उनके वर्णन में परिवर्तन, विकास और सत्ता की राजनीति मानव माध्यम पर आधारित थी।

इस प्रकार, इन दो प्रमुख यूनानी इतिहासकारों में हमें एक बौद्धिक प्रयास देखने को मिलता है जो दर्शनविज्ञान और विज्ञान के समानांतर हैः प्राचीन परंपराओं और धारणाओं के स्रोतों के यथातथ्य लेकिन पर्याप्त रूप से उनसे बाहर निकलते हुए चिह्नित परिवर्तन को स्थान प्रदान करना जिसे किसी भी इतिहासलेखन के इतिहास में मान्यता प्राप्त है।

हालांकि हम चाहते हैं कि आप याद रखें कि ऐसी घटनाएं केवल यूनानी समाज तक ही सीमित नहीं थीं।

बोध प्रश्न-2

1) क्लासिकल ग्रीस में साहित्य के मुख्य रूप क्या थे ? क्लासिकल ग्रीस की कविता और रंगमंच की प्रकृति का वर्णन करते हुए कुछ प्रभावशाली लेखकों के नाम बताइये।

.....

.....

.....

.....

.....

2) यूनानी प्राकृतिक दार्शनिकों का ब्रह्मांड की जानकारी में क्या योगदान था ?

.....

.....

.....

.....

.....

3) यूनानी मानव शरीर रचना विज्ञान के मुख्य पहलुओं को रेखांकित कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

4) चिकित्सा के विकास में हेरोडोटस का क्या योगदान था ?

.....

.....

.....

.....

.....

5) मस्तिष्क और भौतिक द्रव्य के बीच के रिश्ते को समझने में प्लेटो और अरस्तु में क्या विशेष मतभेद थे ?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6) यूनानी इतिहासलेखन में थ्यूसीडाईडस के योगदान पर चर्चा कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

15.11 कला, वास्तुकला और मूर्तिकलाः सामूहिक से व्यक्तिगत तक

दृश्य-कला, वास्तुकला और मूर्तिकला भी समुदाय के लिए सामूहिक से व्यक्तिगत रूप तक और व्यक्तिगत उत्पादन से समुदाय के उपयोग तक की यात्रा दर्शाती हैं। दृश्य-कला को उपयोग की वस्तुओं के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता था और सार्वजनिक समारोहों में वह धर्म के साथ जुड़ी हुई थी। दृश्य-कला जिन कार्यों में प्रयोग की जाती थी वे हमें उनसे कहीं ज़्यादा जानकारी प्रदान करती हैं। निश्चित तौर पर, पिछली इकाई में उल्लिखित (ज़्यादा जानकारी के लिए इस पाठ्यक्रम की **इकाई-14** का **उप-भाग 14.5.2** देखें) महल परिसरों में सबसे पहले हमें इमारत बनाने की तकनीकों और मापदंडों के बारे में जानकारी मिलती है: स्थितिअनुसार तांबे या लोहे को गलाने, प्रौद्योगिकी और रंगों, आरंभिक काल से सिकंदर के विजय अभियान के बाद हेलिनिस्टिक युग और यूनानी प्रभाव के तहत ग्रीस के अलावा अन्य क्षेत्रों में प्रसारित प्रचलित विचारों और सामाजिक जीवन आदि के बारे में यह परिसर बतलाते हैं। महल परिसरों की दीवारों पर बने फ्रेस्को (भित्ति-चित्र) दैनिक जीवन और संस्कृति को दर्शाते हैं। कांस्य युग के मिनोआई फ्रेस्को चित्रों में हमें कक्षों में होने वाले अभ्यास, अमीर अभिजात वर्ग द्वारा महिलाओं को जैतून के बगीचों में नृत्य करता, या महिलाओं द्वारा खेलकूद का पर्यवेक्षण करते हुए देखने को मिलता है।

चित्र 15.8 (a)
साभारः विकीपीडिया
स्रोतः http://www.oldest.org/artliterature/paintings/

चित्र 15.8 (b)
साभारः केवोराईट
स्रोतः https://en.wikipedia.org/wiki/File:Knossos_fresco_women.jpg

मिनोअन फ्रेस्को चित्र

माइसीनियन युग में चीनी मिट्टी के बर्तनों पर मनुष्यों और पशुओं का चित्रण किया गया था, जिसने अंधकार युग में ज्यामितीय आकृति युक्त साँचों का मार्ग प्रशस्त किया, जो समय के साथ अधिक जटिल और सजावटी होते गए। क्लासिकल ग्रीस के दौरान मिट्टी के बर्तन और भी सजावटी बन गये, और किसानों द्वारा जैतून की कटाई का दृश्य चित्रित किया गया। एक कोरिंथियन फूलदान पर लड़ाई में चढ़ाई करते हुए हॉपलाइट्स (यूनानी नागरिक सशस्त्र सैनिक) का चित्रण किया गया है। बाद के एक अन्य कोरिंथियन फूलदान पर डेल्फी की पुजारिन और याचिकाकर्ता को अपने प्रश्न के उत्तर प्राप्त करते हुए चित्रित किया गया। निकटपूर्व के साथ संपर्क के बाद चित्रों में अपरिचित जानवरों को शामिल करने की शुरुआत हुई और आठवीं सदी तक यह चित्र यूनानी मिथकों और किंवदंतियों को दर्शाने लगे। जैसा कि अनेक विद्वानों ने बताया है कि छठी सदी से उन पर हस्ताक्षर किए जाने लगे, जो चित्रित किए गए नायकों के साथ व्यक्तिगत कलाकारों, कुम्हारों, चित्रकारों के महत्व तथा प्रतिष्ठा को दर्शाता है। क्लासिकल ग्रीस के प्रसिद्ध मृदभांडों में पकी हुई मिट्टी (burnt clay) के बर्तनों और फूलदानों का प्रारंभ हुआ, जिन पर आकृतियां और दृश्य अंकित किए गए थे जिन्हें बारीकी से उकेरा और काले रंग से भरा जाता था।

चित्र 15.9 : मिनोआई मिट्टी के बर्तन
साभारः Zde
स्रोतः https://en.wikipedia.org/wiki/File:Minoan_pottery,_Neopalatial,_Mameloukou_Trypa_cave,_AM_Chania,076133.jpg

मूर्तिकला में भी समान रूप से अलग-अलग कलाकारों, मानव शरीर और पुरुष देवताओं को उजागर किया गया। ज्यामिति में उन्नति ने मूर्तियों को सानुपातिक और त्रि-आयामी पहलू प्रदान किया। बाद में मूर्तिकला में कहानियाँ बताते हुए दृश्य शामिल हुए। इस तरह से पारदर्शी कपड़ों का चित्रण किया गया कि वे शारीरिक बनावट को नहीं छिपाता था, यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी जिसने त्रि-आयामी प्रभाव का सूत्रपात किया।

ऐस्क्लेपियस की प्रतिमा (यूनानी मिथकों में वर्णित चिकित्सा का देवता), एपीडॉरस थिऐटर म्यूज़ियम
साभारः मिशेल एफ मेहनर्ट
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Asklepios_-_Epidauros.jpg

खीनस डि माइलो, लूव्र म्यूज़ियम
साभारः लिविओएन्ड्रोनिको 2013
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Front_views_of_the_Venus_de_Milo.jpg

मेनान्दर की प्रतिमा (यूनानी नाट्यकार), डायोनीसोस की नाट्यशाला, एथेंस, यूनान
साभारः जेबूलोन
स्रोत:https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Statue_Menander_Dionysus_Theatre_Athens_Greece.jpg

चित्र 15.10 : यूनानी मूर्तिकला

सामान्य रूप से, विशाल मंदिर भक्तों के लिए प्रार्थना करने के बजाय उनकी भव्यता की सराहना करने के लिए बने थे। अनुष्ठान बाहर सभाओं में मनाये जाते थे, जहां त्योहारों के साथ जुड़ी घटनाएं और समारोह आयोजित किये जाते थे। मंदिर संरचना स्तंभों पर खड़ी होती थी, कई बार हज़ारों स्तंभों पर टिकाई जाती थी, जैसा कि सभी बड़े निर्माणित भवनों में मेहराब की प्रौद्योगिकी की खोज से पहले प्रचलित था। सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण मंदिर ओलंपियन देवताओं को समर्पित पार्थेनॉन था।

नगर-राज्यों के भीतर, खेल और अन्य मनोरंजन के लिए स्टेडियम एक महत्वपूर्ण आकृति थे। हमें इस समय के ग्रीस में पिछले युग की तरह के बड़े महल परिसर देखने को नहीं मिलते। वास्तुकला में सामुदायिक भवनों की संख्या अधिक थी और मूर्तिकला उसमें समायोजित हो रही थी। एक्रोपोलिस शहर के ऐसे अवशेषों में से एक है जिसकी आज भी बहुत प्रशंसा की जाती है। भवनों और सामुदायिक समारोहों में से अधिकांश राज्य के राजकोष द्वारा और कभी-कभी समृद्ध व्यक्तियों द्वारा वित्तपोषित थे, जिन्होंने उनका निर्माण कराया और उन्हें प्रायोजित किया।

चित्र 15.11 : पार्थेनॉन मंदिर
साभार: स्टीव स्वेन
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:The_Parthenon_in_Athens.jpg

चित्र 15.12 : स्टेडियम
साभार: ट्रूलाइट 234
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:TheatreatEpidoris.JPG

15.12 खेल और व्यायाम

ज़्यादातर यूनानी नगर-राज्यों में, व्यक्ति, साहस और सैन्य-शक्ति पर ज़ोर देने के साथ अंततः शारीरिक शक्ति, खेल और एथलेटिक्स, शुरुआत में महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए, यूनानी व्यक्तित्व के कीर्तिगान का कारण बन गया जो बाद में एक ऐसे क्षेत्र के रूप में उभरा जो पुरुषों द्वारा अधिकृत था। खेल और व्यक्ति की शारीरिक शक्ति हर जगह दिखाई देती हैः एथलेटिक समारोहों में, यूनानी समाज में खिलाड़ियों द्वारा अर्जित लोकप्रियता, प्रसिद्धि और

प्रतिष्ठा में, और मूर्तिकला और यहां तक कि मिट्टी के बर्तनों में उनके सजीव चित्रण में।

कांस्य युग में, क्रीट भित्तिचित्रों में विशेषाधिकार प्राप्त नागरिकों द्वारा महिलाओं को जैतून के पेड़ों के आसपास नृत्य करता हुआ, कुलीन महिलाओं द्वारा एथलेटिक्स देखते हुए और महिला और पुरुष एथलीटों को खूंखार बैलों की पीठ के ऊपर सवारी करते हुए दर्शाया गया है (किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 37)।

आधुनिक युग के ओलंपिक खेल प्राचीन यूनान जितने पुराने हैं। हालांकि बीच में एक लंबे समय के लिए इन खेलों में रुकावट आ गयी थी। हमारी जानकारी के अनुसार, 500 बी सी ई तक, 'यूनानी दुनिया में खेलों के पचास सेट थे जो कि नियमित अंतराल में आयोजित कराए जाते थे'। इन खेलों में से सबसे प्रतिष्ठित 'डेल्फी, कॉरिन्थ और निमिया में आयोजित क्राउन खेल थे'। सबसे महत्वपूर्ण खेल वह थे जो हर चार साल ओलंपिया में ज़ीअस के पंथ के जश्न के रूप में आयोजित होते थे। 192 मीटर दौड़ के अलावा पेंटाथलन (pentathlon) का आरंभ हुआ जिसमें घोड़ों और रथ दौड़ के साथ-साथ दौड़ना, कूदना, भाला फेंकना, डिस्कस थ्रो और कुश्ती शामिल थे। अपमान के डर से, कुछ खेलों में संघर्ष अंत तक बना रहता था और भाग लेने वाले के हार न मानने के कारण कभी-कभी उसकी मृत्यु तक हो जाती थी। जीतने वाले को न केवल प्रसिद्वि और संपत्ति की प्राप्ति होती थी, बल्कि वह किंवदंतियों का हिस्सा भी बन जाता था जिनमें उसकी शानदार जीत के बारे में कसीदा (ode) लिखा जाता था, जैसा कि युद्वों के बारे में लिखा जाता था। जीतने वालों का मूर्तियों में एक मज़बूत पुरुष शरीर के प्रतीक के रूप में चित्रण किया जाता था। शहरों के बीच प्रतियोगिता उतनी ही तीव्र होती थी जितना कि व्यक्तिगत ऐथलीटों के बीच। और 'सिर्फ पुरुषों को ओलंपिक खेलों में भाग लेने या उपस्थित रहने की अनुमति थी' हालांकि एक अलग ओलंपिक खेल ज़ीअस की पत्नी हेरा के सम्मान में आयोजित किया जाता था, जिसमें अविवाहित महिलाएं भाग ले सकती थीं (किशलेन्सकी, और अन्य, 2008: 50-51)। ओलंपिक खेलों में भाग लेने का सिलसिला कुछ एक हज़ार वर्षों तक चला जिसका अंत 393 सी ई में हुआ (किश्लेन्सकी, और अन्य, 2008: 49)।

चित्र 15.13 : क्रीडा चित्रण
साभार: National Archaeological Museum, Athens
स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:07Athletengrab.jpg

15.13 लिंग और परिवार

महिलाओं की यूनानी समाज में स्थिति पर हमने पिछली इकाई में चर्चा की है: कैसे उनकी स्थिति अधीनस्थ थी, वह राजनितिक अधिकारों से वंचित थी और उन्हें नागरिक का दर्जा प्राप्त नहीं था। हमें यह भी देखने को मिलता है कि महिलाएं, गुलामों का एक बड़ा वर्ग थीं। लेकिन हमें इस अधीनता के विशिष्ट तत्वों को रेखांकित करना होगा। कारखानों में गुलामों के रूप

में और घरेलू नौकर-चाकर के काम के अलावा, यह कहा जा सकता है कि महिलाएं घरेलू अनुक्षेत्र तक ही सीमित थीं। इस प्रकार वास्तविकता जटिल थीः एक बड़ा वर्ग अधिशेष मूल्य और उत्पादन के कार्य में योगदान दिया करता था और एक छोटा सा कुलीन अल्पसंख्यक वर्ग धार्मिक और सामुदायिक जीवन में भाग लिया करता था। संक्षेप में यह अल्पसंख्यक वर्ग नागरिक समुदाय था। जिन अनुष्ठानों और धार्मिक त्योहारों में महिलाओं को भाग लेता दर्शाया गया है उनकी भूमिका सहायक के रूप में, और उन्हें महिलाओं के सामाजिक स्तर के अनुसार दर्शाया गया है। इसी प्रकार कुछ अनुष्ठान बच्चों द्वारा सम्पादित किये जाते थे, जिनकी भूमिका नाबालिगों के रूप में और उनके सामाजिक स्तर के अनुसार होती थी।

स्पष्ट है कि नागरिकों की पत्नियां नागरिक दर्जे में इसी हक तक सहभागी थीं कि उनके द्वारा जन्म दिये गये बेटे आगे जाकर नागरिक बनते थे और बेटियां नागरिकों की पत्नियां। कानून के हिसाब से महिलाएं, खासतौर से विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की महिलाएं, अदालतों में उपस्थित नहीं होती थीं और गवाही भी नहीं देती थीं। उनके विवादों में अदालत में दोनों तरफ से पुरुष ही भाग लेते थेः सिर्फ गरीब और गुलाम महिलाएं ही अदालतों में उपस्थित होती थीं। उनकी गवाही इस हद तक ही मान्य थी कि उन्हें बुलवाने के लिए उनको यातना दी जाती थीः ऐसा माना जाता था कि आमतौर पर महिलाओं पर भरोसा नहीं किया जा सकता। बच्चों से संबंधित विवाद वास्तव में उनके अभिभावकों के बीच के विवाद थेः केवल परिपक्वता प्राप्त करने के बाद ही वो गवाही देने के लिए योग्य, खुद का प्रतिनिधित्व करने, और सेना की सेवा करने के योग्य बन सकते थे और केवल तीस साल की उम्र के पश्चात् ही वह न्यायिक जूरी (jury) के सदस्य बन सकते थे।

केवल कुछ ऊपर उल्लिखित शुरुआती भित्ति-चित्रों के अलावा, जिनमें महिलाएं आरंभिक दौर में एथलेटिक्स में भाग लेती दर्शायी गयी हैं, क्लासिकल कला और साहित्य में उन्हें मुख्य रूप से घर की गतिविधियों में व्यस्त दर्शाया गया है। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में महिलाएं केवल उन क्षेत्रों में भाग लेती थीं जिन्हें मौलिक नहीं माना जाता था। वह बाज़ार नहीं जाया करती थीं, उन बाज़ारों में भी नहीं जहां छोटे स्तर पर क्रय-विक्रय किया जाता था। युवाओं को भी केवल दोपहर के बाद ही बाज़ार जाने की अनुमति थी जब बाज़ार व्यस्त रहते थे। पुनः यह गरीब महिलाओं पर लागू नहीं होता था, जिन्हें बाज़ार में सक्रिय भागीदार – छोटी वस्तुओं के खरीदार और विक्रेता – के रूप में देखा जा सकता था।

वेश्यावृत्ति एक ऐसा क्षेत्र था जहां महिलाएं प्रबल थीं। लेकिन यहां भी वर्ग विभाजन ने सार्वजनिक वेश्यावृत्ति के क्षेत्र को विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग और परिवारों में प्रचलित वेश्यावृत्ति से अलग स्थान प्रदान किया।

परिवार में महिलाएं संपत्ति और विरासत के मामलों सहित बिना किसी स्वतंत्र व्यक्तिगत अधिकारों के – पिता, भाई, पति, आदि – पुरुष सदस्यों के संरक्षण में रहती थीं। पुरुषों और महिलाओं के बीच घर के श्रम का विभाजन स्पष्ट रूप से सीमांकित था, जो ऐतिहासिक युगों से चला आ रहा था। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की काफी महिलाएं शिक्षित थीं परन्तु उनका लेखन और मौखिक कविताएं शायद ही जानी जाती हैं। जैसा कि ऊपर उल्लिखित किया गया है साफ्फो एक प्रख्यात कवयित्री थी। विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग की महिलाएं कढ़ाई करती थीं, ऊनी उत्पाद, इत्यादि बनाया करती थीं। परन्तु वे स्पष्ट रूप से यह स्वयं के उपयोग के लिए किया करती थीं न कि कमाई करने के लिए। जबकि गरीब महिलाओं के संदर्भ में उनका कौशल ही उनकी आजीविका का आधार था।

बोध प्रश्न-3

1) यूनानी मंदिरों की वास्तुकला की क्या विशेषताएं थीं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) शरीर रचना विज्ञान के विकास ने वास्तुकला, मूर्तिकला और दृश्यकला में किस तरह योगदान किया?

.....

.....

.....

.....

.....

3) यूनानी कला में व्यक्तियों की भूमिका पर कलाकार और कला के विषयों के रूप में चर्चा कीजिये।

.....

.....

.....

.....

.....

4) खेल, ख़ासतौर पर यूनानी समाज में ओलंपिक्स, के महत्व पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

5) यूनानी समाज में महिलाएं अधीनस्थ थीं, परंतु क्या आप महिलाओं के बीच कुछ अंतर और असमानताओं को बता सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

15.14 सारांश

यूनानी नगर-राज्यों की भूमध्यसागर के आसपास की भौगोलिक स्थिति और पूरे क्षेत्र के सभी पक्षों से संपर्क ने उनकी सांस्कृतिक परंपराओं को आकार दिया और उन पर विविध प्रभाव डाले। यह विचारों की एक ऐसी शृंखला के लिए भी ज़िम्मेदार था जिसने विचारधारा में वृद्धि, विद्वता और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के भिन्न रूपों को जन्म दिया। सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के इन भिन्न रूपों में ब्रह्मांड और उसमें मानव के स्थान के विवरण से लेकर दृश्य कला और सामाजिक पदानुक्रम शामिल थे। जैसा कि हमने एक लंबे कालानुक्रमिक अवधि के घटनाक्रम के माध्यम से देखा, सांस्कृतिक परंपराएं न सिर्फ प्रकृति में बहुआयामी थीं, अपितु इन परंपराओं में प्रत्येक पहलू के भीतर समय के साथ बदलाव आया। क्लासिकल ग्रीस की संस्कृति को एक समग्र रूप में, स्वदेशी और अचानक छठी शताब्दी में विकसित होता समझना भ्रांति होगी, हालांकि एथेंस और छठी शताब्दी इस विकास के चरमबिन्दु हैं।

ब्रह्मांड के प्रेक्षणों ने खगोल विज्ञान के क्षेत्र में, गणित और शरीर रचना विज्ञान के समेत सामान्य विज्ञान के क्षेत्र में, और मानव प्रकृति और समाज के बारे में दार्शनिक चिंतन में प्रगति की। अनुपात, तर्क और शरीर रचना विज्ञान के ज्ञान ने दृश्य कला, चित्रकला, मूर्तिकला और चिकित्सा के क्षेत्र में तरक्की की। गणित और ज्यामितीय वास्तुकला में उतने ही महत्वपूर्ण थे जितना कि दुनिया के भावी अन्वेषणों में, ज्ञान के क्षेत्रों में – जो आगे चलकर पृथक रूप से भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और भूविज्ञान के नाम से जाने गये – और प्रचलित लौह-प्रौद्योगिकी में महत्वपूर्ण थे। यहां पर कारण और प्रभाव के संदर्भ में बात करना मुश्किल है क्योंकि इनमें से ज़्यादातर घटनाएं समकालिक, कुछ अचानक आवेग में और कुछ स्वतंत्र रूप से यूनानी सभ्यता के विभिन्न क्षेत्रों में घटित हुईं। विभिन्न क्षेत्रों में परिवर्तन के विवरण का उल्लेख ऊपर इकाई के विभिन्न भागों में किया गया है।

हमें याद रखना चाहिए कि यूनानी सांस्कृतिक परंपराओं के बारे में अधिकतर जो ज्ञात और प्रख्यात है वह अमीर, विशेषाधिकार प्राप्त और जिनको नागरिक माना जाता था उनसे सरोकार रखता है। बहुत सी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियां गरीबों और दासों के बीच विकसित हुई होंगी जिसको पाठ्यपुस्तकों में जगह नहीं मिलती, क्योंकि उनके बारे में उपलब्ध स्रोतों में बहुत थोड़ा ही उल्लेख मिलता है। उपलब्ध स्रोत काफी हद तक विशेषाधिकार प्राप्त लोगों के दृष्टिकोण को दर्शाते हैं।

हमें विशेषाधिकार प्राप्त और गरीब महिलाओं में लिंग की असमानताओं को समझना चाहिए, हालांकि उनकी अधीनस्थता संबंधी कई आम पहलू दोनों में समान थे। और यह भी कि संस्कृति और ज्ञान में महत्वपूर्ण घटनाक्रम ग्रीस तक ही सीमित नहीं था, यह विश्व भर में फैला हुआ था और इसने मानव सभ्यता के समग्र विकास में योगदान दिया।

अंततः जैसा कि पिछली इकाई में ज़ोर दिया गया है, अत्यधिक जीवंत व्यापार और गुलामी की संस्था यूनानी समाज और राजनीति का आधार थे। व्यापार के असीम प्रवाह के परिणामस्वरूप प्राचीन ग्रीस के विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के हाथों में संसाधनों और धन का विशाल प्रवाह हुआ। अमानवीय गुलामी ने इस वर्ग के लिए धन और फुर्सत की एकाग्रता, विचारों की दुनिया के लिए समय समर्पित करना, और वास्तुकला, मूर्तिकला और अन्य सार्वजनिक इमारतों के महान् कार्यों को संरक्षण प्रदान करना संभव बनाया। अंत में फिर से दोहराएं तो सामाजिक और आर्थिक इमारत, जिस पर यूनानी सभ्यता की महानता और जो कुछ उसके बारे में जाना जाता है, वह काफी हद तक गुलामी की प्रणाली पर आधारित थी।

15.15 शब्दावली

भित्ति-चित्र (Fresco) : भित्ति-चित्र, चित्रण की एक ऐसी तकनीक है जिसमें गीले चूने या प्लास्टर पर चित्र अंकित करते हैं।

यूनानी अन्धकार युग/ होमर युग : माइसेनियन सभ्यता के पतन और यूनानी पुरातन युग के बीच का युग

पुरातन ग्रीस (Archaic) : आठवी सदी बी सी ई से 490 बी सी ई के बीच ग्रीस के इतिहास का काल

क्लासिकल ग्रीस : 490 से 323 बी सी ई के बीच का युग

ट्रॉय का युद्ध : यूनानी मिथकों के अनुसार आर्कीयनों द्वारा ट्रॉय के खिलाफ किया गया युद्ध

पेलापोनेशियाई युद्ध : 431-404 बी सी ई में एथेंसवासियों द्वारा स्पार्टा के लोगों के खिलाफ किया गया यूनानी युद्ध

15.16 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 15.4 देखें। यूनानियों द्वारा जिन देवताओं की आराधना की जाती थी, जैसे अपोलो और ज़ीअस, उनका उल्लेख कीजिये।

2) विभिन्न कालों में यूनानी सांस्कृतिक परम्पराओं में बदलाव और इन परम्पराओं द्वारा अन्य क्षेत्रों में डाले गये प्रभावों पर चर्चा कीजिये।

3) भाग 15.5 देखें। किस तरह यह काल्पनिक कथाएं विभिन्न कहानियों के आसपास धूमती थीं, स्पष्टीकरण दीजिये।

बोध प्रश्न-2

1) भाग 15.6 देखें। साहित्य की रचनाओं में होमर के दो महाकाव्यों का जिक्र होना चाहिए।

2) भाग 15.7 देखें

3) किस तरह स्वास्थ्य और रोगों के प्राकृतिक कारणों के नाम पर बदलाव आया और, जादू-टोने और अंधविश्वासों या धार्मिक विश्वासों के बजाय, दवा के माध्यम से इलाज खोजने के प्रयासों का उल्लेख कीजिये। भाग 15.8 देखें

4) भाग 15.8 देखें

5) प्लेटो द्वारा विचारों को प्राथमिकता दी गई और वह मानते थे कि भौतिक चीज़ों का अस्तित्व हमारी उनके बारे में धारणाओं में अवस्थित होता है। दूसरी ओर, अरस्तु बुद्धि और दर्शन के बीच रिश्ते को एक पूरी तरह से विपरीत ढंग से समझते थे। वह मानते थे कि भौतिक तत्व हमारी धारणाओं से बाहर होते हैं और हम उन्हें हमारे अनुभवों के आधार पर समझते हैं। दूसरे शब्दों में, हमारे विचार और भौतिक विश्व की समझ पहले से अवस्थित स्थितियों के अध्ययन पर विकसित हुई। भाग 15.9 देखें

6) भाग 15.10 देखें

बोध प्रश्न-3

1) भाग 15.11 देखें

2) यहाँ शरीर रचना विज्ञान और वास्तुकला, मूर्तिकला और दृश्य-कला के बीच सम्बन्ध को दर्शाएं। जैसे, किस प्रकार ज्यामिति विकास से मूर्तिकला के क्षेत्र में परिवर्तन आए। भाग 15.11 देखें

3) भाग 15.11 देखें

4) आधुनिक युग के विश्व ओलंपिक प्राचीन ग्रीस से लिए गए हैं। हर चार साल में ज़ीअस के संप्रदाय के उत्सव पर ओलंपिया में आयोजित होने वाले ओलंपिक सबसे महत्वपूर्ण थे। भाग 15.12 देखें

5) भाग 15.13 देखें। आप अभिजात वर्ग और निम्नवर्ग की महिलाओं के बीच अंतर का भी उल्लेख कर सकते हैं।

15.17 संदर्भ ग्रंथ

कर्टिलेज, पॉल. (संपा). 1998. *द केम्ब्रिज इलस्ट्रेटेड हिस्ट्री ऑफ ऐन्शिएन्ट ग्रीस.* केम्ब्रिजः केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

फिनले, मोसेस आई. 1977. *द ऐन्शिएन्ट ग्रीक्स.* यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफ़ोर्नियाः पेंगुइन बुक्स.

हॉसर, आर्नल्ड. 2003 (रिप्रिन्ट). *द सोशल हिस्ट्री ऑफ आर्टः फ्रॉम प्रीहिस्टॉरिक टाइम्स टू द मिडल ऐजेज़.* भाग 1. उप-भाग 3. लंदन एंड न्यूयार्कः रूटलेज.

किश्लेन्सकी, मॉर्क ऐ. गियरी, पैट्रिक, जे. एवं ओ'ब्रायन, पेट्रीशिया. 2008. *सिविलाइज़ेशन इन द वेस्ट.* भाग एः *टू 1500.* न्यूयार्कः पियर्सन लॉंगमैन.

नन्दा, मीरा. 2016. *साइन्स इन सेफ्रॅनः स्केपटिकल ऐस्सेज़ ऑन हिस्टी ऑफ साइन्स.* नई दिल्लीः थ्री ऐस्सेज़ कलेक्टिव.

15.18 शैक्षणिक वीडियो

द मिथ ऑफ पैन्डोराज़ बॉक्स – ग्रीक माइथोलॉजी एक्सप्लेन्ड
https://www.youtube.com/watch?v=lXmHA-XySmk

मिथ ऑफ पैन्डोराज़ बॉक्सः
https://www.youtube.com/watch?v=LGTTAfwHugY

द मिस्टरी ऑफ द डेल्फी ऑरेकल | नेशनल ज्योग्राफिक डाक्यूमेंट्री
https://www.youtube.com/watch?v=ToVeoUzhR0Q

द ऑरेकल ऑफ डेल्फी एन्शिएन्ट | नेशनल ज्योग्राफिक डाक्यूमेंट्री
https://www.youtube.com/watch?v=qM_22g30X-4

QR Code -website ignou.ac.in

QR Code -e Content-App

QR Code - IGNOU-Facebook
(@OfficialPageIGNOU)

QR Code Twitter Handel
(OfficialIGNOU)

INSTAGRAM
(Official Page IGNOU)

QR Code -e Gyankosh-site

IGNOU SOCIAL MEDIA

QR Code generated for quick access by Students

IGNOU website

eGyankosh

e-Content APP

Facebook (@offical Page IGNOU)

Twitter (@ Offical IGNOU)

Instagram (official page ignou)

Like us, follow-us on the University Facebook Page, Twitter Handle and Instagram

To get regular updates on Placement Drives, Admissions, Examinations etc.

MPDD/IGNOU/P.O. 6.5K/September, 2020

ISBN: 978-93-90496-08-2